आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 66 ★ अंक : 12 ★ मूल्य : 10 रु.
10 दिसम्बर, 2009 ★ पौष 2066

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नमस्कार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं ॥
एसो पंच णमोक्कारो,
सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवइ मंगलं ।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

मंगल-मूल, धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
महिमामयी यह 'जिनवाणी'।।

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

पीयें धोवन पानी, बोले मीठी वाणी यही कहे जिनवाणी ।

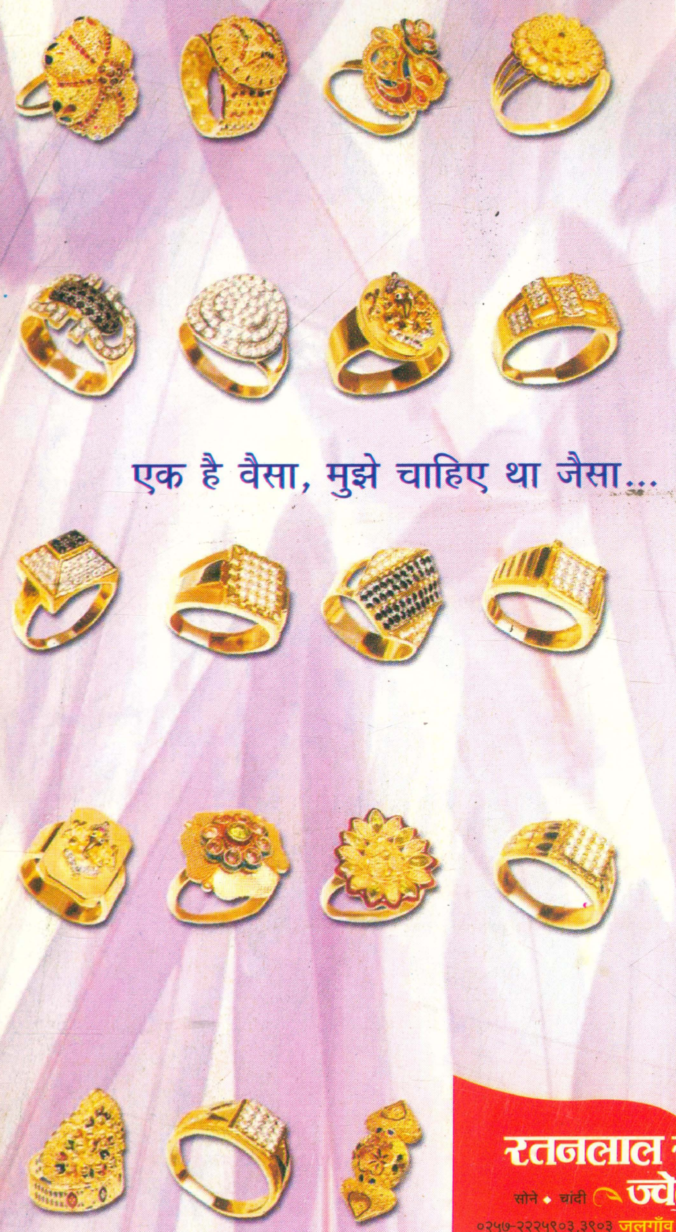

गहने
अलंकार
नक्काशीवाले
चमकिले
तेजस्वी
ओजस्वी

एक है वैसा, मुझे चाहिए था जैसा...

॥ स्वर्णतीर्थ ॥

प्रभावी
अदभूत
अक्षय
अर्थपूर्ण
अष्टपैलू
अगम्य
मोहर
अनमोल
अप्रतिम
माणिक

रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स

सोने • चांदी • हिरा • मोती

०२५७-२२२५९०३,३९०३ जलगाँव • औरंगाबाद ०२४०-२२४४५२०,२२

जहाँ विश्वास ही परंपरा है।

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

卐 संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक

प्रेमचन्द जैन, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003 (राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर-342005 (राज.), फोन-0291-2730081
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 सह-सम्पादक

नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-07/2009-11

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

जे गिद्धे कामभोगेसु,
एगे कूडाय गच्छई।
न मे दिट्ठे परे लोए,
चक्खुदिट्ठा इमा रई।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 5.5

आसक्त कामभोगों में जो,
वह कूटलोक को जाता है।
परलोक नहीं देखा है मैंने,
रति भोग दृष्टि में आता है।।

दिसम्बर, 2009
वीर निर्वाण संवत्, 2536
पौष, 2066

वर्ष 66 अंक 12

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 120 रु.	स्तम्भ सदस्यता : 11000/-
आजीवन देश में : 500 रु.	संरक्षक सदस्यता : 5000/-
आजीवन विदेश में : 5000 रु.	साहित्य आजीवन सदस्यता- 3000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail: jinvani@yahoo.co.in
ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो

विषयानुक्रम

सम्पादकीय -	संकल्प	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	9
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	10
प्रवचन-	अध्यात्म योगी युगशास्ता गुरुदेव	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	12
शोधालेख -	भारतीय तंत्र-साधना और जैन धर्म-दर्शन(5)	-प्रो. सागरमल जैन	21
चिन्तन-	क्रोध को क्यों त्यागें?	- श्री ओ.पी.चपलोत	26
प्रासङ्गिक-	कार्यकर्ताओं का मूल्यांकन	- डॉ. दिलीप धींग	33
अंग्रेजी-स्तम्भ-	Transgressions of the twelve vratas (Vows)	*-Dr. Priyadarshana Jain*	37
तत्त्व ज्ञान-	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (53)	-श्री धर्मचन्द जैन	42
	दशवैकालिक सूत्र से पाएँ तात्त्विक बोध(5)	-संकलित	45
धारावाहिक-	धरोहर (2)	-श्रीमती पारसकंवर भंडारी	50
नारी-स्तम्भ-	बच्चों को ज़िद्दी न बनाएँ	-श्री कैलाश जैन 'एडवोकेट'	54
हस्ती-शताब्दी-	आचार्य हस्ती जन्म-शताब्दी :अध्यात्म चेतना वर्ष	-श्री ज्ञानेन्द्र बाफना	58
	संकल्प - पत्र		61
उपन्यास-	सुबह की धूप (10)	-श्री गणेशमुनि जी शास्त्री	65
युवा-स्तम्भ-	संयुक्त परिवार की चाह	-मोहनोत गणपत जैन	71
बाल-स्तम्भ -	उत्थान-पतन	-श्री सुभद्र मुनि जी	76
जीवन-परिचय-	अविश्रान्त साधक : उपाध्याय श्री पुष्करमुनि	-श्री पुष्पेन्द्र मुनि जी	81
विचार-	मनीषियों की दृष्टि में आचार्य हस्ती	-श्री सुरेशचन्द्र धींग	25
	वेदना से मुक्ति	-संकलित	36
	विद्युत सचित्त है, अचित्त नहीं	-डॉ. जीवराज जैन	56
कविता/गीत-	मेरे अन्तर भया प्रकाश	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	31
	सामायिक-साधना	-श्री मगनचन्द जैन	32
	समर्पण	-डॉ. रमेश मयंक	57
	मेरा नाम छप जाए	-सुश्री दीप्ति जैन	75
परिणाम-	आओ स्वाध्याय करें प्रतियोगिता (23) का परिणाम		84
संवाद-	संवाद (26)	-संकलित	89
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन		90
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		114

सम्पादकीय

संकल्प

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

नववर्ष सन् 2010 प्रारम्भ होने वाला है। अध्यात्मयोगी युगमनीषी पूज्य श्री हस्तीमल जी महाराज का जन्मशती वर्ष भी 30 दिसम्बर को उपस्थित हो रहा है। इस अवसर पर अपने जीवन को समुन्नत बनाने के लिए कोई-न-कोई शुभ संकल्प अवश्य ग्रहण करना है।

संकल्प वह बीज यन्त्र है, जो व्यक्ति की चिन्तन-प्रक्रिया को, उसके जीवन-व्यवहार को एवं उसकी अच्छी-बुरी आदतों को एक सांचे में ढालता है। संकल्प शुभ भी हो सकता है एवं अशुभ भी। अशुभ संकल्प त्याज्य होता है तथा शुभ संकल्प ग्राह्य। संकल्प शब्द के अनेक अर्थ हैं। उनमें एक अर्थ है 'इच्छा' और दूसरा अर्थ है 'प्रतिज्ञा'। ये दो अर्थ प्रमुख हैं। इच्छा के रूप में उत्पन्न संकल्प ही कभी प्रतिज्ञा के रूप में परिणत हो जाता है, तो कभी वह इच्छा के रूप में रहकर भी प्रेरक तत्त्व का कार्य करता है। वेद में कहा गया है- **'एकोऽहं बहु स्याम'** मैं एक हूँ, बहुत होने की इच्छा करता हूँ। इस प्रकार एक के द्वारा अनेक होने की इच्छा एक संकल्प है। चाणक्य ने चोटी बांधकर संकल्प किया था कि वह जब तक नन्दवंश का साम्राज्य समाप्त नहीं कर देता एवं मौर्य साम्राज्य की स्थापना नहीं करा देता, तब तक चैन से नहीं बैठेगा। इसे हम प्रतिज्ञा कह सकते हैं। इस तरह संकल्प इच्छा भी है और प्रतिज्ञा भी।

हमें प्रतिज्ञारूप शुभ संकल्प को अपनाना है। कई बार हम बुराइयों को त्यागने का संकल्प करते हैं। 'मैं झूठ नहीं बोलूँगा', 'मैं चोरी नहीं करूँगा', 'मैं जानबूझकर हिंसा नहीं करूँगा', 'मैं किसी की निन्दा नहीं करूँगा', 'मैं व्यभिचार सेवन नहीं करूँगा', 'मैं किसी का बुरा नहीं करूँगा', 'मैं किसी को बुरा नहीं कहूँगा', 'मैं किसी का बुरा नहीं चाहूँगा' आदि अनेक संकल्प बुराइयों को त्यागने के लिए किए जाते हैं। ये संकल्प प्रायः ऐसे होते हैं जिनके खण्डित होने की संभावना रहती है। अतः व्यक्ति इन संकल्पों से प्रायः बचने का प्रयत्न करता

है। उसे अपने पर विश्वास नहीं होता कि वह बुराई त्यागने में समर्थ है। किन्तु उसे यह ज्ञात नहीं है कि यह संकल्प ही उसमें आत्मविश्वास उत्पन्न करने में समर्थ होता है। एक संकल्प भी व्यक्ति ग्रहण करे एवं उसका सम्यक् प्रकार से पालन करे तो उसमें आत्मविश्वास उत्पन्न होता है एवं फिर वह अनेक शुभ संकल्पों को पूरा करने में स्वयं को समर्थ अनुभव करता है। इस प्रकार आत्म-सुधार की प्रक्रिया निरन्तर गतिशील रहती है। यह संकल्प ही आत्म-सुधार का बीज बनता है। जो शुभ संकल्प से दूर रहता है, उसके मन में अशुभ संकल्प कब्जा जमाए रहते हैं तथा वह उनके अधीन होकर दुःखी होता रहता है। दशवैकालिक सूत्र में स्पष्ट कथन है-''पए पए विसीयंतो संकप्पस्स वसं गओ।'' अर्थात् संकल्प के वशीभूत श्रमण पदे-पदे विषाद को प्राप्त होता है। यह संकल्प कामना-वासना रूप है, जो त्याज्य है। कामनाएँ, वासनाएँ, भोगेच्छाएँ अशुभ संकल्प की द्योतक हैं। इनमें कमी लाने के लिए शुभ संकल्प सहायक हैं।

शुभ संकल्प विधिपरक भी हो सकते हैं एवं निषेधपरक भी। किन्तु इन दोनों प्रकार के शुभ संकल्पों का परिणाम आत्म-विकास की दृष्टि से सकारात्मक होता है। 'मैं माता-पिता की सेवा करूँगा', 'मैं निर्बल की रक्षा करूँगा', 'मैं अपने से छोटों के प्रति वात्सल्य-भाव रखूँगा', 'मैं भाइयों के प्रति सदैव सद्व्यवहार करूँगा', 'मैं सबके प्रति भलाई का व्यवहार करूँगा', 'मैं प्रतिदिन सामायिक करूँगा', 'मैं समस्त प्राणियों के प्रति मैत्री का व्यवहार करूँगा', 'मैं गुणीजनों का आदर करूँगा', 'मैं दुःखियों के दुःख-निवारण में सहयोगी बनूँगा', 'मैं विरोधियों के प्रति माध्यस्थ-भाव रखूँगा', 'मैं सदा सत्य बोलूँगा', 'मैं शीलव्रत का पालन करूँगा', 'मैं परिग्रह की मर्यादा करूँगा', 'मैं संघ की सेवा करूँगा', 'मैं संत-सतियों के नित्यप्रति/सप्ताह में/महीने में ....बार दर्शन करूँगा', 'मैं नित्यप्रति...मिनिट सद्साहित्य का स्वाध्याय करूँगा' आदि अनेक संकल्प विधिपरक शुभ संकल्प हैं। ये संकल्प जीवन के निर्माण में सहायक हैं। निषेधपरक शुभ संकल्प के उदाहरण पूर्व में बुराइयों के त्याग के रूप में दिए गए हैं, किन्तु उनका परिणाम भी सकारात्मक होता है।

अशुभ संकल्प तो जाने-अनजाने मन में उत्पन्न होते ही रहते हैं। कभी व्यक्ति को वे ज्ञात होते हैं और कभी अज्ञात रूप में धावा बोलते रहते हैं। अशुभ संकल्पों के चंगुल में घिरा व्यक्ति नये-नये दोषों को आहूत करता रहता है।

उसमें विभिन्न दोष आसानी से जड़ें जमाते रहते हैं। 'मैं अवश्य उसकी इस नीच हरकत का बदला लूँगा', 'मैं मेरा अपमान करने वाले को कभी नहीं बख्शूँगा', 'मैं धन के बल पर दूसरों को अपने अधीन कर लूँगा', 'आज तक ऐसा भोज नहीं हुआ, मैं ऐसा भोज करूँगा' इत्यादि अनेक संकल्प अशुभ संकल्प हैं, जो व्यक्ति की ऊर्जा एवं सामर्थ्य को अधोदिशा की ओर ले जाते हैं। ये भी विधिपरक एवं निषेधपरक दोनों तरह के होते हैं। दोनों के उदाहरण इसी अनुच्छेद में ऊपर आए हैं।

साधना के क्षेत्र में कहा जाता है कि व्यक्ति को संकल्प-विकल्प से रहित होना चाहिए। जब गहन ध्यान में कोई लीन होता है तो वह संकल्प-विकल्प से रहित होता है। संकल्प-विकल्प त्याज्य हैं। किन्तु यहाँ ज्ञातव्य है कि जो संकल्प-विकल्प मानव-शक्ति को ह्रास की ओर ले जाते हैं तथा जो चिन्तन और विचारपूर्वक निश्चायक दिशा प्रदान नहीं करते, वे संकल्प-विकल्प त्याज्य हैं। प्रायः ऐसे संकल्प-विकल्प मन में उत्पन्न होते रहते हैं। व्यक्ति ऊहापोह में जीता है। यदि वह त्याग-प्रत्याख्यान के शुभ संकल्प लेकर बुराइयों को छोड़ता है, कषायों में कमी करता है, तो ऐसे संकल्प को त्याज्य नहीं कहा जा सकता। जब संकल्प के साथ विकल्प लगा रहता है अर्थात् 'यह करूँ या नहीं करूँ', 'करूँ तो कैसे करूँ' आदि के रूप में मन में अनिर्णायक स्थिति रहती है तो उन विचारों को संकल्प-विकल्प कहा जाता है। यह संकल्प-विकल्प सही दिशा के अभाव में व्यक्ति की ऊर्जा को समाप्त करते रहते हैं तथा वह निराशा एवं हताशा की ओर अग्रसर होता है, तो कभी वह विध्वंसात्मक स्वरूप को ग्रहण करता है। किन्तु साधना में शुभ संकल्प के महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता।

कुछ संकल्प क्षणिक होते हैं, कुछ अल्पकालीन होते हैं तथा कुछ दीर्घकालिक होते हैं। कुछ संकल्प मनुष्य को आवश्यक प्रतीत होते हैं जो दैनिक गतिविधियों के संचालन में सहायक होते हैं। किन्तु उनसे दोषों के निराकरण का सीधा सम्बन्ध नहीं होता। एक महिला के मन में संकल्प होता है कि वह आज इडली-सांभर बनाएगी। यह संकल्प अल्पकालीन होता है, जो उस दिन भोजन बनाने के बाद समाप्त हो जाता है। किन्तु उसके मन में यह संकल्प हो कि वह पति को कभी अपशब्द नहीं कहेगी, तो यह संकल्प दीर्घकालीन होता है, जिसका प्रभाव जीवन-व्यवहार के परिष्कार पर पड़ता है। कोई युवा व्यापार करने का

संकल्प करता है तथा नीति-निर्धारित करके उसे आगे बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील होता है तो यह उसका दीर्घकालीन संकल्प है। किन्तु वह यदि किसी दिन पिकनिक पर जाने का संकल्प करता है तो यह उसका अल्पकालीन संकल्प है।

संकल्पों से ही हमारी आदतों का निर्माण होता है। संकल्पों के बल पर ही आदतों में बदलाव लाया जा सकता है। कोई बोलते समय गाली का प्रयोग करता है, किन्तु स्वयं को ज्ञात नहीं होता कि वह गाली का प्रयोग कर रहा है, यह उसकी आदत है। इस आदत में बदलाव तभी लाया जा सकता है जब वह यह संकल्प करे कि उसे बोलने में सावचेत होकर रहना है तथा गाली का प्रयोग नहीं करना है। इस संकल्प के बल पर वह अपनी गाली की आदत को छोड़ सकता है। गन्दी आदतें हमारे अपरिष्कृत विचारों एवं अशुभ संकल्पों की द्योतक होती हैं। शुभ संकल्प इन आदतों में परिष्कार लाने का अमोघ उपाय है।

शुभ संकल्पों के पूर्व आत्म-निरीक्षण आवश्यक है। अपनी क्या कमियाँ हैं, उन कमियों को दूर करने के लिए किस प्रकार का संकल्प आवश्यक है, ऐसा निरीक्षण कर एक व्यापारी जिस प्रकार अपने व्यापार को सही दिशा की ओर आगे बढ़ाकर समृद्धि को प्राप्त करता है। इसी प्रकार अपने जीवन की कमियों को जानकर कोई उनका निराकरण करने के लिए संकल्पबद्ध हो सकता है। शुभ संकल्प का प्रवाह जितना अधिक होगा, अशुभ संकल्प उतनी ही तेजी से क्षीण होते जायेंगे।

यह नववर्ष एवं आचार्य श्री हस्ती जन्म-शताब्दी प्रसंग हमारे जीवन में नया उत्साह लेकर उपस्थित हो रहा है। हमें अपने दोषों का निरीक्षण कर उन्हें दूर करने हेतु कोई-न-कोई शुभ संकल्प अवश्य ग्रहण करना चाहिए। संकल्प छोटा हो या बड़ा, किन्तु उसका पूर्ण निष्ठा से परिपालन कर अपनी चेतना को ऊँचा उठाना चाहिए। जो नियमित सामायिक नहीं करते हैं, उन्हें सामायिक करने का संकल्प करना चाहिए तथा जो सामायिक करते हुए भी मन, वचन एवं काया से लगने वाले दोषों को नहीं रोक पाते हैं उन्हें उन दोषों को रोकने का संकल्प करना चाहिए। इस प्रकार जो जिस पायदान पर है, उसे उससे ऊपर चढ़ने के लिए संकल्प ग्रहण करना है। नववर्ष के अवसर पर आप सबको हार्दिक बधाई एवं कम से कम जीवनोन्नयन का एक पायदान ऊपर चढ़ने हेतु हार्दिक शुभकामना।

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

(त्रिगुप्ति)

सच्चा तहेव मोसा य, सच्च-मोसा तहेव य।
चउत्थी असच्च-मोसा य, मणगुत्तिओ चउव्विहा।।
संरंभ-समारंभे, आरंभे य तहेव य।
मणं पवत्तमाणं तु, नियत्तेज्ज जयं जई।।
सच्चा तहेव मोसा य, सच्चा मोसा तहेव य।
चउत्थी असच्चमोसा य, वयगुत्ती चउव्विहा।।
संरंभ-समारंभे, आरंभे य तहेव य।
वयं पवत्तमाणं तु, नियत्तेज्ज जयं जई।।
ठाणे निसीयणे चेव, तहेव य तुयट्टणे।
उल्लंघण पल्लंघणे, इंदियाण य जुंजणे।।
संरंभ-समारंभे, आरंभम्मि तहेव य।
कायं पवत्तमाणं तु, नियत्तेज्ज जयं जई।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, चौबीसवाँ अध्ययन, गाथा-20-2:

सत्य तथा दूजी असत्य, सत्यामृष वैसे ही जानो।
चौथी असत्यामृष कहते, ये मनोगुप्तियाँ पहचानो।।
संरम्भ और है समारम्भ, आरम्भ तीसरा भेद यहाँ।
मन की प्रवृत्ति का रोध करे, यतना करने से यति कहा।।
सत्या और मिथ्याभाषा, तीजी मिश्रित है बतलाई।
व्यवहार चतुर्थी भाषा है, यों वचनगुप्ति है समझाई।।
समारम्भ संरम्भ तथा, आरम्भ भेद तीजा जानो।
इनमें वाणी के वर्तन को, रोके वह संयत पहचानो।।
खड़ा रहे बैठे, लेटे, संकोच प्रसारण कर्म करे।
उल्लंघन परिलंघन इन्द्रिय-गण की अन्य क्रियाओं में।।
समारम्भ संरम्भ तथा, आरम्भ तीसरा बतलाया।
इनमें लगती निज काया का, गोपन ही गुप्ति कहलाया।।

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

संघ

- हजार पाँच सौ ईंटों को व्यवस्थित जमा दिया जाय तो अच्छी सी दिवाल या चबूतरा हो सकता है, किन्तु उनमें स्थायित्व लाने के लिए, चूना, सीमेन्ट या चिकनी मिट्टी जैसा श्लेष जोड़ना पड़ता है अन्यथा कभी भी धक्का खाकर ईंट गिर सकती है। ऐसे ही मनुष्य में भी स्नेह, श्लेष और सरलता हो तो संगठन टिक सकता है।
- 'माया मित्ताणि नासेइ' जहाँ कपट है वहाँ प्रेम-मैत्री नहीं रह सकती।
- जैसे जड़ जगत में अनन्त परमाणु मिलकर स्कंध कहलाता है और व्यवहार में उपयोगी होता है वैसे ही अनेक व्यक्ति मिलकर जब संगठित होते हैं तो उसे संघ कहते हैं। एक की शक्ति दूसरे से मिलकर वृद्धिंगत हो और उसका व्यवहार में विशेष उपयोग हो सके, यही संघ-निर्माण का मुख्य लक्ष्य है।
- शक्ति एवं योग्यता हर व्यक्ति में है। जब एक से अनेक मिलते हैं तो उनकी शक्ति भी उसी प्रकार बहुगुणी हो जाती है जिस प्रकार एक से एक मिलने पर वे ग्यारह गुणे हो जाते हैं। परन्तु इतना ध्यान रहे कि विजातीय या विषम स्वभाव के अणुओं का मेल शक्ति को बढ़ाता नहीं, घटाता है। इसीलिये सुवर्णखान का पार्थिव पिंड बड़ा होकर भी उतना मूल्य नहीं देता, जबकि शुद्ध होने पर सुवर्ण का पिंड लघु होते हुए भी बहुमूल्य हो जाता है। ऐसे ही मानव समाज में भी विषम शील और विरुद्ध आचार-विचार के लोगों का संगठन लाभकारी नहीं होता।
- गुणहीन संगठन घास की पूली या भारे के समान है और गुणवान संघ घास के रस्से के समान है। घास का भारा और पूली मोटी होकर भी निर्बल होती है और रस्सा पतला होकर भी शक्तिशाली।
- करोड़ों मिथ्यात्वियों का समूह ज्ञानादि गुणों से हीन होने से भवबंधन नहीं काट सकता, परन्तु सम्यग्ज्ञानी छोटी संख्या में भी ज्ञान आदि गुणों से

सशक्त होकर स्व पर का बंधन काट सकते हैं। यही सुसंगठन की महिमा है।

- जैसे साधारण गृहस्थ को आत्म-रक्षण एवं विकास के लिए नगर के सुप्रबंध की आवश्यकता है वैसे ही मोक्षमार्ग के साधक को प्रमाद और कषायादि के वश साधना से स्खलना या उपेक्षा करने पर योग्य प्रेरणा की आवश्यकता रहती है, जो संघ में मिल सकती है। संघ में आचार्य आदि के द्वारा सारणा, वारणा और धारणा का लाभ मिलता रहता है। संघ के आश्रित साधुओं की रोगादि की स्थिति में संभाल की जाती है, ज्ञानार्थियों के ज्ञान में सहयोग दिया जाता है, अशुद्धि का वारण किया जाता है और शास्त्र-विरुद्ध प्ररूपणा को टालकर सम्यक् मार्ग की धारणा करायी जाती है। शिथिल श्रद्धा वालों को बोध देना और शिथिल विहारी को समय-समय पर प्रेरणा करना संघ का मुख्य कार्य है।
- संघ की यह अपेक्षा रहती है कि साधक में घोर तपोबल हो या न हो, विशिष्ट श्रुतधर होने के स्थान पर भले ही सामान्य श्रुतधर ही हो, विशाल शिष्य समुदाय की अपेक्षा कदाचित् परिवार हीन भी हो, पर अखंड संयम व सुश्रद्धा की संपदा तो होनी ही चाहिये।
- संघ में सत्य, सदाचार एवं अपरिग्रह के मूलव्रत अखंड हों, यह अत्यावश्यक है।
- संघ की शरण इसीलिये ली जाती है कि मंदमति साधक आदेश एवं संदेश में शास्त्र विरुद्ध प्रवृत्ति न करे, महिमा पूजा के चक्कर में अकल्प का आसेवन नहीं करे और साधना मार्ग में समय-समय पर प्रोत्साहन पाता रहे, ज्ञान-दर्शन-चारित्र की सरलता से वृद्धि कर सके।
- संघ शीतल घर की तरह है। संघ में योग्य साधक स्वयं अपने गुण-दोषों का निरीक्षण करता है और साधारण सा भी कहीं दोष दृष्टिगत हुआ कि अविलम्ब उसका शुद्धीकरण करता है।
- तप-नियम और संयम-श्रद्धा ही संघ-भवन का मुख्य आधार स्तम्भ है। अतः कल्याणार्थी के लिये सदा इस प्रकार के संघ की शरण श्रेयस्कर मानी गई है।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

अध्यात्मयोगी युगशास्ता गुरुदेव

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

गगन-मण्डल में उदीयमान सूर्य का परिचय नहीं दिया जाता। उसका प्रकाश और उसकी ऊष्मा ही उसके परिचायक हैं। फूल का परिचय उसका विकसित रूप और सुगंध है, जिस पर भ्रमर-दल स्वतः दौड़े हुए चले आते हैं। पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवन्त का भी क्या परिचय दूँ, वे श्रमण संस्कृति के अमरगायक, जैन संस्कृति के उन्नायक, युग को सामायिक-स्वाध्याय का अमर संदेश देने वाले महान् प्रतापी आचार्य, इतिहास के अन्वेषण के साथ इतिहास बनाने वाले आदर्श महापुरुष एवं यशस्वी सन्त थे।

आपके जीवन के कण-कण में प्रसिद्धि नहीं, सिद्धि का भाव समाया रहा। आपकी साधना का, प्रवचन-प्रभावना एवं वीतराग-वाणी के उपदेशों का लक्ष्य प्रभाव नहीं स्वभाव में लाने का रहा। आपके जीवन में विषमता नहीं समता का साम्राज्य रहा। आपकी अमर-साधना सादगी, सरलता व सेवा का सम्मिलित संयोग रही। सम्प्रदाय में रहते भी असाम्प्रदायिक रहकर आप सबको धर्म-मार्ग में आगे बढ़ते रहने की सत्प्रेरणा करते रहे। क्रियानिष्ठ होकर भी आपमें अहंकार की नहीं, आत्म-साक्षात्कार की भावना रही।

वे महामानव धर्म और दर्शन के ज्ञायक, सभ्यता और संस्कृति के रक्षक, न्याय और नीति के पालक, आगम-आज्ञा के आराधक, सत्य और शिव के सजग साधक, धर्म की आन-बान और ज्ञान के चतुर चितेरे, देशकाल की परिस्थितियों के प्रबुद्ध विचारक रहे। मन के श्याम पक्ष को आराधना से उज्ज्वल बनाने वाले, सामायिक-साधना रूप मंत्र के दाता एवं अज्ञानान्धकार को हटाने वाले स्वाध्याय दीप के प्रद्योतक रहे। आपके जीवन में स्वार्थ का कोई संकेत नहीं, परोक्ष-प्रत्यक्ष में कोई अन्तर नहीं, प्रदर्शन-आडम्बर नहीं, लोभ-लालच नहीं, मात्र आत्मा को परमात्मा

बनाने की टीस, साधक से सिद्ध बनाने की अन्तःकामना, समाज को ऊपर उठाने की एवं सुधार का दिशा बोध देने की ही अन्तरगूँज रही।

इस युग-पुरुष ने ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तपरूप मोक्ष-मार्ग के बल पर चतुर्विध संघ को आगे बढ़ने का संदेश दिया और निर्भीकता का, सच्चाई का, वीतरागता का, सिद्धान्त पर दृढ़ रहने का, मर्यादाओं एवं नियम-पालन का नूतन पाठ पढ़ाया। वे स्वयं सिद्धान्त पर अटल रहे। लाउडस्पीकर के निषेध, सामाचारी के पालन और संवत्सरी आदि के सिद्धान्तों पर दृढ़ रहे। जीवन में कभी हिम्मत नहीं हारी। छोटे से संघ में मर्यादा तोड़ने वालों को निकालते कभी हिचकिचाये नहीं।

युगशास्ता गुरुदेव के उच्च साधक व्यक्तित्व एवं कृतित्व के समक्ष बिना किसी भेद के जैन जैनेतर सभी श्रद्धावनत रहे। आपने संघ में समता के मेरुदण्ड को पुष्ट किया एवं स्वाध्याय के घोष का शंखनाद किया। आपकी इन प्रेरणाओं को आत्मोत्थान व संघोन्नति का अनिवार्य साधन मानते हुए सभी ने स्वीकारा है और उसका मूर्तरूप अन्य परम्पराओं द्वारा भी स्वाध्याय संघों की स्थापना के रूप में प्रत्यक्ष दृष्टिगत हो रहा है। आपके रोम-रोम में प्रेम, एकता, अनुराग संचरित होता रहा तथा अंतस् में करुणा का अविरल स्रोत निरंतर प्रवाहमान रहा। भगवंत की वाणी में ओज, हृदय में पवित्रता, उदारता एवं साधना में उत्कर्षता रही। आपका बाह्य व्यक्तित्व जितना नयनाभिराम था, उससे भी कई गुणा अधिक भीतर का जीवन मनोभिराम रहा।

आपके जीवन में सागर सी गंभीरता, चन्द्र सी शीतलता, सूर्य सी तेजस्विता, पर्वत सी अडोलता का सामंजस्य एक साथ देखने को मिला। आपकी वाणी, विचार एवं व्यवहार में सरलता का गुण अद्भुत विशेषता रही। जीवन में कहीं छिपाव नहीं, दुराव नहीं। सरलता, मधुरता एवं निष्कपटता का अद्भुत संगम था आपका जीवन।

गुरुदेव ने साधक जीवन में अहंकार को काला नाग मानते हुए उत्कृष्ट साधना के स्वरूप को स्वीकारा, क्योंकि जिसको काले नाग ने डस लिया हो वह साधना की सुधा पी नहीं सकता। गुरुदेव दया के देवता रहे। दया

साधना का मक्खन है, मन का माधुर्य है। दया की रस धारा हृदय को उर्वर बनाती है। जप-साधना आधि-व्याधि-उपाधि को समाप्त कर समाधि प्रदान करने वाली है, अतः आपने भोजन की अपेक्षा भजन को महत्त्व दिया। मौन-साधना आपकी साधना का प्रमुख एवं अभिन्न अंग रही।

शिक्षा की अनिवार्यता को महत्त्व प्रदान करते हुए आपने फरमाया कि जीवन में शिक्षा के अभाव में साधना अपूर्ण मानी गई है। शिक्षा का वही महत्त्व है जो शरीर में प्राण, मन व आत्मा का है। जीवन में चमक-दमक, गति-प्रगति, व्यवहार-विचार सब शिक्षा से ही सुन्दर होते हैं। संसार की सब उपलब्धियों में शिक्षा सबसे बढ़कर है। दीक्षा के साथ भी शिक्षा अनिवार्य है। यही कारण है कि आप शिष्य-शिष्याओं एवं श्रावक-श्राविकाओं को स्वाध्याय-साधना रूप शिक्षा की अनमोल प्रेरणा देते रहे।

आचार्य भगवन्त का दृढ़ मंतव्य रहा कि जीवन निंदा से नहीं निर्माण से निखरता है। निंदक भी कभी कुछ दे जाता है। जैसा कि कवि का कथन है- ''निंदक नियरे राखिये, आँगन कुटी छवाय। बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय।'' अतः आपने निंदक को भी अपना उपकारी बताया। स्तुति वालों से कहा- 'तुम्हारा मेरे पर स्नेह है, अतः तुम राग से कहते हो।' तो विरोध वालों से कहा- 'विरोध मेरे लिए विनोद है।' अनुकूल-प्रतिकूल हर स्थिति में गुलाब की तरह मुस्कराते रहना, यही समता-साधना की सही कला है, और आप उसी समता-साधना के साधक शिरोमणि रहे।

सं. 2041 के जोधपुर चातुर्मास में क्षमापना के उपलक्ष्य में युवाचार्य महाप्रज्ञ रेनबो हाउस पधारे तब उन्होंने कहा-''लोग कहते हैं आप अल्पभाषी हैं, कम बोलते हैं। पर कहाँ हैं आप अल्पभाषी ? आप बोलते हैं, बहुत बोलते हैं। आपका जीवन बोलता है, संयम बोलता है।''

अस्वस्थता की स्थिति देखकर सन्तों ने सहारा लेकर विराजने का निवेदन किया तो आचार्य भगवंत बोले- ''धर्म का सहारा ले रखा है।'' यही बात पाली में विदुषी महासती श्री मैना सुन्दरी जी के कहने पर भगवंत ने कही थी- ''आपने मेरे गुरुदेव को नहीं देखा, नहीं तो ऐसा नहीं कहती।''

आप संघ में रहे तब भी एवं बाहर रहे तब भी सभी महापुरुषों का आपके प्रति समान आदर भाव रहा। आचार्य श्री आत्माराम जी म.आपके लिये 'पुरिसवरगंधहत्थी' पद का प्रयोग करते थे। आचार्य श्री आनन्द ऋषि जी म. समय-समय पर समस्या का समाधान मंगाते थे। आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म.सा. स्वयं को साहित्य के क्षेत्र में लगाने में आपका उपकार मानते थे। प्रवर्तक श्री पन्नालाल जी म. आपको विचारक एवं सहायक मानते थे और प्रत्येक स्थिति में साथ रहे। आचार्य श्री जवाहरलाल जी म. ने आपको सिद्धांतवादी एवं परम्परावादी माना।

आप गुणप्रशंसक व गुणग्राहक रहे तथा परनिंदा से सदैव दूर रहे और जीवन पर्यन्त आपने इसी की प्रेरणा की। आप प्रचार के पक्षधर थे, किन्तु आचार को गौण करके प्रचार के पक्ष में नहीं रहे। "जिनके मन में गुरु बसते हैं, वे शिष्य धन्य हैं, पर जो गुरु के मन में रहते हैं, जिनकी प्रशंसा शोभा गुरु करते हैं, वे उनसे भी धन्य-धन्य हैं।" आप श्री पर यह कथन आपके माहात्म्य को स्पष्ट करता है।

भगवंत शिथिलाचार रूप विकार की विशुद्धि कर सारणा, वारणा, धारणा के पोषक रहे। आपने संघ के संगठन, संचालन, संरक्षण, संवर्धन, अनुशासन एवं सर्वतोमुखी विकास व अभ्युत्थान हेतु जीवन समर्पित कर दिया।

"सतगुरु की महिमा अनंत, अनंत किया उपकार।
लोचन अनंत उघारिया, अनंत दिखावन हार॥"

सद्गुरु पूज्य भगवंत के चरणों में भक्तों की भीड़ लगी रहती थी। जिज्ञासु अपनी जिज्ञासाएँ लेकर आते और संतुष्टि प्राप्त कर चले जाते। आशावादी अपनी आशाएँ लेकर आते और प्रसन्नता से आप्लावित होकर जाते। श्रद्धालु अपनी श्रद्धा लेकर आते और व्रत-नियम के उपहार से उपकृत होकर जाते। भक्त अपनी भक्ति से आते और आत्मिक शक्ति लेकर चले जाते। भावुक अपने भावनायुक्त अरमान लेकर आते और भाव विभोर होकर लौट जाते। सभी समस्याओं का समाधान, आपश्री के चरणों में होता था।

संध्या-समय सूर्य जब अस्ताचल की ओर जाता है तो उसका प्रकाश भी मंद हो जाता है। किन्तु आचार्य भगवन्त सूर्य से भी अधिक विलक्षण व्यक्तित्व के धनी थे। जीवन की सांध्य-वेला में भी उनका ज्ञान सूर्य नई-नई किरणें फेंककर सबको सावधान कर रहा था, समाधि-साधना चमत्कृत कर रही थी। आप आंख बंद करके भी चौबीसों घंटे जागृत थे, आत्मस्थ थे, अपने आप में लीन थे, अप्रमत्त थे। आपने भोजन तो छोड़ दिया, पर भजन नहीं छोड़ा। चौबीसों घंटे माला आपके हाथ में सुशोभित थी। अंगुलियों पर ललाई आने पर, आपके हाथ से माला लेने पर भी पौर पर माला चलती रहती, परिणामस्वरूप माला फिर हाथ में देनी पड़ती। चरणों में बैठकर ऐसा महसूस होता था कि मानो ज्ञान-सिंधु के चरणों में बैठे हैं। नित्य नवीन अनुभव मिलते रहते थे।

आपकी विशेषताओं का और गुणों का कथन करना असंभव है। क्या कभी विराट् सागर को अंजलि में भरा जा सकता है? मेरु को तराजू में तोला जा सकता है? पृथ्वी को बाल चरण से नापा जा सकता है? कदाचित् ये सब संभव हो सकता है, परन्तु गुण-खान पूज्य गुरुभगवन्त के गुण-गान संभव नहीं।

जिनका जीवन कथनी का नहीं करणी का, राग का नहीं त्याग का संदेश देता है, जन-जन के हृदय सम्राट्, साधकों के जीवन निर्माता, भक्तों के भगवान्, साधु मर्यादा के उत्कृष्ट पालक एवं संरक्षक, असीम गुणों के अक्षय भंडार, संयम-जीवन प्रदाता, इस जीवन के कुशल शिल्पकार परम पूज्य आचार्य भगवन्त को मैंने अपने चर्म चक्षुओं से जिस रूप में देखा, वह महज अनुभूति का विषय है। इस जीवन में हर क्षण उन महनीय गुरुवर्य का अनन्त उपकार रहा है, संयम के हर कदम पर उनकी महती प्रेरणा रही है, उनका वरदहस्त सदा पाथेय बन सम्बल देता रहा है। साधक जीवन की अभिव्यक्ति वाले अनेक सूत्र भगवन्त के जीवन में साकार सिद्ध थे। उनके जीवन-सूत्र शिक्षा बन साधक-जीवन का पथ प्रशस्त कर रहे हैं।

संवत् 2009 के नागौर चातुर्मास में आचार्य भगवंत ने अपने जीवन में सधा हुआ एक सूत्र दिया-

खण निकम्मो रहणो नहीं, करणो आतम काम।
भणणो, गुणणो, सीखणो, रमणो ज्ञान आराम।।

चौदह वर्ष की वय में इस बाल ने (मैंने) नागौर चातुर्मास में देखा कि समग्र संसार जिस समय गहन निद्रा में सोया रहता है, उस समय भी वह अप्रमत्त साधक स्मरण व ध्यान में लीन रहता। रात्रि 12 से 3 बजे के बीच जब भी भगवन्त जाग जाते, मैंने उन्हें सीढ़ियों में एक पांव ध्यानस्थ खड़े होकर साधना करते पाया। भोगियों के लिये जो निद्रा का समय है, उन आत्मयोगी महापुरुष के लिए वह निर्जरा का समय होता था। संसारी जन दिन में भी सुखपूर्वक विश्रान्ति के लिए ही तो यत्नशील रहते हैं, पर महापुरुष तो रात्रि में भी अनन्त प्रकाश के प्रकटीकरण के लिये यत्नशील रहते हैं। जागरमाणा उन महामनीषी के लिए रात्रि भी दिन के समान ही थी।

श्रमण भगवान् का कथन "देवावि तं नमंसन्ति जस्स धम्मे सया मणो" भगवन्त के जीवन में साकार देखा। जिनके मन में धर्म रम गया है, उन दृढ़ संयमी श्रमण भगवन्त के चरणों में देवता भी झुकें तो आश्चर्य क्या? अनन्तपुरा आदि अनेक स्थानों पर उन पूज्यपाद के पावन पदार्पण व प्रभावक प्रेरणा से पशु बलि बन्द हो जाना जैसे अनेक उदाहरण उनके साधनानिष्ठ जीवन के प्रबल प्रभाव बताते हैं। अहिंसा, संयम एवं तप से भावित रत्नाधिक महापुरुषों के लिये न कोई भय है, न उनके जीवन में स्व पर का कोई भेद है और न ही कोई खेद। "अहिंसा प्रतिष्ठायां वैरत्यागः", जिनके रोम-रोम में दया का वास हो, प्रत्येक प्राणी के कल्याण की ही कामना हो, उन अभय के देवता से भला किसका वैर हो सकता है, नागराज एवं अरण्य के राजा सिंहराज भी नत-मस्तक हो जायें तो भला आश्चर्य क्या? भव-भव संचित कर्म शत्रु भी तो उनकी आत्मा के पुरुषार्थ या सिंहनाद के समक्ष कहाँ टिक पाते हैं। अलवर के विहार क्रम में मैं साथ था। रात्रि में शेर की दहाड़ सुनी, पर शेर जैसे आया, वैसे चल दिया।

षट्कायप्रतिपालक महापुरुष स्वयं तो निर्भय होते ही हैं, अपने संसर्ग, सान्निध्य में आने वालों के लिये भी अभयप्रदाता बन जाते हैं। सं.2022 में आचार्य भगवन्त का बालोतरा चातुर्मास था। मेरी दीक्षा का दूसरा वर्ष था।

उस समय भारत-पाकिस्तान की लड़ाई का प्रसंग आया। भगवन्त उस समय श्रमण संघ में उपाध्याय थे। आचार्य श्री आनन्द ऋषिजी ने पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी महाराज के लिए लिखवाया कि ऐसी स्थिति में कभी स्थान बदलना पड़े तो आप स्थान बदल लें। उस लड़ाई में बाड़मेर से वायुयान बालोतरा होकर जोधपुर जाते। वायुयानों की गड़गड़ाहट सुनी जाती, बम गिरते। कुछ बम जोधपुर से पहले भी गिरे, जोधपुर में अनेक बम गिरे, लेकिन नुकसान नहीं हुआ। आचार्य सम्राट् के समाचार आने पर भी भगवन्त ने स्थान नहीं बदला, निर्भयता से वहीं चातुर्मास किया।

संयमनिष्ठ महापुरुष कभी चमत्कार नहीं दिखाते। ऋद्धियाँ, सिद्धियाँ व चमत्कार तो उनके अनुचर होते हैं। उनका जीवन स्वयं चमत्कार बन जाता है। स्वयं भगवन्त से पीपाड़ में सुना- बारह वर्ष तक यदि कोई 'तच्चित्ते तम्मणे' होकर सत्य भाषण व सद् आचरण करे तो उसे वचन सिद्धि हो जाती है। निर्मल मतिश्रुत के धारक उन महामनीषी के अल्प संभाषण में भी भक्तों को भविष्य का सहज संकेत मिल जाता था। श्रद्धालु भक्तजन आने वाली विपत्तियों का आभास पाकर श्रद्धावनत हो जाते।

समत्व साधक भगवन्त जहाँ-जहाँ पधारे, वैषम्य दूर होता गया। सिवाञ्ची का विवाद जो कई सन्त-महापुरुषों की प्रेरणा से न सुलझ पाया, धड़ेबन्दी भी इतनी मजबूत कि घर आया जामाता भोजन नहीं करे, राखी बांधने आई भगिनी भाई के घर का पानी भी नहीं पीये। परस्पर विभेद इतना कि विवाद का निपटारा करने बैठे पंच भी एक जाजम पर बैठने को तैयार नहीं, लूनी नदी से रेत मंगाकर उस पर बैठे। सामाजिकों के मन में कैसी गहरी खाई? सामायिक के आराधक आचार्य भगवन्त का समत्व का सच्चा संदेश सिवांचीवासी भाइयों के गले उतरा और वहाँ जन-जन में स्नेह सरिता प्रवाहित हुई। समदड़ी, किशनगढ, बालेसर आदि अनेक स्थानों पर समाज में व्याप्त धड़ेबंदी व कलह के बादल आपके पावन पदार्पण एवं प्रेरणा से छंट गये।

एक बार मैंने भगवन्त से पूछा- ''भगवन्! आपके उद्बोधन से अनुमानतः कितने व्यक्तियों के जीवन को नई दिशा मिली होगी? प्रत्युत्तर

में निस्पृहयोगी ने फरमाया- "भाई! कर्त्तव्य करने के होते हैं, कहने के नहीं।"

जिनके स्वयं के मन में पक्षपोषण एवं साम्प्रदायिकता की भावना न हो, महापुरुष ही समाज को समत्व व एकत्व का संदेश दे सकता है। आपके जीवन में अनेक बार ऐसे प्रसंग आये जब अन्य परम्परा के असन्तुष्ट संत गुरुचरणों से विमुख हो आपकी सेवा में आये, पर आपने कभी उन्हें प्रोत्साहित नहीं किया, वरन् समझा-बुझा कर सत्परामर्श देकर पुनः गुरु चरणानुयायी बनाया। मोहनीय के उदय से कभी किसी सम्प्रदाय का कोई संत कभी भटक गया तो हवा उड़ाने की बजाय पुनः श्रावकों का मार्गदर्शन कर उन्हें स्थिर ही किया व उन परम्पराओं का सम्मान एवं जिनशासन की गरिमा को अक्षुण्ण बनाये रखा। तभी तो सभी परम्पराओं के महापुरुषों का आपके प्रति अनन्य स्नेह व श्रद्धाभाव था। विपरीत परिस्थिति होने पर आपसे मार्गदर्शन, सहयोग व संरक्षण लेने में किसी को कोई संकोच नहीं हुआ।

आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनन्द ऋषिजी म.सा. के एक शिष्य को रामपुरा चौकी से विहार करते समय सर्प ने डस लिया। आगे विहार करते आचार्य सम्राट् को जानकारी दी गई तो निःसंकोच उन्होंने फरमाया-घबराने की बात नहीं, पीछे पूज्य श्री पधार रहे हैं, वे संभाल लेंगे। परस्पर कितनी उदारता! आपके साधनानिष्ठ व्यक्तित्व पर महापुरुषों का भी कितना गहरा विश्वास! कहना होगा भगवन्त पधारे और स्मरण एवं ध्यान साधक ने कुछ ही मिनटों में उन संतों को विषमुक्त कर दिया।

सं. 2012 में भगवन्त का चातुर्मास अजमेर में था। आचार्य सम्राट् पूज्य आनन्द ऋषिजी म.सा. के कुछ संत भी वहीं थे। दो संत अस्वस्थ हो गये। आचार्य सम्राट् ने संतों को पत्र लिखवाया- "मेरे में और पूज्य श्री में कोई भेद नहीं है, तुम उनकी सेवा में रहकर स्वास्थ्य-लाभ करके आओ।"

जप साधक गुरुदेव के जीवन की बुजुर्गों से सुनी हुई घटना है। जयपुर में एक सम्प्रदाय के विशिष्ट पद वाले महापुरुष का एक संत रात्रि में गायब

ध्यान योगी आचार्य भगवन्त ने ध्यान के बाद कुन्दीघर भैरुजी के रास्ते में मिलने का संकेत फरमाया। श्रावकगण पहुँचे व पुनः उसे गुरु चरणों में संभलाया। ध्यान की कैसी एकाग्रता। सामान्य जन जैसे रील में देखते हैं, आचार्य भगवन्त को ध्यान में वैसे दृष्टिगोचर हो जाता था। ध्यान-साधना से जिनकी ग्रन्थियों का छेद हो जाता है, वह महासाधक ही साधना की ऐसी उच्च स्थिति को प्राप्त कर सकता है।

महापुरुषों का दर्शन, वन्दन व समागम ही संकटनाशक बन जाता है। उन महापुरुष का व्यक्तित्व ही ऐसा महिमामय था, साधना ही ऐसी अत्युच्च कोटि की थी, उनके सान्निध्य के परमाणु पुद्गल ही इतने पवित्र थे, उनका आभा मंडल ही इतना देदीप्यमान था कि मानव की तो बिसात ही क्या, सुर-असुर कृत बाधाएँ भी टिक नहीं पाती थीं। संकटग्रस्त भक्तों का सहज समाधान हो जाता था। मैंने स्वयं साधक जीवन में उनके सान्निध्य में रहते हुए अनेक भक्तों को, जिन्होंने जीवन की, संकट मुक्ति की सभी आशाएँ छोड़ दी, सहज ही संकट मुक्त होते देखा है।

मैंने उन ज्ञान सागर साधना सुमेरु गुरु भगवन्त को चर्म चक्षुओं से जो देखा है, उसका अंश मात्र कह पा रहा हूँ। एक प्रवचन क्या, समग्र जीवन ही उन ज्ञान सागर के बारे में बोलता रहूँ तो भी बोलना शेष ही रहेगा। ज्ञान चक्षुओं से उन महापुरुष के अन्तर गुणों का अवलोकन अतिशय ज्ञानियों के सामर्थ्य का विषय है।

('नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' से गृहीत)

Research on 'Sthankvasi Parampara'

Dr. Peter Flugel doing research work on "Sthankvasi Parampara" at London University, London, is visiting Punjab from 20th Dec. to 30th Dec. 2009 in connection with his research work, darshan of Shri Guru Bhagwant & visiting various Stoops, Maths & Dhams constructed in memory of sadhus. Those interested to give him guidance may contact at his **email:** pf8@soas.ac.uk

-Dr. Sohan lal Sancheti,

Kesarwadi, Chandi Hall, Jodhpur (Raj.)

शोधालेख

भारतीय तंत्र-साधना और जैन धर्म-दर्शन (5)

प्रो. सागरमल जैन

मंत्र-साधना और जैन दृष्टि

'मंत्र-साधना' तांत्रिक-साधना अथवा योग-साधना का एक आवश्यक अंग है। जैन धर्म के प्राचीन ग्रन्थों में तो मांत्रिक साधना का स्पष्ट निषेध किया गया था, किन्तु परवर्ती काल में तांत्रिक परम्परा के प्रभाव से जैन धर्म में मान्त्रिक साधनाएँ स्वीकृत हो गई। फिर भी जहाँ तान्त्रिक साधना है वहाँ मंत्र को आध्यात्मिक या दैवीय शक्ति से सम्पन्न भौतिक कल्याण का हेतु माना गया, किन्तु जैन दर्शन ने मंत्र और तंत्र को पौद्‌गलिक शक्ति से युक्त भौतिक एवं आध्यात्मिक कल्याण का हेतु माना। धरसेन ने योनिप्राभृत में स्पष्ट रूप से यह कहा है कि मंत्र एवं तंत्र शक्तियों को पौद्‌गलिक शक्ति का ही एक विभाग मानना चाहिए (जोनिपाहुडे भणिदं-मंत-तंतसत्तीयो पोग्गलाणुभागो त्ति घेत्तव्वो)। इस प्रकार जहाँ तांत्रिक-साधना में मंत्र को देव अधिष्ठित आत्मिक शक्ति कहा गया वहाँ जैन परम्परा में उसे एक पौद्‌गलिक शक्ति ही माना गया।

जैनों के अनुसार मंत्र ध्वनि रूप होते हैं। ध्वनि मातृका पदों (स्वर-व्यंजनों) के माध्यम से अभिव्यक्त होती है। मंत्र ध्वनि रूप है और ध्वनि को जैन दर्शन में भाषावर्गणा के पुद्‌गलों से निर्मित एक पौद्‌गलिक संरचना माना गया है। अतः ध्वनि रूप मंत्र पौद्‌गलिक है। वस्तुतः मंत्र के उच्चारण से जो ध्वनि तरंगें प्रसृत होती हैं उनमें ही मंत्रों की कार्य शक्ति निहित होती है।

ध्वनि तरंगों की क्या और कैसी प्रभावक शक्ति होती है, यह आज के वैज्ञानिक युग में अज्ञात नहीं है। वस्तुतः आज अधिकांश वैज्ञानिक उपकरणों का नियंत्रण तरंगों के माध्यम से ही होता है। मात्र इतना ही नहीं जैन दर्शन का तो यह भी मानना है कि मंत्र-साधना में जो ध्यान के माध्यम से सूक्ष्म चिन्तन होता है वह विचार या चिन्तन ही शब्द रूप होता है और वह चाहे कितना ही सूक्ष्म क्यों न हो तरंग रूप होता है। वे सूक्ष्म ध्वनि की सूक्ष्मतम तरंगें भी कम्पनों को उत्पन्न कर अपना कार्य सिद्ध करती हैं। अतः जैन आचार्यों की यह मान्यता कि

मंत्र शक्ति पौद्गलिक शक्ति है, पूर्णतः वैज्ञानिक है। यद्यपि यहाँ यह ज्ञातव्य है कि जैन दर्शनानुसार जिस प्रकार कर्म पुद्गल चेतना या चित्त शक्ति को प्रभावित करते हैं उसी प्रकार मंत्र भी देवों की चित्त शक्ति को प्रभावित करते हैं।

यह सत्य है कि प्रारम्भिक काल में जैन-साधना में मंत्र-साधना आध्यात्मिक विशुद्धि रूप ही मानी जाती थी। यहाँ यह समझ लेना चाहिये कि जैन परम्परा में जिस मंत्र-साधना का प्रारम्भिक काल में विरोध किया गया वह मंत्र साधना मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण आदि से संबंधित मंत्र साधनाएँ ही थीं। आत्म विशुद्धि के हेतु के रूप में मंत्र-साधना का निषेध नहीं था।

प्राचीन काल में जैन परम्परा में पंच परमेष्ठी नमस्कार मंत्र को मंत्र रूप में मान लिया गया था। इस नमस्कार मंत्र को सर्वश्रेष्ठ मंगलदायक मंत्र माना जाता था और इन्हीं पाँच पदों के आधार पर सकलीकरण एवं ग्रह शांति की जाती थी। उसके पश्चात् परमावधि ज्ञानी, केवलज्ञानी, लब्धिधर आदि को उनमें सम्मिलित किया गया। इस प्रकार 48 पदात्मक सूरि मंत्र आदि का निर्माण हुआ। कालान्तर में चौबीस तीर्थंकरों और उनके यक्ष-यक्षियों से संबंधित मंत्रों का निर्माण हुआ और इन मंत्रों के माध्यम से सकलीकरण ग्रह-शांति आदि के कार्य सम्पन्न किये जाने लगे। यहाँ तक तो जैन मंत्र-साधना से जैन धर्म का कुछ संबंध रहा, किन्तु आगे चलकर ज्वालामालिनी आदि देवियों, 64 योगिनियों, भैरव आदि से संबंधित मंत्र भी अस्तित्व में आये, जिन्हें हम हिन्दू तांत्रिक साधना का स्पष्ट प्रभाव कह सकते हैं। यह प्रभाव कैसे और किस रूप में है, आगे इसकी विस्तृत चर्चा करेंगे।

सर्वप्रथम तो जैनों ने अपने नमस्कार महामंत्र को ही मान्त्रिक स्वरूप प्रदान किया और इसी क्रम में न केवल नमस्कार मंत्र के पदों की संख्या में विकास हुआ, अपितु प्रत्येक पद के साथ बीजाक्षर अर्थात् ॐ ऐं ह्रीं आदि योजित किए गये। इस प्रकार नमस्कार मंत्र को तंत्र-परम्परा में प्रचलित बीजाक्षरों से समन्वित करके जैन आचार्यों ने उसे तंत्र-साधना की दृष्टि से मान्त्रिक स्वरूप प्रदान किया। यह स्पष्ट है कि नमस्कार मंत्र के साथ बीजाक्षरों को योजित करने की यह परम्परा तंत्र से प्रभावित है। मात्र इतना ही नहीं इससे यह भी सिद्ध होता है कि जैन आचार्यों ने अन्य परम्पराओं में प्रचलित तांत्रिक-

साधना का मात्र अन्धानुकरण नहीं किया है, अपितु अनेक स्थितियों में उसे विवेकपूर्वक अपनी परम्परा से योजित भी किया है।

इसी क्रम में तंत्र-साधना से प्रभावित होकर जैनों ने न केवल प्रणव (ॐ) को नमस्कार मंत्र से निष्पन्न बताया, अपितु प्रत्येक पद के वर्ण आदि का भी निर्धारण किया और आत्मरक्षा, सकलीकरण अंग न्यास, ग्रह-नक्षत्र आदि की शांति के प्रसंग में भी नमस्कार मंत्र को योजित करने का प्रयत्न किया है। जैनाचार्यों ने नमस्कार मंत्र के विविध पदों के आधार पर विविध प्रयोजन संबंधी मंत्रों की रचना भी की जिसकी चर्चा सिंहनन्दि विरचित 'पंचनमस्कृति दीपिका' के नमस्कार संबंधी मंत्रों के प्रसंग में की गई है। नमस्कार मंत्र के पश्चात् जैन परम्परा में लब्धिधरों, ऋद्धिधरों के प्रति नमस्कार पूर्वक अनेक मंत्रों की रचना हुई। सर्वप्रथम तो इन पदों में सूरिमंत्र या गणधरवलय की रचना हुई जिसमें इन लब्धिधारियों को नमस्कार किया गया है। प्रत्येक लब्धिधारी पद में नमस्कार पूर्वक बीजाक्षरों को योजित करके अनेक मंत्र बने और उन मंत्रों की साधनाविधि तथा उनसे होने वाले फलों या उपलब्धियों की भी चर्चा की गयी। इसके पश्चात् 'लोगस्स' और 'नमोत्थुणं' (शक्रस्तव) जो मूलतः प्राचीन स्तुति परक प्राकृत रचनाएँ हैं, उनके आधार पर भी मंत्रों की रचनाएँ हुई। इनमें इन स्तुति पाठों के अंशों के साथ बीजाक्षरों आदि को योजित करके मंत्र बनाए गए हैं और इनकी साधना से भी विविध लौकिक उपलब्धियों की चर्चा की गयी है।

इन मंत्रों के साथ-साथ जब जैन परम्परा में 16 महाविद्याओं, 24 यक्षिणियों एवं 24 यक्षों, नवग्रह, दिक्पाल, क्षेत्रपाल आदि को देवमंडल में सम्मिलित कर लिया गया तो इनसे संबंधित मंत्रों की भी रचनाएँ हुईं, जो पूरी तरह अन्य तांत्रिक-साधना पद्धतियों से प्रभावित हैं। जहाँ तक पंच परमेष्ठी, 24 तीर्थंकर और लब्धिधारियों से संबंधित मंत्रों का प्रश्न है वे मुख्यतया प्राकृत में रचे गए हैं। मात्र बीजाक्षरों अथवा फट्, स्वाहा आदि के रूप में ही उनके साथ संस्कृत शब्दों की योजना की गयी। विद्यादेवियों, यक्षों, यक्षिणियों (शासनदेवियों) से संबंधित जो मंत्र निर्मित हुए हैं वे मुख्यतः संस्कृत भाषा में रचित हैं यद्यपि इनसे संबंधित कुछ मंत्र प्राकृत में भी मिलते हैं। वस्तुतः यक्ष-यक्षी, दिक्पाल, क्षेत्रपाल (भैरव), नवग्रह, नक्षत्र आदि की अवधारणाओं का

जैन परम्परा में भी अन्य परम्पराओं से संग्रह किया गया। उसके परिणामस्वरूप तत्संबंधी मंत्र भी अन्य परम्पराओं से आंशिक परिवर्तनों के साथ गृहीत कर लिए गए। पुनः इन देव-देवियों संबंधी जो भी मंत्र बने, उनमें लौकिक उपलब्धियों की ही कामना अधिक रही। यहाँ तक कि मारण, मोहन, उच्चाटन आदि षट्कर्मों से संबंधित मंत्र भी जैन परम्परा में मान्य हो गये जो उसकी निवृत्तिमार्गी अहिंसक परम्परा के विपरीत थे। इस प्रकार हम देखते हैं कि मंत्र साधना के क्षेत्र में जैनों पर अन्य तांत्रिक परम्पराओं का प्रभाव है। विशेष रूप से षट्कर्म संबंधी मंत्रों में तो उन्होंने अविवेकपूर्वक अन्य परम्पराओं का अन्धानुकरण किया है, किन्तु अनेक प्रसंगों में उन्होंने स्वविवेक का परिचय ही दिया है और अपनी परम्परा के अनुरूप मंत्रों की रचना की है ताकि सामान्यजन की श्रद्धा को जैन धर्म में स्थित रखा जा सके और जैन परम्परा की मूलभूत जीवन दृष्टि को भी सुरक्षित रखा जा सके।

स्तोत्र पाठ, नामजप एवं मंत्रजप

तांत्रिक-साधना में इष्ट देवता की प्रसन्नता के हेतु ध्यान के साथ-साथ स्तुति, नामसंकीर्तन और जप का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। इष्ट देवता की स्तुति एवं नामस्मरण के साथ-साथ विभिन्न मंत्रों की सिद्धि के लिए उन मंत्रों का या उनके अधिष्ठायक देवता के विभिन्न संख्याओं में जप करने के विधान भी हमको न केवल हिन्दू-तांत्रिक परम्परा के ग्रन्थों में, अपितु जैन परम्परा के तंत्र संबंधी ग्रन्थों में भी मिलते हैं। किन्तु मूल प्रश्न यह है कि क्या ध्यान-साधना के समान ही नामस्मरण या जप साधना की भी जैनों की अपनी मौलिक परम्परा रही है। हमें जैनागमों में और 9वीं शती के पूर्व के जैन ग्रन्थों में जप-साधना और उससे संबंधित विधि-विधानों के कोई विशेष उल्लेख देखने को नहीं मिलते हैं। जो भी प्राचीन उल्लेख उपलब्ध हैं वे मात्र स्तुतियों से संबंधित हैं। प्राचीन आगमों में वीरस्तुति (वीरत्थुई), शक्रस्तव (नमोत्थुणं), चतुर्विंशतिस्तव (लोगस्स) और पंच नमस्कार से संबंधित संदर्भ ही मिलते हैं।

जैन परम्परा में नाम-स्मरण एवं जप-साधना के हमें जो उल्लेख प्राप्त होते हैं वे सभी प्रायः 9 वीं शती के पश्चात् के हैं और मुख्यतः भक्तिमार्गी एवं तांत्रिक परम्परा के प्रभाव से ही विकसित हुए हैं। स्तुतियों से संबंधित संदर्भ

आचारांग, सूत्रकृतांग, भगवती एवं आवश्यक सूत्र जैसे प्राचीन आगमों में उपलब्ध हैं। किन्तु नामस्मरण की परम्परा इसमें परवर्ती है। जिनसहस्र नाम का सर्वप्रथम उल्लेख जिनसेन (9 वीं शती) के आदिपुराण में मिलता है। मंत्रों के जप संबंधी निर्देश तो इसकी अपेक्षा भी परवर्ती हैं। वे ईसा की 10 वीं शताब्दी के बाद के ग्रंथों में ही उपलब्ध होते हैं। (क्रमशः)

-निदेशक, प्राच्य विद्यापीठ, शाजापुर (म.प्र.)

मनीषियों की दृष्टि में आचार्य हस्ती

संकलन : श्री सुरेशचन्द धींग

卐 'पुरिसवरगंधहत्थीणं'-हाथियों में जिस प्रकार 'गंधहस्ती' की श्रेष्ठता स्वीकृत है, उसी प्रकार वे पुरुषों में श्रेष्ठ थे।

-आचार्य आत्माराम जी म.सा.

卐 प्रथम दर्शन में ही मैं उनसे अत्यधिक प्रभावित हुआ। उनके द्वारा प्रदत्त शिक्षाएँ मेरे जीवन की अनमोल थाती बन गई।

-आचार्य देवेन्द्रमुनि जी म.सा.

卐 विशुद्ध ज्ञान व निर्मल आचरण के पक्षधर आचार्य श्री हस्ती ने जिनशासन में जो सेवाएँ अर्पित कीं, वे सदा प्रेरक रहेंगी।

-आचार्य नानालाल जी म.सा.

卐 श्रमण संस्कृति के अमर गायक, जैन संस्कृति के उन्नायक महान् प्रतापी आचार्य।

-आचार्य हीराचन्द्र जी म.सा.

卐 ज्ञान-क्रिया के संगम तथा सामायिक-स्वाध्याय के पर्याय।

-उपाध्याय मानचन्द्र जी म.सा.

卐 ज्योतिर्धर आचार्यों की आठ गणिसंपदाओं से युक्त त्याग, तप, स्वाध्याय, प्रवचन, प्रभावना एवं अनाग्रहवृत्ति के मूर्तिमंत स्वरूप।

-आचार्य सुदर्शनलाल जी म.सा.

卐 छह दशक तक निरतिचार आचार्य पद निर्वहन तथा 13 दिवसीय तप-संथारा, पिछले 200 वर्षों के इतिहास में दोनों घटनाएँ अद्वितीय हैं।

-मुनि घेवरचन्द जी म.सा. 'वीरपुत्र'

-बम्बोरा, जिला-उदयपुर (राज.)

चिंतन

क्रोध को क्यों त्यागें?

श्री ओ.पी. चपलोत

जैन दर्शन में शास्त्रकारों ने अठारह पाप बताये हैं, जो आत्मा को गिराते हैं। उनमें से छठा स्थान क्रोध का है। यह मोहनीय कर्म का भेद है। इसके उदय में कार्य-अकार्य का विवेक नहीं रहता है। यह व्यक्ति की प्रकृति को क्रूर बना देता है। क्रोध के आवेश में आकर प्राणी अपने माता-पिता, भाई-भगिनी, पुत्र-पुत्री, स्वामी-सेवक, पति-पत्नी, गुरु-शिष्य आदि आत्मीय जनों को पीड़ा देने में भी चूक नहीं करता है। अधिक क्या, कदाचित् अत्यन्त कुपित हो जाय तो आत्मघात भी कर बैठता है। इस कारण क्रोध को चाण्डाल की उपमा दी गई है।

उत्तराध्ययन सूत्र के 23वें अध्ययन में केशी स्वामी ने कहा है-

संपज्जलिया घोरा अग्गी चिट्टइ गोयमा!

अर्थात् हे गौतम! जलती हुई और भयंकर अग्नि हृदय में स्थित है। यह अग्नि और कोई नहीं, क्रोध की ही अग्नि है। जब यह आग भड़क उठती है तो क्षमा, दया, शील, संतोष, तप, संयम, ज्ञान आदि उत्तमोत्तम गुणों को जलाकर भस्म कर देती है। चेतना पर मिथ्यात्व की कालिमा चढ़ा देती है।

क्रोधी व्यक्ति स्वयं भी जलता है और दूसरों को भी जला देता है। क्रोधी, मदोन्मत्त के समान बेभान होकर प्रिय वस्तु को भी तोड़फोड़ देता है और फिर पश्चात्ताप करता है। क्रोधी आदमी अंधे के समान होता है, क्योंकि उसे भला बुरा नहीं सूझता। क्रोधी कृतघ्न भी होता है, क्योंकि वह उपकारी के उपकार को क्षणभर में भूल जाता है।

एक साधक ने गुरु से पूछा- विष क्या है और अमृत क्या है?

गुरु ने कहा- क्रोध विष है एवं क्षमा अमृत है।

क्रोध के प्रभाव-

क्रोध के मुख्यतः निम्नलिखित प्रभाव होते हैं:

(1) क्रोध शुभ परिणामों का नाश करता है।

(2) यह सर्वप्रथम अपने स्वामी को जलाता है और बाद में दूसरों को।

(3) क्रोध से विवेक दूर भागता है और उसका प्रतिपक्षी अविवेक आकर जीव को अकार्य में प्रवृत्त करता है।

(4) क्रोध सदाचार को दूर भगाता है और मनुष्य को दुराचार में प्रवृत्त होने के लिए प्रेरित करता है।

(5) क्रोध वह अग्नि है जो चिरकाल से अभ्यस्त यम, नियम, तप आदि को क्षण भर में भस्म कर देती है।

(6) यह दोनों लोकों को बिगाड़ने वाला, पापमय एवं आत्मा का महान् शत्रु है।

क्रोध कषाय से आत्मा तप्त हो जाती है। वैर एवं शत्रुता की उत्पत्ति एवं वृद्धि होती है। इसे आग की संज्ञा दी गई है, जो कि आग की तरह सबसे पहले अपने आश्रय स्थल को जलाती है, इसके बाद दूसरों को जलाती है। कभी-कभी वह दूसरों को नहीं भी जला पाती है तब भी अपने आश्रय स्थल को तो जलाती ही रहती है। वृद्धि पाया हुआ क्रोध इतना विकराल हो जाता है कि वह बड़ा भारी अनर्थ कर डालता है। द्वैयापन ऋषि के क्रोध की अग्नि से ही अमरापुरी के समान भव्य द्वारिकानगरी का नाश हो गया।

'द जर्नल ऑफ द अमेरिकन कॉलेज ऑफ कॉर्डियोलोजी' द्वारा क्रोध पर किये गए शोध की प्रकाशित रिपोर्ट में यह बात सामने आई है कि गुस्सा दिल में त्वरित बदलाव लाता है और अचानक हार्ट अटेक का कारण बन सकता है।

भगवान् महावीर ने अकाल मृत्यु के अनेक कारण बताये हैं, उनमें एक मुख्य कारण है अध्यवसाय यानी राग-द्वेष की तीव्रता अथवा कषाय की उग्रता। अंतःकरण में तीव्र आवेश आया, प्रबल आक्रोश आया, हृदय की गति इतनी प्रबली बनी कि व्यक्ति अकाल मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। हृदय पर भावना का प्रभाव पड़ता है। अतः हृदय रोगी को भावनाओं का विशेष रूप से ध्यान रखना आवश्यक है।

जिस प्रकार अग्नि थोड़े ही समय में रूई के ढेर को भस्म कर डालती है, उसी प्रकार क्रोध भी आत्मा के समस्त गुणों को भस्म कर देता है। क्रोध उत्पन्न होने पर मनुष्य आँखें होते हुए भी अंधा बन जाता है। शास्त्रों में कहा है कि वैर से वैर बढ़ता है एवं क्रोध करने से क्रोध अधिक बढ़ता जाता है।

शास्त्र में साधु के लिए तो यहाँ तक कहा है कि- "हे साधु! अगर किसी के साथ तुम्हारा क्लेश हुआ है तो जब तक तुम उसे उपशांत नहीं कर लेते, तब तक तुम लाये हुए आहार पानी का उपभोग नहीं कर सकते।"

गीता में क्रोध के सम्बन्ध में कहा है-

क्रोधाद् भवति संमोहः,संमोहात् स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो, बुद्धिनाशात् प्रणश्यति।।

विषय के प्रति उत्पन्न हुए आकर्षण से कामना उत्पन्न होती है और कामना में किसी प्रकार का विघ्न उत्पन्न होने से क्रोध पनपता है। यही क्रोध अविवेक को जन्म देता है और अविवेक से स्मरण शक्ति भ्रमित होने लगती है। स्मरण शक्ति के भ्रमित हो जाने से ज्ञान शक्ति नष्ट हो जाती है और ज्ञान शक्ति के नष्ट होने से व्यक्ति अधोगति को प्राप्त करता है।

दशवैकालिक सूत्र में कहा है-

कोहो पीइं पणासेइ, माणो विणयनासणो।
माया मित्ताणि नासेइ, लोहो सव्वविणासणो।।

-दशवैकालिक सूत्र- 8.27

जब क्रोध उत्पन्न होता है तो प्रीति नष्ट हो जाती है। मान से विनय का नाश होता है। माया से मित्रता का नाश होता है एवं लोभ से सर्वनाश होता है।

ज्ञान-प्राप्ति एवं सभी प्रकार की शिक्षा में बाधक पांच कारणों में क्रोध भी एक है। क्रोध के लिए कहा है कि मुनि कुछ कम एक करोड़ पूर्व काल में जितना चारित्र उपार्जित करता है उस समस्त चारित्र को वह क्रोधयुक्त बनकर एक मुहूर्त्त मात्र में नष्ट कर देता है। क्रोधी जमी हुई और बनी हुई बात को क्षण भर में बिगाड़ देता है। क्रोध के फलस्वरूप जीव कुरूप, सत्त्वहीन, अपयश का भागी और अनन्त जन्म-मरण करने वाला बन जाता है। इसलिए क्रोध हलाहल विष के समान है ऐसा जानकर सन्त कदापि क्रोध से संतप्त नहीं होते हैं। वे सदैव शांत एवं शीतल रहते हैं और दूसरों को भी शांत शीतल बनाते हैं।

भगवतीसूत्र शतक 1 उद्देशक 9 में भगवान् से प्रश्न किया गया कि जीव किस प्रकार गुरुत्व या भारीपन (कर्मों की उपेक्षा) को प्राप्त होता है तो प्रभु ने फरमाया कि पापों के सेवन से ही जीव गुरुत्व या भारीपन को प्राप्त करता है एवं

नीच गति में जाने योग्य कर्मों का उपार्जन करता है। पापों का सेवन करने से ही जीव संसार को बढ़ाते हैं एवं बारंबार भव-भ्रमण करते हैं। क्रोध की भी अठारह पापों में गिनती होने से यह भी आत्मा को भारी बनाता है एवं इसका त्याग करने से जीव हल्का होता है।

क्रोध उत्पत्ति के कारण :

क्रोध का मूल कारण यद्यपि व्यक्ति स्वयं होता है, किन्तु बाह्य निमित्तों के आधार पर क्रोध की उत्पत्ति को दृष्टिगत रखकर भी आगमों में विचार हुआ है। ठाणांग सूत्र के चौथे ठाणे के नौवें उद्देशक तथा पन्नवणा सूत्र के चौदहवें कषाय पद में क्रोध की उत्पत्ति के चार स्थान बताये हैं:

1. **क्षेत्र**- खेत व खुली जमीन के कारण।
2. **वास्तु**- मकान आदि के कारण।
3. शरीर के निमित्त से अथवा दास-दासी के कारण।
4. **उपधि**-उपकरणों या सामग्री के निमित्त से।

स्थानांग सूत्र के दशम स्थान में क्रोध की उत्पति के दस कारण बताये हैं -

1. उस अमुक पुरुष ने मेरे मनोज्ञ शब्द, स्पर्श, रस, रूप और गंध का अपहरण किया।
2. उस पुरुष ने मुझे अनमोज्ञ, शब्द, स्पर्श, रस और गंध प्राप्त कराए हैं।
3. वह पुरुष मेरे मनोज्ञ शब्द, स्पर्श, रस, रूप और गंध का अपहरण करता है।
4. वह पुरुष मुझे अमनोज्ञ शब्द, स्पर्श, रस, रूप और गंध को प्राप्त कराता है।
5. वह पुरुष मेरे मनोज्ञ शब्द, स्पर्श, रस, रूप और गंध का अपहरण करेगा।
6. वह पुरुष मुझे अमनोज्ञ शब्द, स्पर्श, रस, रूप और गंध प्राप्त कराएगा।
7. वह पुरुष मेरे मनोज्ञ शब्द, स्पर्श, रस, रूप और गंध का अपहरण करता था, अपहरण करता है और अपहरण करेगा।
8. उस पुरुष ने मुझे अमनोज्ञ शब्द, स्पर्श, रस, रूप और गंध प्राप्त कराए हैं प्राप्त कराता है और प्राप्त कराएगा।
9. उस पुरुष ने मेरे मनोज्ञ तथा अनमोज्ञ शब्द, स्पर्श, रस, रूप और गंध का अपहरण किया है, करता है और कराएगा।

10. मैं आचार्य और उपाध्याय के प्रति सम्यक् व्यवहार करता हूँ, परन्तु आचार्य और उपाध्याय मेरे साथ प्रतिकूल व्यवहार करते हैं।

क्रोध में व्यक्ति प्रायः निमित्त को दोष देता है, जबकि दोष तो स्वयं के कर्मों का ही है। क्रोध अज्ञान से ही पैदा होता है।

क्रोध को जीतने के उपाय :

1. क्रोध को जीतने का मुख्य उपाय क्षमा है।
2. क्रोध के समय यदि यह लगता है कि कोई तुम्हें दुःखी कर रहा है तो यह ध्यान करें कि वह दुःखी नहीं कर रहा है, दुःख का मूल कारण तो तुम्हारे स्व कृत कर्म ही हैं।
3. यदि कोई मर्म पीडक वचन कहे तो हमें विचार करना चाहिये कि यदि इसके वचन असत्य हैं तो क्रोध करने की आवश्यकता ही नहीं है, चूंकि उसकी बात ही झूठी है एवं यदि सत्य है तो स्वयं को सुधारने का प्रयत्न किया जाना चाहिए। मन में यह दृढ़ विचार हो कि सब कार्य अपने स्वयं के कर्मों के अधीन हैं, तो अनेक समस्याओं का समाधान हो जाता है।
4. क्रोधान्ध पुरुष माता, पिता, गुरु, मित्र, सहोदर और स्त्री की तथा अपनी स्वयं की भी निर्दयतापूर्वक घात कर देता है। उपकार करने वाले पुरुष पर उत्पन्न हुए क्रोध को रोकने का एक मात्र उपाय क्षमा है, दूसरी कोई विधि नहीं है।
5. जब क्रोध उत्पन्न हो तो ऐसा विचार करना चाहिये कि यह कटुक वचन इस बात की कसौटी है कि हमारे अंतःकरण में क्षमा है या नहीं। कसौटी पर चढ़ाने से ही खरे सोने का पता चलता है, इसी प्रकार कटुक वचन की कसौटी पर ही क्षमा की परीक्षा होती है।
6. क्रोध को जीतने का सरल उपाय क्षमा ही है एवं इसीलिए दस प्रकार के यतिधर्म में भी क्षमा को ही सर्वप्रथम स्थान दिया गया है।

क्रोध को जीतने से लाभ :

उत्तराध्ययन सूत्र के 29 वें अध्ययन में प्रभु से गौतम ने पूछा कि भगवन् क्रोध को जीतने से जीव को क्या लाभ होता है? इसके उत्तर में प्रभु ने फरमाया कि क्रोध को जीतने से जीव को क्षमाभाव प्राप्त होता है और क्रोध के रूप में वेदे

जाने वाले पूर्व संचित कर्मों को वह नष्ट कर देता है। कषाय जिसमें क्रोध भी शामिल है, को छोड़ने से जीव वीतरागता को प्राप्त होता है एवं वीतराग भाव को प्राप्त हुआ जीव सुख-दुःख में समभाव रखने वाला होता है।

इस प्रकार क्रोध को जीतने से जीव इस भव में भी सुखी होता है एवं पर भव में भी सुखी होता है, क्रोध-विजय से संचित कर्मों की निर्जरा होती है।

-प्रथम तल, 66, पंचशील मार्ग, टाउन हॉल के निकट,
उदयपुर-313001 (राज.)

भजन

मेरे अन्तर भया प्रकाश

(आचार्य हस्ती द्वारा रचित आध्यात्मिक भजन)

मेरे अंतर भया प्रकाश, नहीं अब मुझे किसी की आश।।टेर।।
काल अनंत रुला भव-वन में, बँधा मोह के पाश।
काम-क्रोध-मद-लोभ भाव से, बना जगत का दास।।
।। मेरे अंतर ।।1।।
तन-धन-परिजन सब ही पर हैं, पर की आश निराश।
पुद्गल को अपनाकर मैंने, किया सत्त्व का नाश।।
।। मेरे अंतर ।।2।।
रोग-शोक नहीं मुझको देते, जरा मात्र भी त्रास।
सदा शांतिमय मैं हूँ, मेरा अचल रूप है खास।।
।। मेरे अंतर ।।3।।
इस जग की ममता ने मुझको, डाला गर्भावास।
अस्थि-मांस-अशुचि देह में, मेरा हुआ निवास।।
।। मेरे अंतर ।।4।।
ममता से संताप उठाया, आज हुआ विश्वास।
भेद-ज्ञान की पैनी धार से, काट दिया वह पाश।।
।। मेरे अंतर ।।5।।
मोह-मिथ्यात्व की गाँठ गले तब, होवे ज्ञान प्रकाश।
'गजेन्द्र' देखे अलख रूप को, फिर न किसी की आश।।
।। मेरे अंतर ।।6।।

मुक्तक

सामायिक-साधना

श्री मगनचन्द जैन

(1)

सामायिक जीवन ज्योति है, मिथ्यात्व-तिमिर हटाती है।
जीवन के सूखे पतझड़ में, आध्यात्मिक रस सरसाती है।।

(2)

विषमता से समता में प्रवेश दिलाती है,
वैचारिक द्वन्द्वों का शमन करती है।
उन्मार्ग पर जाते हुए मानव को,
सुमार्ग पर लाने का प्रयत्न करती है।।

(3)

व्यक्ति को स्वदोष-दर्शन का अवसर देती है,
अन्तर-विचारों से लड़ने का साहस प्रकटाती है।
अज्ञान के निविड तिमिर को दूर कर,
समता, शान्ति का अजस्र झरना बहाती है।।

(4)

आत्मा पर पड़े हुए आवरण को दूर करती है,
स्वयं को समझने, परखने का संदेश देती है।
निर्मल विचारों की पावन गंगा बहाकर,
व्यक्ति को मुक्ति-पथ पर आगे बढाती है।।

(5)

सामायिक स्वाध्याय का संग चाहती है,
ज्ञान-क्रिया के मेल से लक्ष्य तक पहुँचाती है।
जो भी शुद्ध सामायिक करने का अभ्यास करता है,
उसको जीवन में अलौकिक आनन्द मिलता है।।

-सेवानिवृत्त अध्यापक, ग्राम-फाजिलाबाद (हिण्डौन) करौली (राज.)

प्रासङ्गिक

कार्यकर्ताओं का मूल्यांकन

डॉ. दिलीप धींग

सामुदायिक और सांस्थानिक उद्देश्यों की पूर्ति तथा लक्ष्यों की प्राप्ति में अनेक व्यक्तियों और घटकों का योगदान होता है। सबके योगदान का अपना-अपना महत्त्व होता है। इस योगदान में बुनियादी योगदान यदि किसी का रहता है तो वह है- कार्यकर्ता। कार्यकर्ता यानी कार्य करने वाला। कार्यकर्ता के लिए एक और शब्द का प्रयोग किया जाता है, वह है- स्वयंसेवक (Volunteer) प्रशस्त भावानाओं से अनुप्रेरित होकर जो स्वयं ही अपनी इच्छा से, स्वेच्छा से किसी सामूहिक उद्देश्य के लिए अपनी सेवाएँ प्रदान करे, वह स्वयंसेवक है। निश्चित ही, ये कार्य और सेवाएँ बिना किसी प्रत्यक्ष लाभ अथवा प्रतिफल के प्रदान की जाती हैं। लेकिन इन सेवाओं के परोक्ष लाभ का मुद्रा में अंकन संभव नहीं है। इनका सामाजिक मूल्य अत्यधिक होता है। जैसे व्यक्तिगत जीवन में योग का महत्त्व है, वैसे ही सामाजिक जीवन में सहयोग का महत्त्व है।

कोई बड़ा आयोजन हो या कोई अभियान या आन्दोलन, इन्हें सफल बनाने में कार्यकर्ताओं की अहम् भूमिका होती है। व्यक्ति के आत्मकेन्द्रित होने से और धन को अधिक महत्त्व मिलने से समाज में कार्यकर्ताओं का निरन्तर अभाव होता जा रहा है। इस बीच, कुछ व्यक्ति निष्ठा से निरन्तर कार्य करते हैं। प्रायः यह देखा गया है कि कुछ का मूल्यांकन हो जाता है, लेकिन अधिकांश निष्ठावान कार्यकर्ता प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से उपेक्षित रह जाते हैं। हालांकि समर्पित होकर कार्य करना अपने आप में एक आत्म-संतोष का विषय होता है और सच्चे कार्यकर्ताओं को निरपेक्ष भाव से अच्छे कार्य करने में सदैव तत्पर रहना चाहिये।

चहुँ ओर बाजारवाद का प्रभाव इतना छा गया है कि आज हर चीज बिक रही है और खरीदी जा रही है। इससे कई महत्त्वपूर्ण चीजों के साथ जुड़ी भावनाएँ समाप्त हो रही हैं और उनका असली प्रभाव क्षीण हो रहा है।

सामाजिक-धार्मिक कार्यों में हर व्यक्ति को अपनी सामर्थ्य व योग्यता के अनुसार कार्य करना चाहिये। ऐसे मामलों में कार्य के लिए किसी के कहने और नहीं कहने का इतना महत्त्व नहीं है, जितना कार्य करने का। समाज बड़ा होता है और कार्य भी बहुत होते हैं। एक ही व्यक्ति या कुछ व्यक्ति ही सब कार्य भलीभाँति नहीं कर सकते हैं।

अष्टम अंग आगम अन्तकृतदशा सूत्र का प्रसिद्ध प्रेरक प्रसंग है। वासुदेव कृष्ण, तीर्थंकर अरिष्टनेमी के दर्शनार्थ जा रहे थे। उनके साथ सैकड़ों व्यक्ति थे। मार्ग में उन्होंने देखा कि एक वृद्ध व्यक्ति ईंटों के एक ढेर में से एक-एक ईंट उठाकर उसे अपने बाड़े में रख रहा था। वृद्ध व्यक्ति की मदद की भावना से श्री कृष्ण ने भी एक ईंट उठाकर उसे निर्दिष्ट स्थान पर रख दिया। वासुदेव कृष्ण द्वारा ऐसा करते हुए देखकर उनके साथ चल रहे सैकड़ों व्यक्तियों ने भी वैसा ही किया। फलस्वरूप देखते ही देखते ईंटों का पूरा ढेर वृद्ध के बाड़े के अन्दर रख दिया गया। इस घटना से कई प्रेरणाएँ मिलती हैं। सामूहिक कार्यों में हर व्यक्ति को अपने हिस्से की ईंट अवश्य उठानी चाहिये। ऐसा करने से बिना अतिरिक्त श्रम व समय के बड़े-बड़े कार्य सहजता व सरलता से हो जाते हैं।

अवसर के अनुसार नेतृत्वकर्ताओं, पदाधिकारियों एवं प्रभावशाली व्यक्तियों को भी कार्यकर्ता बनकर कार्य करने का आनन्द लेना चाहिये। ऐसा करने से साधारण सदस्य और अन्य व्यक्ति भी आसानी से उनका अनुसरण कर लेते हैं। लेकिन हर व्यक्ति की अपनी सीमा, सामर्थ्य और मर्यादा होती है। सच्चे कार्यकर्ता को औरों से कोई आशा रखे बगैर अपना कार्य निष्ठापूर्वक करना चाहिये। कार्यकर्ता को उदात्त भावना के साथ अपने अनमोल समय एवं श्रम का नियोजन करना होता है। जैसे धन-दान का अपना महत्त्व होता है, वैसे ही समय-दान तथा श्रम-दान का भी महत्त्व होता है। निश्चित ही जैसे धन दान करने वालों का मूल्यांकन किया जाता है, वैसे ही समर्पित भाव से समय व श्रम देने वालों का मूल्यांकन भी होना चाहिये।

पिछले कुछ वर्षों में समाज का परिदृश्य तेजी से बदल रहा है। कुछ परिवर्तन ठीक हो रहे हैं तो कुछ चिन्ताजनक। चिन्ताजनक यह है कि इन परिवर्तनों में कार्यकर्ता गायब हैं। कुछ कार्य अर्थ या अनुबन्ध से करवाए या

किये जा सकते हैं, लेकिन सब कार्य धन से नहीं किये या करवाए जा सकते हैं। बेहतर निष्पादन के लिए अपना कार्य अपने को ही करना पड़ता है। सामाजिक प्राणी होने के नाते हमें समाज और परमार्थ के कार्यों को भी 'अपना' मान कर करना चाहिये। क्रमबद्ध व समयबद्ध रूप में लक्ष्य प्राप्त करने के लिए कार्यों का समुचित विभाजन, कार्यों में समन्वय तथा कार्यकताओं में पारस्परिक तालमेल अत्यन्त जरूरी है।

समाज के अनेक प्रकार के श्रेष्ठ कार्यों के सम्पन्न होने में कार्यकर्ताओं का सहयोग अपेक्षित रहता है। इस अपेक्षा और आवश्यकता को पूरा करने के लिए लोगों में कार्य करने की भावनाएँ जगाना बहुत जरूरी है। इससे कार्यकर्ता तैयार होंगे। जितने अधिक कार्यकर्ता होंगे, हमारे कितने ही कार्य हल्के हो जाएँगे तथा आधे-अधूरे कार्य भी शीघ्रता से पूरे होंगे। अहिंसा, शाकाहार और समाज के कार्य करते समय मेरा यह अनुभव रहा है कि कई लोगों में टालने की वृत्ति होती है। वे परमार्थ के कार्यों को उपेक्षित करने में माहिर होते हैं। जबकि पद, नाम, मंच, माला, माइक, फोटो आदि में वे सबसे आगे खड़े दिखाई देते हैं। गहराई से देखा जाए तो काम, नाम चाहने वाले व्यक्ति न तो अपना, और न समाज का कोई स्थायी हित कर पाते हैं। उनकी मिथ्या लालसाएँ समाज में कई अव्यवस्थाओं को जन्म देती हैं। सच्चे कार्यकर्ता को काम में विश्वास करना चाहिये। काम होने पर नाम तो हो ही जाएगा। काम के साथ नाम की स्वाभाविक इच्छा उचित है, लेकिन सबसे महत्त्वपूर्ण काम का उद्देश्य है। किसी कार्य के सुचारु रूप से सम्पन्न हो जाने पर उससे जुड़े हर कार्यकर्ता को जो सन्तुष्टि मिलती है, वह अवर्णनीय होती है।

कार्यकर्ताओं का अभाव इसलिए भी है कि सामाजिक कार्यों में युवा वर्ग की भागीदारी कम हुई है। समर्पित, ऊर्जावान साधारण कार्यकर्ताओं की टीम अनेक असाधारण कार्य करने की क्षमता रखती है। सामाजिक/पारमार्थिक कार्यों को करना भी एक प्रकार की आराधना या तपस्या है। कार्यकर्ता को स्मरण रखना चाहिये कि कोई कार्य छोटा या बड़ा नहीं होता है; न ही किसी कार्य के करने से कोई व्यक्ति छोटा या बड़ा हो जाता है। एक अहिंसा कार्यकर्ता ने मुझे दूरभाष पर बताया कि पयुर्षण के दिनों में वह तपस्या तो नहीं कर सका,

लेकिन सरकार द्वारा घोषित अगताओं के समुचित अनुपालन करवाने में उसने विधिसम्मत प्रयास किया और सफलता प्राप्त की। मैंने उसे धन्यवाद पत्र लिखा तो वह बाग-बाग हो गया।

वस्तुतः आज एक ओर कर्मठ व अनुशासित कार्यकर्ताओं की बड़ी आवश्यकता है, दूसरी ओर श्रेष्ठ कार्यकर्ताओं को विविध उपायों से प्रोत्साहित करने की भी बहुत आवश्यकता है। कार्यकर्ताओं की निष्ठा और संख्या में वृद्धि करने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करना बहुत जरूरी है। आचार्य हस्ती ने कहा था- "आज के समाज को धन-जन की कमी नहीं, कमी है तो सेवाभावी कार्यकर्ता की। सेवाभाव से समय देने वाला अर्थदाता से भी अधिक सम्मान योग्य होता है, यह समझकर समाज कार्यकर्ताओं का सम्मान करे, उन्हें प्रोत्साहित करे; और कार्यकर्ता भी मातृ-पितृ सेवा की तरह समाज सेवा को अपना कर्तव्य समझकर करें। धन-जन व बुद्धि सम्पन्न होकर भी जैन समाज योग्य कार्यकर्ताओं के अभाव में सम्यक् ज्ञान और सदाचरण का प्रचार-प्रसार नहीं कर पा रहा है।"* तो आइये, समष्टि के हित के लिए हम कुछ सच्चा-अच्छा करने का संकल्प करें और अपने संकल्प को मूर्त रूप देने के लिए सदैव तत्पर रहें।

---

* नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं पृ. 365-366

-बम्बोरा-313706, उदयपुर (राज.)

वेदना से मुक्ति

वेदना कब दूर होगी, यह चिन्तन आर्त है। जब व्यक्ति इसी में एकाग्र हो जाता है तब वह आर्तध्यान कहलाता है। वेदना कर्मों के कर्ज को चुकाने के लिए आती है, वेदना शरीर की आसक्ति तोड़ने के लिए आती है। वेदना मोह के बंधन समाप्त करने के लिए आती है, अर्थात् वेदना जीव के लिए परम हितकारी है। जहाँ वेदना नहीं वहाँ भोग भूमि में जीवत्व का विकास संभव ही नहीं। अतः सुन्दर अवसर का सुदपयोग करना प्रत्येक साधक के लिए अनिवार्य है। जागरण की वेला का सदुपयोग कर साधक वेदना के मूल कर्मों को ही समाप्त कर परम सुखी बन जाता है।

-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. के उद्बोधन से संकलित

Tattva bodha

TRANSGRESSIONS OF THE TWELVE *VRATAS* (VOWS)

Dr. Priyadarsna Jain

A.FIVE *ANUVRATAS* OR PRIMARY VOWS

(iv) *Brahmacaryāṇuvrata* – Partial Vow of Celibacy

Transgressions of the fourth *Brahmacarya Aṇuvrata*

TEXT	TRANSLATION
(i) ***Ittariya pariggahiyāgamaṇe***-	Having extra marital affairs
(ii) ***Apariggahiyāgamaṇe***-	Inclination for pleasures before marriage
(iii) ***Anaṅgakridā***-	Illegitimate sex
(iv) ***Paravivāhakaraṇe***-	Arranging disadvantageous marriages
(v) ***Kāmabhogativvābhilāse***-	Excessive inclination for enjoyment of sensual pleasures

Meaning

Brahmacarya or celibacy is the fourth vow. Through this vow the laity vows to be contented with his spouse and renounces all pre and extra-marital affairs. He refrains from all illegitimate relations and does not fall prey to sexual cravings related to celestial beings, animals or humans. The above five transgressions if broken, then the lay aspirant expiates for the same through this ***sūtra***.

Explanation

Before we analyze the significance of this vow let us first analyze the term ***Brahmacarya-Brahma*** means ***Ātman, Vidyā*** and ***Vīrya. Caryā*** means ***Ramaṇa, Adhyayana and***

Rakṣaṇa, thus ***Brahmacarya*** means ***Ātmaramaṇa, Vidyā Adhyayana*** and ***Vīrya Rakṣaṇa***. One who seeks freedom from the cycle of births and deaths, dives deep into the spiritual realm and learns the art of ***Ātmaramaṇa*** i.e. being absorbed in the contemplation of the self. The ***Ātman*** cannot be apprehended through senses and mind, intellect or worldly information, but one has to search the right ***Guru***, surrender at his feet and acquire the scriptural knowledge to know the 'self'. This is termed as ***Vidyā Adhyayana*** or scriptural study, while doing so he taps his hidden potential and does not waste it in ephemeral mundane craving and this is ***Vīrya Rakṣaṇa*** i.e. protection of one's energy. ***Brahmacarya*** signifies purity of mind, body and soul. Of the four ***Āsrama*** of the Hindus it is an important one. This vow of ***Brahmacarya*** is a solution to gender inequality, all emotional atrocities on women, diseases like AIDS, etc. The ***Uttarādhyayana Sūtra*** 32.18 says that one who has overcome sensual cravings, can overcome all other sensual pleasures as easily as a person who has crossed the mighty ocean, will not find difficulty in crossing the river like Ganges. The vow of ***Brahmacarya*** was given by ***Mahāvīra*** to prevent the abuse of women so that they are not treated as commodities. Practice of celibacy is practice of non-violence for indulgence in sexual and sensual passions brings about violence says the ***Purusārtha Siddhyupāya***.

The vow of celibacy is for purification of the self as well as to maintain a social order. An ascetic practises it completely whereas a householder is expected to be contented with one's spouse and not indulge in lustful acts with other. Transgression of this vow is the root cause of lust, hatred, discontentment, social catastrophe, individual crisis and the disturbance of the serenity of the soul. The exploiting attitude of man has resulted in flesh trade, sexual harrasment of children, child abuse as that of innocent women,

homosexuality, diseases like AIDS etc. The above five transgressions are given up completely by an aspirant desirous of purification and perfection. The practice of this great vow makes one worthy due to the spiritual, moral and social significance attached to this vow.

The ***Aṇuvratas*** are propounded by the great ***Tīrthankara Arhat*** and they are like check posts dealing with different aspects of an individual's life, checking the influx of sin and disorder in society and environment at large. Man is born free, but he ought to master the life-skills to lead a meaningful life. Again we ought to remind ourselves that might is right only in the animal kingdom but in the human kingdom right alone is mighty. Hence one ought to conquer his animal instincts of lust and greed and be human in the right sense of the term.

(v) *Parigraha Parimāṇāṇuvrata* – Partial vow of Non-possession

Transgressions of the fifth *Parigrahaparimāṇa Aṇuvrata*

TEXT	TRANSLATION
(I) ***Khettavatthuppamāṇāikkame-***	Excessive greed for land and things
(ii) ***Hiraṇṇasuvaṇṇappamāṇāikkame-***	Excessive greed for silver and gold
(iii) ***Dhanadhānyappamāṇāikkame-***	Excessive greed for wealth and grains
(iv) ***Duppayacauppayappamāṇāikkame-***	Having immense-number of servants and animals
(v) ***Kuviyappamāṇāikkame-***	Excessive greedfor other things

Meaning

Parigraha means possession and ***parimana*** means limitations, through this vow an aspirant tries to check his

desire for possessions and works towards conquering attachment. Through this vow the laity limits his material possessions of lands, houses, gold, silver, wealth, grains, cattle, servants and other movable and immovable property. If he has transgressed the limitations he expiates for the same through this ***sūtra***.

Explanation

The ***Tattvārtha Sūtra*** 7.17 reveals that attachment to possessions is '***parigraha***'. One may possess nothing but still he may be attached, and another person may possess so much but still he may be detached. It is not the thing that binds a person but his infatuation, liking or attachment to it that causes the bondage as well the karmic influx. Desires are as endless as the sky and even if the whole world full of wealth is given to one person, it will not satisfy him. Refraining from attachment to possession is ***Aparigraha*** and is one of the three important principles of ***Jainism***, the other two being ***Ahimsā*** and ***Anekānta. Parigraha*** is attachment and possession as well and, ***Aparigraha*** is detachment and non-possession. One who claims to be detached will not possess anything and one who possesses something can never claim to have conquered attachment.

Parigraha or possessions are of two types viz. external and internal. The external possessions are the external things one possesses and hoards and the internal possessions are the inner inclinations and emotions in the form of four fold passions, nine-fold quasi passions and perverse attitude. The inner feelings of greed etc are the root cause of sin and evil as well as the accumulation of external possessions. This desire for possession and clinging to material comforts and luxuries has motivated man to exploit other men as well as the environment at large. One who possesses the most is considered advanced in the material

world, but in the spiritual realm one whose needs nothing and is of a detached spirit, is considered as truly wise and advanced. When one nourishes attachment to objects, he remains restless as long as he does not posses them, and once he has possessed them, he becomes deluded and craves for more. In either case he cannot be at peace, hence the wise conquers all attachment and renounces all possessions and live happily.

A beggar and an ascetic, both do not possess anything, but a beggar will enjoy the pleasures and things if he gets them but an ascetic will never fall prey to the alluring pleasures and material objects at any cost, instead he seeks the eternal wealth of spirituality in contentment, equanimity, forgiveness, discipline, compassion, and other virtues which are the true wealth of the soul. Hence the true ascetics, ***riṣis, munis, sādhus, yogīs*** are venerated all over, not to comment on the pseudo ascetics and yogis who cheat themselves and the innocent people and invite dreadful ***karma***.

This vow of limited possessions is a solution to unequal distribution of resources, economic and social inequality and above all poverty. One who has taken this vow takes care not to fall prey to the evils of globalization. He refrains from hoarding, exploiting animals, humans and the natural resources, excessive accumulation, etc. on the other hand he supports and promotes sustainable development at all levels. What ever he does will be measured and whatever he uses will be wisely used and moreover he exercises restraint at all levels and at all places to save himself from sin and the earth from environmental degradation and global warming. One who follows the vows partially is a citizen of the earth and a son of the soil and Mother Nature. Such a person shall be rewarded in this life and the next reveal the ***Jaina āgamas***.

(Continue..)

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः 53)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

(कषाय समुद्घात)

श्री धर्मचन्द जैन

जिज्ञासा- कषाय समुद्घात किसे कहते हैं?

समाधान- तीव्र क्रोध आदि कषायों के द्वारा आत्म-प्रदेशों में स्पन्दन होकर कुछ आत्म-प्रदेशों का शरीर अवगाहना से बाहर आ जाना कषाय समुद्घात कहलाता है। अर्थात् क्रोधादि कषायों के साथ एकाकार होकर तत्-तत् सम्बन्धी कषाय मोहनीय के पुद्गलों की तीव्रता से घात करना कषाय समुद्घात है।

जिज्ञासा- क्या चारों कषायों का समुद्घात एक साथ हो सकता है?

समाधान- पाँचवें कर्मग्रन्थ में जहाँ कर्मप्रकृतियों के प्रकृति बन्ध में अनेक प्रकार से भेद किये हैं, वहाँ चारों कषायों को अध्रुव उदय में लिया गया है। अर्थात् क्रोध, मान, माया व लोभ इन चारों कषायों का एक जीव में एक साथ उदय नहीं हो सकता है। एक बार में इनमें से कोई भी एक कषाय ही उदय में आती है। जिस कषाय का उदय है, उसी का समुद्घात हो सकता है। अतः स्पष्ट है कि एक जीव में एक साथ चारों कषायों का समुद्घात नहीं हो सकता।

जिज्ञासा- कषाय समुद्घात में किन पुद्गलों की निर्जरा होती है?

समाधान- कषाय समुद्घात में क्रोधादि चारों कषायों में से जिसका समुद्घात किया जा रहा है, उस समय में उस कषाय से सम्बन्धित कर्म पुद्गलों की अत्यधिक निर्जरा होती है। जैसे कोई जीव क्रोध कषाय का समुद्घात कर रहा है तो उस समय में क्रोध मोहनीय कर्म के पुद्गलों की अत्यधिक निर्जरा होगी। जब मान आदि का समुद्घात करेगा तो उस समय मान आदि कर्म पुद्गलों की निर्जरा होगी।

जिज्ञासा– कषाय समुद्घात कौन कर सकता है?

समाधान– पहले से लेकर छठे गुणस्थान तक के जीव कषाय समुद्घात कर सकते हैं। यद्यपि कषायों का उदय दसवें गुणस्थान तक होता है, किन्तु सातवें से दसवें गुणस्थान में अप्रमत्तता होने के कारण उनमें कषाय समुद्घात नहीं होता है।

कषाय समुद्घात अभवी-भवी, मिथ्यादृष्टि-सम्यग्दृष्टि, कृष्णपक्षी-शुक्लपक्षी, सूक्ष्म-बादर, त्रस-स्थावर, अपर्याप्त-पर्याप्त कोई भी जीव कर सकता है।

जिज्ञासा– कषाय समुद्घात जीव कितनी बार कर सकता है?

समाधान– कषाय समुद्घात चारों गति के जीव कर सकते हैं। जिस गति-जाति में जीव की आयु संख्यात काल की है, वहाँ एक भव में जीव संख्यात बार कषाय समुद्घात कर सकता है। असंख्यात काल की आयु (पल्योपम-सागरोपम) होने पर असंख्यात बार कषाय समुद्घात एक भव में किया जा सकता है। अनन्त काल की एक भव की स्थिति किसी भी जीव की नहीं होती, अतः कोई भी जीव एक भव में अनन्त बार कषाय समुद्घात नहीं कर सकता। हाँ, इतना अवश्य है कि अनन्त भवों में मिलाकर एक जीव अनन्त बार कषाय समुद्घात कर सकता है।

जिज्ञासा– कषाय समुद्घात की स्थिति कितनी होती है?

समाधान– यद्यपि प्रज्ञापना सूत्र के 36वें पद में कषाय समुद्घात की स्थिति असंख्यात समय के अन्तर्मुहूर्त प्रमाण बतलायी गई है। तथापि वह कथन सामान्य अपेक्षा से समझना चाहिए। क्योंकि भगवती सूत्र आदि में कषाय समुद्घात की जघन्य स्थिति एक समय भी बतलायी है। जैसे किसी जीव ने कषाय समुद्घात प्रारम्भ किया, उसी समय आयु पूरी हो गयी तो वह काल कर सकता है, अतः काल करने की अपेक्षा एक समय तथा सामान्य परिस्थितियों में अन्तर्मुहूर्त की स्थिति समझना चाहिए।

जिज्ञासा– कषाय समुद्घात को किस प्रकार समझा जा सकता है?

समाधान- जब कोई जीव क्रोधादि की तीव्रता से युक्त होता है। अर्थात् क्रोध समुद्घात में आँखें लाल हो जाना, भृकुटी टेढ़ी हो जाना, जोर-जोर से अपशब्दों का प्रयोग करना, होठ फड़फड़ाना आदि रूप में तीव्र क्रोध का उदय होता है।

जब कोई व्यक्ति मद में चूर होकर, अकड़कर चलता है, उसकी बाहर की प्रवृति में अभिमान झलकता है, तब मान समुद्घात, तीव्र व गूढ मायावृत्ति होने पर माया समुद्घात तथा लालची प्रवृत्ति, तीव्र-आसक्ति व मूर्च्छापूर्वक प्रवृत्त होने पर लोभ समुद्घात होता है।

ये बाह्य लक्षण स्थूल दृष्टि से, व्यवहार नय की अपेक्षा से समझने चाहिए। ये लक्षण सन्नी मनुष्यों में कदाचित् दिखाई दे सकते हैं। एकेन्द्रियादि असन्नी जीवों में स्पष्ट लक्षण जानना अत्यन्त कठिन है। अतः यह कहा जा सकता है कि जब जीव क्रोधादि कषायों के उदय में एकाकार होकर प्रबलता से पूर्वबद्ध कषायमोहनीय को उदय में लाकर निर्जरित् कर देता है, तब उसमें कषाय समुद्घात होती है। उस कषाय समुद्घात में जीव जितना विषमता में रहता है उतना ही नया बन्ध भी कर लेता है। जितने अंशों में समता रहती है, उतने अंशों में नया बन्ध कम करता है।

जिज्ञासा- नया बन्ध कम-अधिक करने को कैसे समझा जाय?

समाधान- जैसे तीव्र संक्लेश युक्त मिथ्यादृष्टि जीव यदि कषाय समुद्घात करता है तो उसके कषाय मोहनीय कर्म का नया बन्ध अधिक होगा। जबकि सम्यग्दृष्टि जीव कषाय समुद्घात करता है तो उसमें अविरति सम्यग्दृष्टि के कम, देशविरति के उससे कम तथा प्रमत्त सर्वविरति के उससे भी कम कषाय मोहनीय का नया बन्ध होगा।

कषाय ही संसार में भटकाने-अटकाने वाले हैं, जन्म-मरण रूपी विष वृक्ष का सिंचन करने वाले हैं, अतः कषायों को छोड़कर अकषायी बनने में ही जीवन की सार्थकता है।

-रजिस्ट्रार- अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राज.)

विशिष्ट प्रश्नोत्तर

दशवैकालिक सूत्र से पायें तात्त्विक बोध (5)

प्रश्न 6. दशवैकालिक सूत्र के अध्ययनों के शीर्षकों के क्या भाव हैं?

उत्तर : (नवम्बर अंक से आगे)

पञ्चम अध्ययन– *पिण्डैषणा*- अर्थात् आहार की एषणा। 'एषणा' शब्द यों तो इच्छा या तृष्णा अर्थ में प्रचलित है, जैसे- पुत्रैषणा, वित्तैषणा आदि। परन्तु यहाँ यह शब्द जैन पारिभाषिक होने से इच्छा या तृष्णा अर्थ में प्रयुक्त न होकर दोष-अदोष के अन्वेषण-निरीक्षण या शोध अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। 'एषणा' शब्द के अन्तर्गत गवेषणा (आहार के शुद्धाशुद्ध होने की अन्वेषणा, जाँच-पड़ताल), ग्रहणैषणा (आहार ग्रहण करते समय लगने वाले दोष-अदोष का निरीक्षण) और परिभोगैषणा (भिक्षा में प्राप्त आहार का सेवन करते समय लगने वाले दोष-अदोष का विचार), इन तीनों का समावेश हो जाता है। इन तीनों दृष्टियों से पिण्ड की एषणा का वर्णन होने से इस अध्ययन का नाम पिण्डैषणा रखा गया है। इस शीर्षक का यही भाव है कि साधक को केवल जीने के लिए नहीं खाना है, किन्तु लक्ष्य को पूर्णतः पालने के लिए जीवन यात्रा का निर्वाह करना है। अतः उसका आहार स्वभाव से सात्त्विक और सुपाच्य हो तथा उसकी प्राप्ति में किसी का अहित न हो। साथ ही औदारिक शरीर के पोषण में कार्मण शरीर का पोषण न हो जाए, इसकी सतत सावधानी रखनी चाहिए। जिनशासन में वही आहार अनुमत है जिससे औदारिक शरीर का पोषण होता हो और कार्मण-शरीर का शोषण होता हो। कार्मण शरीर का पोषण करने की भगवान की आज्ञा नहीं है।

छठा अध्ययन– *धर्मार्थ काम*- अर्थात् धर्म के अर्थ की कामना। श्रुत चारित्र रूप धर्म का अर्थ या प्रयोजन भूत जो मोक्ष है एक मात्र उसी की कामना, अभिलाषा करने वाले मुमुक्षु साधक का वर्णन इस अध्ययन का दूसरा नाम है- महाचार कथा अर्थात् उन्हीं मुमुक्षु

साधकों के महान् आचार का कथन। दोनों नामों का संयुक्त अर्थ है- धर्म के लक्ष्य रूप मोक्ष के इच्छुक साधकों के आचार का कथन। पूर्ण त्याग-मार्ग की साधना करने वाले साधु-साध्वियों के आचार का कथन। पूर्ण त्याग-मार्ग की साधना करने वाले साधु-साध्वियों के त्याग रूपी प्रासाद का प्रमुख स्तम्भ है आचार। ज्ञानियों ने चार प्रकार का पुरुषार्थ बताया- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। आध्यात्मिक दृष्टि से परीषहों में अडिग रहना अनाचारों में प्रवृत्त न होना ही प्रथम प्रबल पुरुषार्थ है। उदय में आने वाले मोह के भावों को धोते जाना, क्षय करते जाना, यह द्वितीय पुरुषार्थ है और तृतीय पुरुषार्थ है- इन्द्रियों पर जय पाना। तभी साधक मोक्ष रूप परम पुरुषार्थ को उपलब्ध हो सकता है- यही इस अध्ययन के शीर्षक का भाव है।

सप्तम अध्ययन- *वाक्य शुद्धि*- अर्थात् वाक्य की शुद्धता। वाक्य-शुद्धि का अर्थ व्याकरण की दृष्टि से वाक्य की शुद्धता नहीं, किन्तु निर्ग्रंथ श्रमण के आचार के अनुसार वाक् अर्थात् वाणी की शुद्धि है। साधु का पद बहुत ऊँचा है। उसके द्वारा सत्य महाव्रत स्वीकार किया गया है, अतः उसकी भाषा शुद्ध एवं विवेक युक्त होनी चाहिए। अविवेक पूर्वक बोली गई सत्य-भाषा भी वाणी की अशुद्धता है। जिस वध-कारक या पर-पीड़ाकारी भाषा से कर्म परमाणुओं का प्रवाह आये, ऐसी भाषा बाहर से सत्य प्रतीत होते हुए भी अवक्तव्य है। एक तरह से वह असत्य सम है। वाणी अन्तः के भावों को व्यक्त करने का साधन है। यह पुण्य है तो पाप भी है। नौ प्रकार के पुण्यों में वचन भी एक पुण्य है, तो अठारह पापों में से अधिकांश पाप वचन से सम्बन्धित हैं। अतः किसी प्रयोजन या कारण के बिना वाणी का उपयोग करना वाचालता है, वाणी का दुरुपयोग है और पाप कर्म-बंध का कारण है। अतः साधक को हमेशा अवसर देखकर हित-मित-परिमित निर्वद्य बोलना चाहिए। तभी वाणी की शुद्धि कायम रह सकती है। यही इस अध्ययन के शीर्षक का भाव है।

अष्टम अध्ययन- *आचार-प्रणिधि*- अर्थात् आचार का

प्रणिधान। बंधी-बंधाई आचार संहिता पर चलना आसान है, किन्तु आचार की सरिता में अवगाहन करते समय, मन-वचन-काया एवं इन्द्रियों को एकाग्र करना बहुत मुश्किल है, क्योंकि कई बार साधक स्थूल-दृष्टि से आचार का पालन करते हुए भी अन्तरंग से आचार में निष्ठा, एकाग्रता या प्रवृत्ति नहीं कर पाता। जिस प्रकार उच्छृंखल घोड़े सारथी को उत्पथ पर ले जाते हैं, वैसे ही दुष्प्रणिहित (राग-द्वेषयुक्त) इन्द्रियाँ साधक को उत्पथ में भटका देती हैं। यह इन्द्रियों का दुष्प्रणिधान है। शब्दादि विषयों में इन्द्रियों का राग-द्वेष युक्त लगाव न होना अर्थात् समत्वयुक्त प्रवृत्ति होना, इन्द्रियों का सुप्रणिधान है। इसी प्रकार मन-वचन-काया की प्रवृत्ति में कषाय तथा राग-द्वेषादि को नहीं आने देना, प्रवृत्ति में निवृत्ति भाव रखना, योग सुप्रणिधान है। इस अध्ययन के शीर्षक का यही भाव है कि जिस प्रकार निधान (खजाने) में धन को सुरक्षित रखा जाता है- उसी प्रकार आचार रूपी धन को सुरक्षित रखने के लिए यह अध्ययन आचार की प्रकर्ष-निधि है। अतः प्रत्येक साधक को आचार में मन को सुप्रणिहित करना चाहिए। तभी वह साध्य से अभिन्न हो सकता है।

नवम अध्ययन- *विनय-समाधि*-अर्थात् विनय में समाधि। जिस प्रकार वृक्ष रथ आदि के निर्माण योग्य होता है, तथा सोना कड़ा, कुण्डल आदि बनाने के योग्य होता है, ठीक इसी प्रकार आत्मा भी विनय-धर्म से समाधि के योग्य होता है। विनय अर्थात् निर्ममता, *निष्कामतापूर्वक* किया गया समर्पण। गुणीजनों एवं गुरुजनों के महान् पवित्र गुणों के प्रति सहज प्रमोद-भाव एवं गुरु-शिष्य के बीच जो आत्मीयता का व्यवहार स्थापित करता है वह विनय है। विनयवान शिष्य को ही गुरु प्रसन्नता पूर्वक अपनी श्रुत सम्पदा एवं आचार सम्पदा प्रदान करते हैं। दशवैकालिक सूत्र(9/2/12) में "जे आयरिय उवज्झायाणं" से भी फलित होता है कि मोक्ष रूपी लक्ष्मी की प्राप्ति में विनय आलम्बन स्वरूप है।

दशम अध्ययन - *स-भिक्खू*- अर्थात् सच्चा भिक्षु या आदर्श

भिक्षु। जो भिक्षा पर अपना जीवन यापन करता है, वह भिक्षु कहलाता है, किन्तु इतने मात्र से वह आदर्श भिक्षु नहीं होता, क्योंकि इस अर्थ की परिधि में तो वे लोग भी आ जाते हैं, जो भीख माँग कर खाते हैं तथा अन्य मत के भिक्षु भी आ जाते हैं, जो अविरत हैं। सैद्धांतिक दृष्टि से उन्हें द्रव्य भिक्षु कहा जा सकता है, भाव भिक्षु नहीं। भाव-भिक्षु वह है, जो पूर्ण रूप से अहिंसक है, सचित्त-त्यागी है, तीन करण, तीन योग से सावद्य- प्रवृत्ति का परित्यागी है, विविध प्रकार के परीषहों और उपसर्गों से अपराजित, विशुद्ध चारित्र सम्पन्न तथा परदत्त भोजी है। प्रस्तुत अध्ययन में सद्भिक्षु के लक्षण वर्णन होने से इसका नाम 'सभिक्खू' रखा गया है। इस शीर्षक का यही भाव है कि जो साधक तीर्थंकरों के वचनों में समाहित चित्त हो, कषाय-विजयी हो, परिग्रह-वृत्ति तथा गृहस्थ-प्रपंचों से दूर हो, इन्द्रिय विजयी हो, संयम में ध्रुव-योगी एवं उपशांत हो, तपश्चरण एवं विविध-गुणों में रत हो, सर्वांग संयत हो, स्वधर्म में स्थिर हो, शाश्वत हित में सुस्थित तथा क्षुद्र हास्य चेष्टाओं से विरत हो, वही आदर्श भिक्षु हो सकता है।

प्रथम चूलिका - *रति वाक्या*- अर्थात् इन्द्रिय विषयों में चित्त की अभिरतता। असयंम में सहज आकर्षण होता है, परन्तु त्याग और संयम में सहज आकर्षण नहीं होता। इन्द्रियवासनाओं की परितृप्ति में जो सुखानुभूति प्रतीत होती है वह सुखानुभूति इन्द्रिय-विषयों के विरोध में नहीं होती। इसका मूल कारण है-चारित्रमोहनीय कर्म की प्रबलता। मोह एक भयंकर रोग के सदृश है, जो एक बार के उपचार से नहीं मिटता। उसके लिए सतत उपचार और सावधानी आवश्यक है। जरा सी असावधानी रोग को उभार देती है। मोह का उभार न हो और साधक मोह से विचलित न हो, संयम के प्रति रति उत्पन्न हो, इस दृष्टि से इस चूलिका का उपदेश हुआ है। आचार्य हरिभद्र ने लिखा है कि इस चूलिका में जो 18 स्थान प्रतिपादित हैं, वे उसी प्रकार हैं, जैसे-घोड़े के लिए लगाम, हाथी के लिए अंकुश तथा नौका के लिए

पताका। इस अध्ययन के वाक्य, साधक के अन्तर्मानस में संयम के प्रति रति समुत्पन्न करते हैं। जिसके कारण इस अध्ययन का शीर्षक 'रति वाक्या' रखा गया है। इसका भाव यही है कि साधक ने नरक के अतिदीर्घकालीन दुःखों को अनेक बार सहन किया है, किन्तु संयम जीवन में सहे जाने वाले दुःख अत्यल्प और अल्पावधि के हैं, भोग-पिपासा अशाश्वत है, इस प्रकार का चिन्तन करके अपने मन को संयम में स्थिर करे। शरीर भले ही छूट जाय, किन्तु लक्ष्य को प्राप्त करना ही है।

द्वितीय चूलिका– *विविक्त चर्या*- अर्थात् श्रमण-निर्ग्रंथ की चर्या। विविक्त के कई अर्थ हैं- पृथक्, विवेक युक्त, पवित्र, स्त्री-पशु-नपुंसक से असंसक्त, विजन (जनसंपर्क से शून्य), प्रच्छन्न (गुप्त) एकान्त आदि। चर्या का अर्थ है- आचरण, विचरण, व्यवहार, चारित्र, ज्ञानादि पंचविध आचार। इस प्रकार विविक्तचर्या शब्द के अनेक अर्थ हो जाते हैं। परन्तु इस अध्ययन का मुख्य प्रतिपाद्य विषय श्रमण निर्ग्रंथ चर्या है। इसमें श्रमण-निर्ग्रंथों की बाह्य और आन्तरिक दोनों प्रकार की चर्या का निरूपण किया गया है। इस चूलिका के शीर्षक का भाव यही है कि यह अति कठिन एवं दुष्कर होते हुए भी मुमुक्षुओं के लिए उपादेय है। प्रस्तुत अध्ययन में दो गाथाओं द्वारा विविक्तचर्या के आन्तरिक स्वरूप का प्ररूपण करते हुए कहा है कि अनुस्रोतगामी व्यक्ति विषय भोगों की ओर गति करते हैं, जबकि प्रति स्रोतगामी विषय भोगों से विरक्त होकर संयम , त्याग, तप, वैराग्य आदि की ओर गति करते हैं। अनुस्रोत-गमन संसार मार्ग है, जबकि प्रतिस्रोत-गमन मोक्ष मार्ग है। अनुस्रोत-गमन से निवृत्त होकर प्रतिस्रोत में गमन करना ही साधक की आन्तरिक विविक्तचर्या है। बाह्य विविक्तचर्या में आहार-विहार, निवास, स्वाध्याय, ध्यान, कायोत्सर्ग आदि प्रवृत्तियों में सांसारिकजनों की प्रवृत्तियों से पृथक् एकान्त आत्म-हितकारी, विवेकयुक्त तथा शास्त्रोक्त मार्ग-सम्मत चर्या का निर्देश किया है।

धारावाहिक (2)

धरोहर

श्रीमती पारसकंवर भण्डारी

प्रजावत्सल राजा जितशत्रु कौशाम्बी नगरी पर शासन करता था। इस नगरी में मधुर स्वभावी और कुशल व्यापारी सेठ धर्मदास अपने पाँच पुत्रों सहित निवास करता था। यहाँ गुणचन्द्र नाम का एक साधारण व्यक्ति भी रहता था, जो तीर्थयात्रा पर जाने का इच्छुक था। अतः वह अपने रत्नों की पोटली सुरक्षित रखने के लिए सेठ धर्मदास के समीप गया। सेठजी ने पहले तो लेने से इन्कार कर दिया, किन्तु गुणचन्द्र के बार-बार अनुनय-विनय करने पर उसे पोटली को भीतर के कमरे में रखने के लिए कह दिया। एक दिन सेठ के मन में आया कि वह उस पोटली को देखें और रत्नों की चमक देखकर मन में लालच आ गया। चार माह पश्चात् गुणचन्द्र लौटकर आया और अपनी पोटली माँगी तो सेठ ने साफ मना कर दिया। सबके सामने उसने अपना दुःख बताया, किन्तु किसी ने उस पर विश्वास नहीं किया उलटा उसे ही बुरा-भला कहते। इस तरह वह पागल हो गया और एक दिन मरकर सर्प योनि में उत्पन्न हो गया। इधर........

सेठजी के व्यापार में निरन्तर वृद्धि हो रही है। पाँचों पुत्र भी बड़े हो गये हैं। बड़े पुत्र की पढ़ाई पूरी हो गई हैं। यौवनावस्था को प्राप्त हुआ जानकर बड़े-बड़े घरों से रिश्ता आने लगा। हर एक की यही ख्वाईश थी कि हमारी लड़की सेठ धर्मदास के घर ब्याही जाए। सेठजी ने एक जगह रिश्ता तय कर लिया, और विवाह की तारीख भी पक्की हो गई। दोनों ओर खुशियाँ छा गई। विवाह की तैयारियाँ जोर-शोर से होने लगीं। बड़ी धूमधाम से विवाह सम्पन्न हुआ। दुल्हन ने ससुराल के आंगन में प्रवेश किया। दिन भर कार्यक्रम चलता रहा, लोग बधाइयाँ देने आते, सेठजी सब का आदर-सम्मान करते और मिठाइयों से मुँह मीठा करवाते। इस प्रकार उस दिन सूर्यास्त हो गया, पता ही नहीं चला और रात आ गई।

पहली सुहागरात थी, दुल्हन को सजाया गया, बहुमूल्य वस्त्र एवं आभूषण पहनाए गये। फूलों की सेज तैयार हुई, और बड़े अरमान से दुल्हन ने महल में प्रवेश किया। घर मेहमानों से भरा हुआ था, सब मंगल गीत

गाकर खुशियाँ मना रहे थे। इतने में ही खुशियों की जगह घर में कोहराम मच गया। सेठजी का पुत्र पहली रात में ही नई नवेली दुल्हन को छोड़कर स्वर्ग सिधार गया। नवोढा विधवा हो गई। घर में मातम छा गया। सेठ-सेठानी का तो विलाप में बुरा हाल हो गया। नई बहू तो एमदम गुमसुम ही हो गई, उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि यह क्या हो गया? अब मेरा क्या होगा? पहाड़ सी जिन्दगी मैं कैसे काटूँगी?

समय गुजरता गया, दुःख कुछ कम हुआ, मन कुछ सधने लगा। सेठजी काम काज में व्यस्त हो गये। अब दूसरा पुत्र भी यौवनावस्था को प्राप्त हुआ। उसके लिए भी कई सुन्दर लड़कियों के रिश्ते आने लगे। पुत्र की जोड़ी के अनुसार सम्पन्न घर में रिश्ता पक्का हो गया। दूसरी बार घर में शहनाइयाँ बजने लगी। खुशियों की बहार आ गई। सब शादी-समारोह में व्यस्त हो गये। नए-नए अरमान लेकर नई दुल्हन ने अपने पति के घर में कदम रखा। घर-आंगन खुशियों से भर गया। दिन धूम-धड़ाकों में निकल गया। अब रात का समय, पहली सुहाग रात। सेठजी के मन में कुछ डर सा लगा, पर दिमाग से उस डर को झटका देकर निकाल दिया। नई बहू को महलों में भेजने की तैयारियाँ होने लगी, पर विधाता को तो और ही कुछ मंजूर था। दूसरा पुत्र भी पहले पुत्र के समान, पहली रात में ही परलोक सिधार गया। पुराना घाव फिर ताजा हो गया, घर में कोहराम मच गया। सबको दुःख मिश्रित आश्चर्य होने लगा, कि सेठजी के दोनों पुत्रों की मौत एक ही समान कैसे हुई? इसका क्या रहस्य है? सेठ-सेठानी पर तो दुःखों का पहाड़ ही टूट पड़ा। परन्तु करें तो क्या करें, विवशतावश हाथ मल के रह गये। यह असह्य वज्रपात था। अब दो-दो बहुएँ विधवा अवस्था में घर में बैठ गई। सास-ससुर को इस गम को भी सहना पड़ा, दिल पर पत्थर रखना ही पड़ा।

समय निकलते, सब कुछ भूल जाते हैं, भूलना ही पड़ता है, नहीं तो जिंदगी काटना मुश्किल हो जाता है। समय किसी का बंधा नहीं रहता है। वह तो अपनी रफ्तार से आगे की ओर चलता ही रहता है। समंय के अनुसार तीसरा लड़का भी विवाह के योग्य हो गया। पहले लड़की वालों

का तांता लगा रहता था, पर अब सबके मन में डर बैठ गया कि कहीं मेरी लड़की के साथ भी ऐसा अनिष्ट न हो जाय। होनी को कौन टाल सकता है? जो होना है वह तो होकर ही रहता है। सोच सबकी अलग-अलग होती है। कोई सोचते कि इसके साथ भी ऐसा हो, यह कोई आवश्यक नहीं है। आयुष्य सब जीव अपनी-अपनी अलग-अलग बांध कर आते हैं। इस प्रकार सोचते हुए तीसरे लड़के का भी परिणय हो जाता है, पर विधि की विडम्बना भी अलग है। मनुष्य सोचता कुछ है और होता कुछ और है। तीसरी बहू भी विधवा वेश में बैठ गई। सेठ-सेठानी के तो आँसू थमने का नाम ही नहीं ले रहे थे। दुःखों से भरी जिंदगी बोझिल हो गई, रातों की नींद गायब हो गई। तीन-तीन बहुओं को वैधव्य दशा में देखकर छाती फटने लगती, पर कर कुछ नहीं कर सकते थे। समय की लगाम किसी के हाथ में नहीं है, वह तो अपनी चाल से चलता ही रहता है। चाहे सुख के दिन हों या दुःख के, उसे किसी की परवाह नहीं है।

चौथा पुत्र भी सयाना हो गया। उम्र विवाह के योग्य हो गई, पर अब कोई इस ओर ध्यान देना ही नहीं चाहता था। सबके मन में यह बात जम गई कि हो, न हो जरूर सेठजी को किसी ने शाप दिया है, इसी से तीनों पुत्रों की मृत्यु विवाह होते ही हो गई। अब तो कोई लड़की देने के लिए भी तैयार नहीं। सेठानी कहती है- "सेठ साहब! लड़का शादी के लायक हो गया है, अब इसकी भी शादी करा दो।" सेठजी तो शादी के नाम से ही कांप उठे और कहने लगे- "अब इसे क्यों बलि का बकरा बनाती हो? यह ऐसे ही ठीक है। कम से कम मेरे पास तो है, नहीं तो मैं इसे भी खो दूँगा।" सेठानी कहती है-"कैसी बातें करते हो? आपके स्वार्थ के लिए क्या मेरा पुत्र कंवारा ही रह जायेगा? नहीं, विवाह तो इसका आपको कराना ही होगा।" कहावत है-'विनाशकाले विपरीतबुद्धिः।' अब सेठजी क्या करते, लगे लड़की ढूँढ़ने। कोई एक सेठ था, वह इन सब बातों से अनभिज्ञ था। उसने अपनी कन्या का रिश्ता इस घर में कर दिया। विवाह का मुहूर्त भी निकाल लिया। दुःख भरे माहौल में, पहले जैसी रोनक नहीं आ सकी, फिर भी कार्य तो करना ही था। चाहे खुशी से करो या गम से। पुत्र की शादी हो गई। बहू परण कर ससुराल आ गयी। थोड़ी देर के लिए सब कुछ भूल कर

नई नवेली बहू का स्वागत किया। विनायक के घर में प्रवेश कराया। जो-जो भी कार्य करने के थे उन सब कार्यों को यथा विधि पूर्ण किया गया। वधू मन में बहुत खुश थी, पर उस बेचारी को क्या पता कि उसकी यह खुशी क्षणिक है, बाद में तो दुःखों का पहाड़ सिर पर गिरने वाला है। हुआ भी वही जो तीनों पुत्रों के साथ हुआ।

अब सेठजी तो माथा पीट कर रह गए। भगवन्! मेरे साथ ही क्यों ऐसा हो रहा है? क्या मेरे पुत्रों को किसी की नज़र लग गई? या किसी ने जादू टोना कर के मेरे पुत्रों को मृत्यु के घाट उतार दिया? सेठजी एकदम टूट गये, उनकी आत्मशक्ति कमजोर हो गई। ऊपर से जितने मुँह उतनी बातें। कोई कहता जब तीन-तीन पुत्रों का इसी प्रकार मरण हुआ तो फिर इस पुत्र की शादी क्यों की? शायद सेठजी को पुत्रों की शादी रास नहीं आई। कोई कहता जरूर किसी का शाप है, कोई कहता सेठजी के किस भव का पाप उदय में आया, जो पुत्रों की बलि के रूप में चुकाना पड़ रहा है। सेठ धर्मदास जी ये सब बातें सुन-सुन कर बौखला गये, मानो ज़हर का घूंट पीकर सब बातें सहन कर जाते। इसके अलावा कोई चारा भी नहीं था। कहावत है- ''घरां हाण, लोकां हंसी।'' घर में तो पुत्रों का वियोग हुआ, और बाहर के लोगों की ताना-कशी सुननी पड़ रही है। अब सेठजी को न तो दिन में चैन और नहीं रात में। न तो व्यापार में मन लगता हैं और न ही खाने-पीने में। दिन-रात रोते ही रहते, चार-चार बहुओं को वैधव्य वेश में देखकर सेठजी की छाती फटने लगती, पर करे क्या? लाचारी है अगर कोई चीज या वस्तु गुम हो गई हो तो उसको ढूँढ कर अथवा नई बनवा कर ला सकते थे, पर मृत्यु के मुख में गए पुत्रों को कहाँ से लाएँ? वे अपने आपको बहुओं का अपराधी समझने लगे। दिन गुज़रने लगे, सेठजी भी अपने दुःखों को भुलाकर व्यापार में मन लगाने का प्रयत्न करते रहे। समय बड़ा बलवान होता है, वह हमेशा एक समान नहीं रहता। अगर एक समान रह जाय तो कोई जी ही नहीं सकता, समय के अनुसार भूलना ही पड़ता है। सेठजी भी अपने दुःख को भूलकर अन्ततः सामान्य हो गये।

(क्रमशः)

नारी-स्तम्भ

बच्चों को ज़िद्दी न बनाएँ

श्री कैलाश जैन, एडवोकेट

पिछले दिनों जब मैं अपने मित्र के घर गया तो देखा कि वहाँ कोहराम मचा हुआ था। मित्र महोदय अपने सात वर्षीय पुत्र को छड़ी से पीट रहे थे और वह बुरी तरह चिल्ला-चिल्ला कर रो रहा था। उनका बेटा पिछले तीन दिनों से नई महंगी साइकिल के लिए ज़िद कर रहा था, जिसे खरीदना उनके बजट के बाहर की बात थी और उसकी लगातार ज़िद से खीजकर मित्र महोदय ने उसकी जमकर धुलाई कर दी। दरअसल बच्चों को ज़िद्दी बनाने में अभिभावकों का व्यवहार ही उत्तरदायी है। किसी गलत या गैरमुमकिन काम को करवाने का दुराग्रह ही ज़िद है। सामान्य तौर पर थोड़ा बहुत ज़िद्दीपन हर बच्चे में पाया जाता है, वैसे भी 'बाल हठ' मशहूर है, लेकिन माता-पिता का अत्यधिक लाड-प्यार और असंतुलित व्यवहार बच्चों के ज़िद्दी स्वरूप को धीरे-धीरे ऐसा आकार दे देता है जो आगे चलकर अभिभावकों के लिए तो मुश्किलें खड़ी करता ही है, साथ ही बच्चों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में भी बाधक होता है।

बच्चे में ज़िद्द की प्रवृत्ति की शुरूआत माता-पिता के आवश्यकता से अधिक लाड़-प्यार से होती है। यह देखा गया है कि अभिभावकों की इकलौती संतान अपेक्षाकृत अधिक जिद्दी होती है। इसका स्पष्ट कारण है कि इकलौती संतान होने के कारण माता-पिता तथा अन्य परिवारजन प्यार-दुलार में बच्चे की हर जायज, नाजायज़ फरमाइश पूरी करते जाते हैं, लेकिन धीरे-धीरे बच्चों की ज़िद का दायरा बढ़ने लगता है, वह अपनी हर मांग को मनवाने के लिए ज़िद का हथियार के तौर पर इस्तेमाल करने लगता है। यह तय है कि बच्चे की हर जिद्द को पूरा करना किसी भी अभिभावक के लिए सम्भव नहीं है। ऐसी स्थिति में बच्चे को डांटा-फटकारा जाता है और यहाँ तक कि उसकी पिटाई की जाती है। बच्चा ऐसी स्थिति के लिए मानसिक रूप से तैयार नहीं होता है और परिणामस्वरूप वह विद्रोही हो जाता है अथवा उसका समूचा व्यक्तित्व कुंठित हो जाता है।

बच्चों में ज़िद की प्रवृत्ति नहीं पनपने पाए इसके लिए आवश्यक है कि अभिभावक, अपने बच्चों के मनोविज्ञान को समझें। बाल मन बहुत सुकोमल होता है, किसी भी घटना या व्यवहार का उनके मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव पड़ता है। अभिभावकों का दायित्व है कि वे अपने बच्चों की निजी जिन्दगी में दिलचस्पी लें, उनसे दोस्ताना संबंध स्थापित करें। बच्चों की छोटी-छोटी खुशियों एवं तकलीफों में सहभागी होकर आप उनका विश्वास हासिल करे। आपका स्नेहपूर्ण व्यवहार बच्चों को ज़िद्दी होने से रोकेगा। बच्चों की किसी भी अनुचित मांग को पूरा करके उन्हें जिद्दीपन की ओर अग्रसर करने से बचिए। यदि बच्चा किसी अनुचित बात के लिए ज़िद करता है तो उसे प्रेमपूर्वक तर्कसंगत कारणों सहित समझाइए। उसे विश्वास दिलाइए कि आप जानबूझकर उसकी मांग को अस्वीकार नहीं कर रहे हैं, बल्कि इसके पीछे ठोस कारण हैं। यदि आप मानते हैं कि बच्चा गलत बात के लिए ज़िद्द कर रहा है तो दृढ़तापूर्वक उसकी मांग ठुकरा दीजिए, बच्चे की हठधर्मी के आगे झुककर उसकी मांग को पूरा कर देना आपके और बच्चे दोनों के लिए घातक होगा। बच्चे इसे अपनी ज़िद की सफलता के रूप में लेंगे और ज़िद की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन मिलेगा।

ज़िद्दी बच्चों के साथ मनोवैज्ञानिक सलूक किया जाना चाहिए। डांट, फटकार और पिटाई इसका इलाज नहीं है, बल्कि इनसे बच्चा और अधिक ज़िद्दी, बागी, कुंठित और दुराग्रही होता जाता है। लाडले बच्चे की कई जिद्द पूरी करने के बाद किसी ज़िद के लिए उसकी पिटाई कर देना कभी-कभी अत्यन्त घातक हो जाता है। इससे बच्चे में कई शारीरिक विकृतियाँ भी आ सकती हैं। आठ वर्षीय सोनू अपने पापा का लाड़ला बेटा था, उसके पापा उसे बहुत ज्यादा प्यार करते उसकी हर उचित अनुचित ज़िद पूरी करते थे। सोनू भी अपने पापा से बहुत प्यार करता था। एक दिन सोनू ने किसी चीज के लिए ज़िद करना शुरू किया। उसके पापा का मूड खराब था, जब सोनू की ज़िद हद को पार कर गई तो उसके पापा ने गुस्से में आकर बुरी तरह पिटाई कर दी। सोनू के लिए यह हादसा एकदम अप्रत्याशित था, वह सपने में भी कल्पना नहीं कर सकता था कि पापा उस पर हाथ उठाएंगे। इस सदमे के कारण उसकी घिग्घी बंधकर, उसकी जुबान तालु में चिपक गई, बहुत कोशिशों और इलाज के बाद भी उसकी आवाज नहीं लौट सकी। सारा दोष

उसके अभिभावकों का था, जिन्होंने समय रहते सोनू के ज़िद्दीपन पर अंकुश नहीं लगाया।

यह निश्चित है कि डांट-फटकार और पिटाई कर आप बच्चों के ज़िद्दीपन पर काबू नहीं पा सकते। इसके लिए बच्चों का विश्वास जीतकर स्नेहपूर्वक उन्हें समझाना ही एकमात्र विकल्प है। वैसे प्रारम्भ में ही सख्ती बरत कर बच्चों में ज़िद्दीपन नहीं पनपने देना ही सर्वश्रेष्ठ उपाय है। अपनी सामाजिक और आर्थिक क्षमताओं के परे जाकर समूचा पारिवारिक वातावरण बच्चों के सर्वांगीण विकास को प्रभावित करता हैं, वयस्क सदस्यों के आपसी कलह, घरेलू तनाव, व्यस्तता के कारण बच्चों के प्रति उदासीन रहना आदि कारण बच्चों में कई मनोविकार पैदा करते हैं। 'ज़िद' भी एक प्रकार का मनोविकार है, जिसे अभिभावक अपने संतुलित मनौवैज्ञानिक व्यवहार द्वारा नियंत्रित कर सकते हैं। जरूरत केवल धैर्य और बाल-मनोविज्ञान को समझने भर की है।

-34, बंदा रोड, भवानीमण्डी-326502, जिला-झालावाड (राज.)

विद्युत सचित्त है, अचित्त नहीं

डॉ. जीवराज जैन

"क्या विद्युत सचित्त तेउकाय है?"-प्रो. मुनि श्री महेन्द्रकुमार जी द्वारा लिखित और जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक में यह लिखा गया है कि डॉ. जैन के अनुसार "विद्युत अचित्त सिद्ध होती है।" यह एक त्रुटिपूर्ण निष्कर्ष है। अतः सभी सुज्ञ पाठकों को इसमें सावधानी बरतने की विनति की जा रही है। मैंने जो 'बिज्जू' की वैज्ञानिक व्याख्या एवं विश्लेषण करके पांडुलिपि तैयार की थी, उसमें कई सम्भावनाओं पर तुलनात्मक चिन्तन किया गया था, लेकिन उस विश्लेषण के आलोक में कहीं भी ऐसा निष्कर्ष नहीं निकाला गया था कि 'विद्युत अचित्त है।'

अतः पाठकगण, उस पुस्तक में दिये गये निष्कर्ष को सही नहीं मानें तथा उस तथ्य का शुद्धीकरण कर लिरावें। कुछ अवस्थाओं में, जैसे ट्यूबलाइट में तो, विद्युत स्पष्टतः सचित्त सिद्ध होती है। बाकी अन्य अवस्थाओं को समझने के लिए अभी अधिक विश्लेषण और चिन्तन की आवश्यकता है।

-40, Kamani Center, 2nd Floor, Bistapur, Jamshedpur-831001

कविता

समर्पण

डॉ. रमेश 'मयंक'

जहाँ – कामना है,
याचना है,
थोड़ा क़रके अधिक पाने की
भावना है,
वहाँ भटकते रहने की
पूरी-पूरी संभावना है।

नदी
समर्पित भाव से
सागर की ओर जाती है
छोटे-बड़े नद-नालों को
अपने में मिलाती है,
मिलकर सागर से
विराट् में रूपान्तरित हो जाती है।

बीज
भूमि को समर्पित होकर,
विशाल वृक्ष बन जाता है
फल, फूल, छाया सा स्नेह
उदारता से लुटाता है
विराट् सत्ता का प्रतीक कहलाता है।

समर्पण भाव
क्षुद्र घेरों को तोड़ता है
परायों को आत्मीयता से जोड़ता है
अपनत्व बोध
चिन्तन की धारा का रुख
आनन्द लोक की तरफ मोड़ता है।

शर्तों के परित्याग से
गरिमा का आगाज होता है
श्रद्धावनत की छवि का क्षण
अत्यन्त लाजवाब होता है।

–बी-8, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़-312001 (राज.)

निवेदन.

आचार्य हस्ती जन्मशताब्दी अध्यात्म-चेतना वर्ष

(दिनाँक 30 दिसम्बर 2009 से 18 जनवरी 2011)

श्री ज्ञानेन्द्र बाफना

श्रमण भगवान् महावीर स्वामी के 81 वें पट्टधर युगमनीषी युगप्रभावक आचार्यप्रवर परम पूज्य 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. का पावन 100वां जन्म दिवस आगामी पौष शुक्ला चतुर्दशी, दिनांक 30 दिसम्बर 2009 को समुस्थित हो रहा है।

परम पूज्य गुरुदेव का समग्र जीवन साधना के उच्च कीर्तिमानों से समृद्ध था। उनके जीवन में निरतिचार संयम-साधना के सभी सोपान एवं दश यतिधर्म प्रत्यक्ष साकार रूप में परिलक्षित होते थे। प्राणिमात्र के प्रति करुणा, गुणीजनों के प्रति प्रमोद, दीन, पीड़ित क्लिष्ट प्राणियों के प्रति अनन्त करुणा, अन्यथा भाव वालों के प्रति माध्यस्थ भाव उनके जीवन में जीवन्त मूर्तिमान थे। सरल सहज सरस जीवन के धनी उन महापुरुष के लिये सभी अपने थे, वे सभी के लिए अपने थे। परमश्रद्धेय, परमपूज्य, आस्था के केन्द्र आचार्य श्री हम सबके जीवन धन थे। जीवन में महामंत्र नवकार के तीनों पदों को धारण करने वाले उन महापुरुष के जीवन में सभी उपमाएँ स्वयं उपमित हो गईं, सभी चमत्कार स्वयं चमत्कृत हो गये एवं सभी पद महिमामंडित हो गये, उनके चरणों का स्पर्श कर, उनके पावन कर कमल का आशीर्वाद पा हम सब धन्य-धन्य अनुभव करते हैं। जीवन के वे क्षण कितने पावन थे, जब उनके कृपामय आशीर्वाद, पावन सान्निध्य पाकर हम सभी आधि-व्याधियों से मुक्त सच्चिदानन्द की झलक का अनुभव करते थे। उनकी संयम-साधना में सिद्धि का अनिर्वचनीय आनन्द दृष्टिगत होता था।

उनके विमल प्रताप से हमने हिताहित का बोध पाया है, देव गुरु व धर्म का स्वरूप समझा है, उन महनीय गुरुवर्य के अनन्त उपकार का ऋण चुकाने का, उनका पावन स्मरण कर, अपने जीवन को मोक्षाभिमुख करने, संघ को ज्ञान-दर्शन-चारित्र के उच्च सोपानों से समृद्ध करने का यह स्वर्णिम सुअवसर है। पूज्यपाद आचार्य श्री हस्ती के पट्टधर परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी

म.सा., परमश्रद्धेय उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. प्रभृति गुरु भगवंतों एवं साध्वीप्रमुखा शासन प्रभाविका पूज्या महासतीजी श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. प्रभृति महासतीवृन्द की पावन प्रेरणा एवं पवित्र सान्निध्य का सहज संरक्षण पा हम सौभाग्यशाली हैं। इन महापुरुषों की छत्रछाया में इस अध्यात्म चेतना वर्ष में हमें अपनी अध्यात्म चेतना को जागृत कर सतत प्रगति की ओर बढना है। तप, त्याग, प्रत्याख्यान एवं आत्मिक गुणों से अपने जीवन को सुरभित करना है।

शताब्दी का यह प्रसंग हमारे जीवन-रूपान्तरण का दिवस बने, जन्म-जन्म से संचित कर्मरज राशि से मुक्त होने का पथ प्रशस्त करे, यही मंगल कामना अभिलाषा है।

24 अक्टूबर 2009 को पालड़ी-अहमदाबाद में आयोजित बैठक में पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं के अनेक सुझाव प्राप्त हुए तथा उन सुझावों पर विचार-विमर्श के अनन्तर आचार्य हस्ती शताब्दी कार्यक्रमों एवं संकल्पों को मूर्तरूप प्रदान किया गया है। समिति उनके प्रति कृतज्ञ है।

तय कार्यक्रम 'जिनवाणी' एवं फोल्डर के माध्यम से आप तक प्रेषित किया जा चुका है। संकल्प पत्र भी कार्यकर्त्ताओं तक प्रेषित किये जा चुके हैं। हम जन-जन को इस अध्यात्म चेतना कार्यक्रम से जोड़ें, स्व-पर के कल्याण का हेतु बनें, यह महनीय प्रयास हम सबको करना है। आगामी पौष शुक्ला चतुर्दशी का विशिष्ट महत्त्व है। यह दिन हमारे जीवन में एक बार आया है। इस दिवस को हम सब सांसारिक कार्यों व्यापार, व्यवसाय, दैनन्दिन गृहस्थ व्यापारों से मुक्त हो साधनापूर्वक मनायें, यह विनम्र निवेदन है।

हमारा आप सब शासनरसिक धर्मप्रेमी भाई-बहिनों से आह्वान है कि-

(1) **आगामी पौष शुक्ला चतुर्दशी, दिनांक 30 दिसम्बर, 2009 को व्यापार, व्यवसाय अथवा सर्विस से अवकाश लेकर इस दिन दया, संवर एवं उपवास पौषध अवश्य करें।**

(2) 30 दिसम्बर 2009 से प्रारम्भ कर 18 जनवरी 2011 तक पूरे वर्ष भर विभिन्न ग्राम-नगरों में निरन्तर आयम्बिल की ओली का शुभारम्भ करें।

(3) पूरे वर्ष पर्यन्त प्रतिदिन नियमित समय प्रातः 8 बजे, रात्रि 9 बजे, नवकार महामंत्र एवं गुरु स्मरण के साथ 'मित्ती मे सव्वभूएसु वेरं मज्झं न केणई' के पाठ को हृदयगंम करते हुए प्राणिमात्र के प्रति वैर, वैमनस्य एवं विषाद के

विसर्जन हेतु संकल्प का शुभारम्भ करें।

(4) अपने-अपने क्षेत्र में अपने प्रभाव का उपयोग कर इस दिन अगते का पालन कराने का प्रयास करावें।

(5) अध्यात्म चेतना वर्ष में प्रतिदिन कोई न कोई त्याग अवश्य करें।

(6) इस वर्ष सप्ताह में कम से कम एक दिन स्थानक में जाकर सामायिक करें।

विशेष-

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा पौष शुक्ला चतुर्दशी के अवसर पर पालनपुर (गुजरात) विराजेंगे।

परम पूज्य आचार्यप्रवर के सान्निध्य में तथा जहां-जहां सन्तप्रवर एवं महासती मण्डल विराजमान रहेंगे वहां-वहां त्रिदिवसीय कार्यक्रम इस प्रकार प्रस्तावित है-

दिनांक 28 दिसम्बर, 2009 - सामूहिक एकाशन

दिनांक 29 दिसम्बर, 2009 - सामूहिक सामायिक-साधना

(प्रत्येक व्यक्ति द्वारा कम से कम 5 सामायिक)

दिनांक30 दिसम्बर, 2009 - सामूहिक संवर, दया एवं पौषध-उपवास की साधना।

इसी प्रसंग पर वहाँ दिनांक 28 दिसम्बर से 30 दिसम्बर 2009 तक अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा मेधावी छात्रवृति योजना के तहत चयनित छात्रों का शिविर आयोजित किया जा रहा है। ज्ञातव्य है कि पूज्यपाद आचार्य हस्ती की जन्म शताब्दी के प्रसंग में सर्वप्रथम मेधावी छात्रवृति योजना का शुभारम्भ सन 2005 में किया गया था एवं 1000 छात्रों को छात्रवृति प्रदान करने का लक्ष्य रखा गया था। इस योजना के अन्तर्गत अब तक लगभग 850 छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान की जा चुकी है। इसके लिये युवक परिषद् के सभी कार्यकर्ताओं को हार्दिक बधाई।

परमश्रद्धेय उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा ने इस अवसर पर पाली (मारवाड़) विराजने की स्वीकृति फरमाई है।

साध्वी प्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा इस अवसर पर जोधपुर विराजेंगे।

-संयोजक, आचार्य हस्ती जन्म शताब्दी समिति

श्री महावीराय नमः श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणिभ्यो नमः जय गुरु हीरा मान

आचार्य श्री हस्ती शताब्दी अध्यात्म चेतना वर्ष

30 दिसम्बर 2009 से 18 जनवरी 2011

(तत्त्वावधानः अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ)

घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.) फोन – 0291–2636763, 2641445

संकल्प–पत्र

मैं............................पुत्र/पुत्री श्री..उम्र.........

पता...

....

फोन नं. ....मो. नं..........................ई–मेल. ....

युगमनीषी आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के जन्म–शताब्दी के पावन प्रसंग पर देव, गुरु, धर्म एवं आत्मा की साक्षी से सश्रद्धा समक्ति जीवनपर्यन्त/........... वर्ष के लिये निम्न चिह्नांकित (✓) संकल्प ग्रहण करता/करती हूँ।

1. नित्यप्रति ....सामायिक। ( )
2. सप्ताह में कम से कम एक सामायिक। ( )
3. सप्ताह में कम से कम एक सामायिक धर्मस्थान में करना। ( )
4. नित्यप्रति 20 मिनट/...........पृष्ठ का स्वाध्याय। ( )
5. स्वाध्याय संघ के सदस्य के रूप में पर्युषण पर्वाराधन हेतु अपनी सेवाएँ प्रदान करना। ( )
6. कम से कम पाँच व्यक्तियों को सामायिक/प्रतिक्रमण सिखाऊँगा। ( )
7. कम से कम दस व्यक्तियों को आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षा दिलवाऊँगा। ( )
8. महीने में पाँच दिन संघ द्वारा निर्देशित कार्य हेतु समय निकालूँगा। ( )
9. आजीवन/एक वर्ष 20 दिन तक ब्रह्मचर्य का पालन। ( )
10. आजीवन/एक वर्ष तक एक माह में 25 दिन ब्रह्मचर्य पालन। ( )
11. अष्टमी, चतुर्दशी, पक्खी पर्व पर/ तथा पाँच पर्व तिथियों पर ब्रह्मचर्य पालन। ( )
12. जीवन पर्यन्त/एक वर्ष 20 दिन तक चौविहार का पालन। ( )
13. जीवनपर्यन्त/एक वर्ष 20 दिन तक रात्रिभोजन-त्याग। ( )
14. चातुर्मास/सावण भादवा में रात्रिभोजन-त्याग। ( )
15. अष्टमी, चतुर्दशी, पक्खी पर्व/तथा पाँच पर्व तिथियों के दिन रात्रिभोजन-त्याग। ( )

16. सामूहिक आयोजन यथा विवाहादि पार्टियों में, जन्मोत्सवों आदि प्रसंगों पर रात्रिभोजन-त्याग। ( )
17. सामूहिक रात्रि भोजन का आयोजन नहीं करना। ( )
18. श्रावक/श्राविका के बारह व्रत (5 अणुव्रत, 3 गुणव्रत एवं 4 शिक्षाव्रत) ग्रहण करना। ( )
19. अष्टमी, चतुर्दशी, पक्खी पर्व पर (प्रतिमाह छः) दया/संवर/पौषध करना। ( )
20. महिने में एक दिन दया/संवर/पौषध करना। ( )
21. पोरसी (एक प्रहर दिन चढ़ने तक चौविहार त्याग) करना।..............................तक (..........वर्ष या आजीवन) ( )
22. नित्यप्रति 14 नियम 3 मनोरथ चितारना। ( )
23. नित्यप्रति.................से अधिक द्रव्य खाने-पीने हेतु उपयोग में नहीं लेना। ( )
24. खाने-पीने में सचित्त का त्याग। ( )
25. अपने घर में स्वयं खाने-पीने हेतु सचित्त वस्तुओं का उपयोग नहीं करना। ( )
26. प्रतिदिन एक घंटे मौन। ( )
27. प्रतिदिन किसी एक विगय का त्याग। ( )
28. एक वर्ष तक विगय का त्याग। (यहाँ विगय का नाम लिखें।).......................... ( )
29. अपने घर में सचित्त पानी पीने का त्याग। ( )
30. जीवन पर्यन्त/ एक वर्ष तक दो/तीन/चारों खंद का पालन (चौविहार त्याग, कच्चे पानी का त्याग, ब्रह्मचर्य पालन, हरी का त्याग। ( )
31. जमीकन्द का पूर्णतः त्याग। ( )
32. ....के अतिरिक्त जमीकन्द का त्याग। ( )
33. सामूहिक भोज में जमीकन्द का त्याग। ( )
34. सामूहिक भोज आयोजन में जमीकन्द का त्याग। ( )
35. महीने में.......................दिन बड़ी स्नान का त्याग। ( )
36. परिजनों एवं स्वधर्मी बन्धुओं के विरुद्ध न्यायालय में जाने का त्याग। ( )

दिनांक : ....स्थान : ....

हस्ताक्षर (कार्यकर्ता) हस्ताक्षर (व्रत ग्रहणकर्ता)

श्री महावीराय नमः श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणिभ्यो नमः जय गुरु हीरा मान

आचार्य श्री हस्ती शताब्दी अध्यात्म चेतना वर्ष

30 दिसम्बर 2009 से 18 जनवरी 2011

(तत्त्वावधानः अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ)

घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.) फोन – 0291–2636763, 2641445

बच्चों एवं नव युवा–युवतियों के लिए संकल्प–पत्र

मैं........................पुत्र/पुत्री श्री..उम्र........
पता..
....फोन नं. ....मो. नं....................
ई–मेल. ....युगमनीषी आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के जन्म–शताब्दी के पावन प्रसंग पर देव, गुरु, धर्म एवं आत्मा की साक्षी से सश्रद्धा सभक्ति जीवनपर्यन्त/........... वर्ष के लिये निम्न चिह्नांकित (✓) संकल्प ग्रहण करता/करती हूं।

1. मैं प्रतिदिन माता-पिता एवं बड़ों के चरण-स्पर्श करूँगा/करूँगी। ( )
2. प्रतिदिन जागते एवं सोते वक्त 11 नवकार मंत्र का स्मरण करूँगा/करूँगी। ( )
3. मैं किसी से भी मिलने पर जयजिनेन्द्र से अभिवादन करूँगा/करूँगी। ( )
4. मैं प्रतिदिन 10 मिनट का मौन रखूँगा/रखूँगी। ( )
5. मैं भोजन में जूठा नहीं डालूँगा/डालूँगी। ( )
6. मैं बिना पूछे किसी अन्य की वस्तु नहीं लूँगा/लूँगी। ( )
7. जानबूझकर किसी भी जीव को पीड़ित अथवा परेशान नहीं करूँगा/करूँगी। ( )
8. मैं सत्य एवं प्रियवचन बोलूँगा/बोलूँगी। ( )
9. मैं किसी को गाली-गलौच एवं असभ्य वचन नहीं बोलूँगा/बोलूँगी। ( )
10. महीने में..........बार संत-सती के दर्शन करूँगा/करूँगी। ( )
11. सप्ताह में एक दिन सामायिक करूँगा/करूँगी। ( )
12. प्रतिदिन...........घंटे से ज्यादा टी.वी. नहीं ( )

देखूँगा/देखूँगी।

13. मैं खाना खाते वक्त टी.वी. नहीं देखूँगा/देखूँगी। ( )

14. मैं किसी की निन्दा एवं चुगली नहीं करूँगा/करूँगी। ( )

15. महीने में ....रुपये अच्छे कार्य के लिए खर्च करूँगा/करूँगी। ( )

16. महीने में..........दिन रात्रि-भोजन नहीं करूँगा/करूँगी। ( )

17. मैं होली के अवसर पर रंग नहीं खेलूँगा/खेलूँगी। ( )

18. मैं दीपावली के अवसर पर पटाखें नहीं छोडूँगा/छोडूँगी। ( )

19. मैं सप्ताह में ......घंटे बीमार, बजुर्गों एवं जरूरतमंदों की सेवा करूँगा/करूँगी। ( )

20. मैं अपनी गलती होने पर उसी समय क्षमा माँगूगा/माँगूगी। ( )

21. मैं बाथटब एवं स्वीमिंग पूल में स्नान नहीं करूँगा/करूँगी। ( )

22. मैं अपने जन्मदिन पर गरीबों को भोजन करवाउँगा/करवाउँगी। ( )

23. मैं मंजन करते समय पानी का अपव्यय नहीं करूँगा/करूँगी। ( )

24. मैं सामायिक सूत्र कण्ठस्थ करूँगा/करूँगी। ( )

25. मैं प्रतिक्रमण सूत्र कण्ठस्थ करूँगा/करूँगी। ( )

26. मैं 25 बोल एवं 67 बोल कण्ठस्थ करूँगा/करूँगी। ( )

दिनांक : ....स्थान : ....

हस्ताक्षर (कार्यकर्ता) हस्ताक्षर (व्रत ग्रहणकर्ता)

उपन्यास (10)

सुबह की धूप

श्री गणेशमुनि जी शास्त्री

पूर्ववृत्तः- दोनों पुत्रों के घर छोड़ देने के बाद किशनलाल अपनी पत्नी से कहता है कि तुम मन छोटा मत करो, थोड़े दिनों में उन दोनों की अक्ल ठिकाने आ जाएगी और दौड़े चले आयेंगे। थोड़ी देर बाद किशनलाल ने रेडियो में राजधानी एक्सप्रेस, जिसमें दीपक और आरती आ रहे थे, के दुर्घटनाग्रस्त होने की खबर सुनी तो रेलवे स्टेशन की इन्क्यवारी पर फोन कर घायलों के बारे में पूछताछ की। बगैर देरी किए शान्ति और किशनलाल सीधे सफदरगंज अस्तपताल पहुँचे। सर्वप्रथम अपने मित्र शंकर से भेंट हुई, जिसने बताया कि उसका पूरा परिवार इस दुर्घटना में समाप्त हो गया। उसे सान्त्वना देकर और पास में शान्ति को बिठाकर किशनलाल वार्ड में गया, जहाँ दीपक को देखा। दीपक के पास जाकर हालचाल पूछने लगा तो नर्स ने मरीज के हाथ कट जाने से मानसिक आघात को बताकर बात करने के लिए मना किया। अब आगे.........

'मेरी बेटी आरती कहाँ है?'

'औरतों का वार्ड पास में ही है। वहीं जाकर आप पता कर लें।'

आँखों में उफन आये आँसुओं को रूमाल से पोंछता हुआ किशनलाल महिला वार्ड तक आ गया।

दरवाजे से अन्दर घुसते ही, दूसरे पलंग पर बैठी आरती, किशनलाल को दूर से देख लेने पर भी चुपचाप बैठी रही।

अब, किशनलाल उसके पास जाकर बोला- 'बेटी!....आरती! ठीक तो हो न?'

आरती पर, किशनलाल की बातों का कोई भी असर नहीं हुआ। वह, किशनलाल की ओर देख-देखकर भी चुपचाप बैठी रही।

'तुम चुप क्यों हो आरती? बोलती क्यों नहीं?'- किशनलाल के इतना बोलने पर भी जब आरती ने उसे कोई उत्तर नहीं दिया, तब वह हड़बड़ाया सा, लेडी डॉक्टर के पास पहुँचा, और बोला- 'डॉक्टर! मेरी बेटी को क्या हो गया

है?'

लेडी डॉक्टर, आरती के पलंग से कुछ ही कदम दूर, एक मरीज का तापक्रम देख रही थी।

'इसके सिर में गम्भीर चोट आई है। दुर्घटना के भयानक हादसे को देखकर वह घबरा भी गयी है। इस कारण, यह अपनी स्मरण शक्ति भी खो चुकी है। इन्हीं सब कारणों से यह गूँगी भी हो गई है।' - डॉक्टर ने उसे बतलाया।

किशनलाल ने अपना सिर पीट लिया।

'डॉक्टर साहब!' - उसने हताशा भरे स्वर में पूछा- 'अब क्या होगा?'

'कुछ कहा नहीं जा सकता है। यहाँ तो इसका इलाज हो पाना मुश्किल ही है। मगर आयुर्विज्ञान संस्थान में या बम्बई के 'टाटा हास्पिटल' में ले जाने पर, कोई हल निकल सकता है।'

'यहाँ से इसे कब तक अवकाश मिल जायेगा?'

'जब आप चाहें, अपनी बेटी को ले जा सकते हैं।'

ठीक है डॉक्टर! मैं अपने लड़के के बारे में भी जानकारी प्राप्त कर लूँ।'

निराश मन से वह पुनः दीपक के वार्ड की ओर चला आया। इस वार्ड के डॉक्टर से मिलकर उसने पूछा- डॉक्टर! मैं दीपक को अपने साथ ले जा सकता हूँ क्या?'

'हमें कोई दिक्कत नहीं है। टांके लग चुके हैं। लेकिन घावों पर पट्टी बराबर करवाते रहें और हाथ की पूरी सावधानी रखें। अभी एक दो महीनों तक, मरीज को इधर-उधर हिलाना-डुलाना अच्छा नहीं होगा।'

'आप चिन्ता न करें डॉक्टर! मैं पूरी सावधानी के साथ ले जाऊँगा।'

'ठीक है। तो आप यहाँ के वार्ड-इंचार्ज के पास जाकर, कुछ आवश्यक कागजों पर अपने हस्ताक्षर कर दीजिए।' -डॉक्टर ने हाथ के इशारे से वार्ड-इंचार्ज का रूम उसे बतलाते हुए कहा।

किशनलाल ने वार्ड-इंचार्ज के पास जाकर फार्म पर हस्ताक्षर किये, और कहा- ''कृपया, आप दीपक को स्ट्रेचर पर लिटाकर, मेरी कार तक पहुँचाने की व्यवस्था करा दें, बड़ी कृपा होगी। मेरी कार का नम्बर है- आर.जे.आर. सात सौ बावन। तब तक, मैं अपनी बेटी आरती को भी लेकर वहाँ पहुँचता हूँ। आप

जरा जल्दी व्यवस्था कराइएगा।''

'ठीक है, आप चलिए।' वार्ड इंजार्ज ने उसे आश्वस्त करते हुए कहा।

कुछ समय बाद, आरती और दीपक को अपनी कार में बिठलाये हुए, वह अपनी पत्नी के पास पहुँचा।

'शान्ति, उसे देखते ही, अपनी सारी व्याकुलता के साथ पूछ बैठी - 'कैसे हैं दीपक और आरती?'

'जीवित तो हैं, मगर मुर्दे की तरह। आरती, अपनी स्मरण शक्ति खो बैठी है उसकी जुबान भी नहीं खुल पाती है और दीपक का एक हाथ काटा जा चुका है।'

'क्या?' - सिर्फ इतना ही चिल्लाकर, शान्ति बेहोश हो गई।

यदि किशनलाल, उसे तुरन्त सम्हाल न लेता, तो वह धड़ाम से नीचे गिर पड़ती। अब, उसने उसे वहीं पर आराम से लिटा दिया, और अपने इर्द-गिर्द खड़े व्यक्तियों की ओर सहायता की उम्मीद में देखने लगा।

उसके पास खड़े लोगों में से एक व्यक्ति दौड़कर एक लोटे में पानी ले आया, और किशनलाल से बोला-'भाई साहब! इनके मुँह पर पानी के कुछ छींटे मारिए। ये होश में आ जायेंगी।'

किशनलाल ने उसके हाथ से लोटा ले लिया। फिर शान्ति के चेहरे पर धीरे-धीरे से छींटे देने लगा।

एक-दो मिनट में ही, शान्ति ने आँखें खोली, तो किशनलाल को कुछ तसल्ली हुई। अब वह भी, पत्नी को धीरज दिलाते हुए बोला- ''शान्ति! अगर तुम भी धैर्य खो दोगी, तो मेरा साथ कौन देगा इस संकट में?''

शान्ति, फफकती हुई बोली- 'अब मेरा क्या होगा? न तो विश्वास ही यहाँ है, न ही आलोक! वे दोनों आज यहाँ होते तो..'।

'धीरज रखो शान्ति!' तुम इस शंकर को देखो न! उसके दुःख के सामने हमारा दुःख है ही कितना?'

'हाँ भाभी! मुझे देखो। अपना कहने के लिए मेरे पास आज आँसू भर बचे हैं। घर में, कोई बात तक करने वाला नहीं रहा। मेरी समझ में नहीं आ रहा है, कि मैं क्या करूँ? कहाँ जाऊँ?- फिर भी, तुम्हारे सामने खड़ा हूँ भाभी!'-शंकर ने उसे सान्त्वना दी।

'तुम मेरे साथ चलो शंकर!' किशनलाल ने अपनी आत्मीयता को प्रकट करते हुए उससे कहा- 'मेरे पास रहो। निराश होने से कोई काम नहीं बनता भाई!'

'अब मेरा मन मर चुका है किशन भाई!... अभी तो कुछ दिनों तक दिल्ली में ही रहने का निश्चय किया है। फिर कभी समय मिला, तो उधर जरूर जाऊँगा।' शंकर ने उसे उत्तर दिया। फिर उनकी गाड़ी की ओर इशारा करते हुए बोला- उधर देखो। दीपक और आरती तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। अब तुम और भाभी चलो।'

'आओ शान्ति!'- कहता हुआ किशनलाल, शान्ति को सहारा दिए हुए कार की ओर ले चला।

अपने बच्चों की दशा, अपनी आँखों से देखकर, शान्ति की आँखें फिर छलछला आई। उसका मन कर रहा है कि एक बार जोर से चीखकर, दहाड़ मारकर, जी भरकर रो ले। किन्तु अपने मन को मसोस कर, वह आरती के बगल में जाकर बैठ गई। उसके सिर को उसने अपने सीने से चिपका लिया, और अपने दाहिने हाथ से दीपक का सिर सहलाती हुई बोली- ' यह क्या हो गया दीपक बेटे!'

'भगवान को सिर्फ इतना ही मंजूर था माँ! वरना, दुर्घटना तो बहुत ही भयंकर हुई थी। मुझे तो अस्पताल पहुँचने के बाद ही होश आया। डॉक्टरों की तत्परता ने सैकड़ों घायलों को मौत के मुँह में जाने से बचा लिया है माँ!'

'दीपू! मेरे बेटे!'

किशनलाल ने अब शंकर को अपने गले से लगाया, तो दोनों की आँखों में आँसू छलछला आये।

आखिर, वातावरण की गम्भीरता भरे मौन को तोड़ते हुए शंकर बोला- 'अब तुम गाड़ी में बैठो किशनलाल! भगवान ने चाहा तो दीपक और आरती, दोनों ही जल्दी स्वस्थ हो जायेंगे। दोनों के समाचार, मुझे दिल्ली के पते पर ही देना। मैं, अब यहीं रहूँगा। आगरा, मुझे रास नहीं आया है किशनलाल !'

किशनलाल ने अब यहाँ खड़े अन्य व्यक्तियों को हाथ जोड़कर नमस्कार किया, फिर ड्राइवर के बगल वाली सीट पर बैठते हुए उसे चलने का संकेत किया।

काफी देर तक चुपचाप रहने के बाद, किशनलाल ने निराशा भरे स्वर में

कहा- 'शान्ति! मेरा तो मन करता है कि संन्यास ले लूँ।'

'इस हालत में तुम्हें संन्यास लेने की सूझ रही है? गृहस्थी में रहकर भी तो तुम धर्म-आराधना कर सकते हो। देखते नहीं, अभी हम पर दीपक और आरती का भार है। अगर आरती की स्मरण शक्ति वापिस नहीं लौटी, इसकी जबान बन्द ही बनी रही, तब फिर क्या करेंगे?'

'मुझे भगवान पर पूरा भरोसा है शान्ति! अपनी आरती, एक दिन फिर पहले की तरह बोलने-सुनने लग जायेगी।

'दीपक! भूख तो नहीं है बेटे!' - शान्ति ने अपनी ममता, उस पर प्रकट करते हुए कहा।

'नहीं माँ! अस्पताल में, सवेरे ही नाश्ता दे दिया गया था हमें।'

'आरती! तुम कुछ लो बेटी!'

आरती का मुँह, कुछ कहने के लिए खुला जरूर, पर वह खुला ही रह गया।

शान्ति, उसकी इस दशा को, बहुत देर तक गौर से देखती रही। फिर, बोली- 'बेटी! मुझे पहिचाना? मैं तुम्हारी माँ हूँ।....यह दीपक है, और आगे तुम्हारे पिता जी बैठे हैं।....याद करो बेटी।'

आरती, चुपचाप अपनी माँ के चेहरे को देखती रही।

आखिर, चार घंटों के लम्बे सफर के बाद किशनलाल अपने घर पहुँच गया।

किशनलाल की कार आई देखकर, अड़ोस-पड़ोस के तमाम व्यक्ति वहाँ आकर इकट्ठे हो गये। इनमें सान्त्वना देने वाले लोगों की तुलना में, मात्र दर्शकों की भीड़ ज्यादा है।

आरती, अपरिचित की तरह, इन सभी को देखने लगी।

कार में से पहले दीपक को सहारा देकर उतारा गया, और कमरे में ले जाकर, उसे एक पलंग पर बैठा दिया गया। फिर, आरती का हाथ पकड़कर, शान्ति उसे अन्दर ले आई।

सद्भावना और सहानुभूति प्रकट करने वालों का तांता शुरु हुआ, तो रात तक चलता ही रहा। पुरुष और महिलाएँ, जो भी आते, वे दीपक और आरती का हाल पूछते फिर सहानुभूति दर्शा कर लौट जाते।

रात के ग्यारह बज गये। तब कहीं, कुछ तसल्ली मिली किशनलाल को।

अब उसने मोतीराम को कोठी का मुख्य द्वार बन्द कर आने के लिए कहा, और स्वयं अपने शयन कक्ष में जाने के लिए मुड़ा, तो सामने शान्ति को खड़ा देखकर उसने पूछा– 'तुम अभी तक सोई नहीं?'

'मेरी नींद तो अब हमेशा के लिए गायब हो गई है। जवान गूँगी बेटी घर में बैठी होगी, तो माँ को नींद कैसे आयेगी?'

'सब ठीक हो जायेगा शान्ति! विश्वास करो। हम आरती को बम्बई ले चलेंगे। वहाँ भी वह ठीक नहीं हो सकी, तो विदेश भी ले जाऊँगा। लेकिन तुम अपने आपको संयत तो बनाए रखो।'

'यहाँ के डॉक्टरों को भी दिखा देते तो ठीक रहता। न हो तो डॉक्टर चटर्जी को ही दिखा दो। वे कोई राय दे सकें?'

'सवेरे बुला लेंगे। अभी बुलाने से कोई लाभ नहीं है।'

'तुम्हारी जैसी इच्छा। देर करने से भी तो कोई लाभ नहीं होगा। जल्दी ही राय लेकर आरती का इलाज करवाना ठीक रहेगा।'

'तुम चाहती हो तो अभी उन्हें बुलाए लेता हूँ।– कहने के बाद उसने डॉक्टर चटर्जी का नम्बर मिलाया और कहा– "डॉक्टर साहब! नमस्कार? आपको पता चल ही गया होगा कि आरती और दीपक, भगवान की कृपा से बच तो गये, मगर इनकी स्थिति बड़ी विचित्र हो गई है। आप आकर इन्हें देख लेते, तो मुझे तसल्ली हो जाती।"

'ठीक है। अच्छा नमस्कार ?'

'क्या कहा है?' –उतावली शान्ति ने पूछा।

'कह रहे हैं, सवेरे ही ठीक से देख सकूँगा। अभी उन्हें विश्राम करने देना ही ठीक है।'

'हे भगवान्!'

'अब तुम जाकर विश्राम करो शान्ति! आरती का ध्यान रखना। किसी चीज की जरूरत पड़े, तो मोतीराम को जगा लेना। वह बरामदे में ही सोया है।

'अच्छा' –कहती हुई शान्ति कमरे से बाहर निकल गई। और किशनलाल, अपने पलंग पर लेटकर, बच्चों के उपचार के लिए, अपना कार्यक्रम तय करने पर विचार करने लगा।

(क्रमशः)

युवा-स्तम्भ

संयुक्त परिवार की चाह

मोहनोत गणपत जैन

'मानव' समाज की एक इकाई है, अतः समाज के अभाव में उसका वर्चस्व नगण्य है। यद्यपि आज के भौतिकवादी युग में संयुक्त परिवारों की संख्या बहुत कम है, तथापि अपने परिवारजनों के संग एक ही छत के नीचे रहने के लिए युवा दम्पती आज भी इच्छुक हैं। परिवार का उद्देश्य ही सम्मिलित रहने की चाह है। परिवार का प्रत्येक सदस्य एक दूसरे पर निर्भर रहता है। पारस्परिक ध्यान रखना, सुविधाएँ जुटाना, सुरक्षित जीवन के साथ अनुशासन का पालन, बुजुर्गों का सम्मान जैसे अनेक गुण परिवार के सदस्यों को परस्पर जोड़े रखने में सक्षम हैं। स्पष्टतः 'संगठन' का मूल तो संयुक्त परिवार ही है। परिवार से ही जाति, समाज और धर्म का वर्चस्व है।

आज के युग में तो जहाँ धन-सम्पत्ति का महत्त्व पराकाष्ठा पर है, वहीं एकल परिवार का पलड़ा भी भारी होता जा रहा है। युवा दम्पती अपना नीड़ अलग ही बसाना पसन्द करते हैं। संयुक्त परिवार में एक सीमा तक स्वतन्त्रता तो है, मगर स्वच्छन्दता को स्थान नहीं, सुरक्षा है, मगर स्वार्थपरता नहीं। आज पति-पत्नी दोनों ही शिक्षित हैं, अर्थाजन करते हैं, अपनी संतान के प्रति चिन्तित भी हैं, किन्तु पारिवारिक बंधन उन्हें गंवारा नहीं। ऐसे दम्पती अपनी अर्जित सम्पति का एकांश भी संयुक्त परिवार के सदस्यों पर निरर्थक खर्च करना पसन्द नहीं करते। ऐसे दम्पती सुख-दुःख के समय अपने मित्र या अन्य से सहायता की गुहार कर लेंगे, मगर अपने माता-पिता-भाई आदि से सम्भवतः नहीं।

आज के युग में भी अधिकांशतः संयुक्त परिवारों की बागडोर परिवार के मुखिया के हाथ में होती है, इससे उसे अपने बड़प्पन का एहसास होता है। अपने विश्वास, योग्यता, प्रतिभा, सहनशीलता, धैर्य और क्षमता के आधार पर मुखिया गृहस्थी का संचालन सरल तरीके से सटीक करता है। वह परिवार के सभी सदस्यों के विचार सुनता है, राय लेता है और अपने अनुभवों के आधार पर

समग्र परिवार के हित में निर्णय करता हैं। उसका दृष्टिकोण उदार और व्यापक होता है। वह अपने परिवार के विकास का पोषक है। परिवार में सुख-शांति बनाए रखना उसका ध्येय है। परिवार के प्रत्येक सदस्य का पोषण, सुरक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य एंव खुशहाली का माहौल आदि का ध्यान रखना उसका कर्तव्य है।

परिवार के विकलांग, रुग्ण, मानसिक, पिछड़े, बेरोजगार, विधवा-विधुर आदि व्यक्तियों का निर्वाह संयुक्त परिवार में मुखिया की सूझबूझ के कारण सरलता से संभव है, जबकि एकल परिवार में ऐसे व्यक्ति या तो बोझ सदृश प्रतीत होते हैं अथवा उनकी देखभाल, पोषण और सुरक्षा का दायित्व निर्वाह बहुत ही कठिन कार्य है। परिवार का मुखिया यथार्थ रूप से सम्मान एवं आदर का पात्र है, उसके संरक्षण में सामाजिक सुरक्षा, सांस्कृतिक प्रशिक्षण और विकास के अवसर स्वतः ही उपलब्ध हो जाते हैं। यही कारण हैं कि ऐसे परिवारों में स्नेह, सहयोग, सहिष्णुता, उदारता और अपनत्व की महत्ता होती है। व्यक्तिगत स्वार्थ और निजी आकांक्षाओं से परे हटकर अगर व्यक्ति अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करे तो कोई कारण नहीं कि किसी को भी अपने परिवार से निराशा मिले। स्मरण रखना चाहिए के गर्म लोहे को ठंडा लोहा ही काटता है। अतः अपनत्व एवं घनिष्ठता परिवार के प्रत्येक सदस्य में होनी चाहिए जिससे अनुशासन बना रहे और नम्रता के साये तले परिवार फलता-फूलता रहे।

संयुक्त परिवारों के विघटन का दुष्प्रभाव इस देश की संस्कृति के साथ परिवार के वृद्धजनों पर भी हुआ है। पहले वृद्धों को आदर और सम्मान प्राप्त था, मगर आज युवा न केवल उन पर झुंझलाते और झल्लाते हैं बल्कि अक्सर उनका तिरस्कार किया जाता है। वृद्ध महिलाओं की हालत तो और भी खराब है। बहुएँ बात-बात पर उन्हें त्रास पहुँचाने से बाज नहीं आती। युवा पीढ़ी को यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि "इतिहास अपने आपको पुनः दोहराता है।"

संयुक्त परिवारों में तीज-त्यौहारों को आनन्द, उमंग और उल्लास के साथ खुले दिल से मनाया जाता है, मगर एकल परिवार में तो बस औपचारिकता का निर्वाह ही काफी है। आज के तीज-त्यौहार-उत्सव मनाए अवश्य जाते हैं किन्तु वह आनन्द कहाँ? प्रसन्नता तो सिर्फ परिवार के संग, उनके बीच रहकर ही

मिल सकती है, क्योंकि पारिवारिक स्नेह, अपनत्व, एकता, सहयोग, अनुशासन, सहिष्णुता और खुशियाँ ही परिवार की अनमोल निधि है, जो भौतिक धन-सम्पति से क्रय नहीं की जा सकती। दीपावली के दीप जलाने, पकवान बनाने, पटाखे छोड़ने, नये वस्त्र बनाने, घर को सजाने-संवारने, लक्ष्मी पूजन करने, रंगोली बनाने का कार्य हो या होली पर हुडदंग मचाने, रंग डालने तथा अन्य तीज-त्यौहारों का महत्त्व संयुक्तता ही चाह के अभाव में सब फीका ही है। रक्षाबंधन और भैयादूज पर बहिन को भाई, करवाचौथ के दिन पत्नी को पति की याद स्वाभाविक है। इसी प्रकार प्रत्येक त्यौहार का अपना अलग महत्त्व इस देश की संस्कृति है।

परिवार के सभी सदस्यों का स्वभाव एक जैसा नही होता। कोई सहनशील होता है, किसी को गुस्सा जल्दी आता है, कोई सिर्फ अपने में ही सीमित है, कोई बात-बात पर हंसता है, कोई जल्दी ही रूठ जाता है, परन्तु परिवार के बुजुर्ग सारी स्थिति संभाल लेते हैं, जिससे परिवार की एकता बनी रहती है। छोटों को भी यह ध्यान रखना चाहिए कि किसी भी हरकत का होना एक सीमा तक ही ठीक है, अन्यथा बात बिगड़ जाने पर उसका संवरना कठिन हो सकता है। परिवार के प्रत्येक सदस्य को अधिकार के साथ अपने कर्त्तव्य का निर्वाह भी ईमानदारी और निष्पक्षता से करना चाहिए।

सम्बन्धों के विकास के साथ स्वभाव में परिपक्वता भी होनी चाहिए। व्यक्तिगत स्वार्थ और ईर्ष्या को तिलांजलि देकर ही परिवार में सुख-शांति और संतोष का माहौल बरकरार रखा जा सकता है। इसके प्रतिफल स्वरूप परिवार में एकता बनी रहेगी। प्रत्येक महिला को चाहिये कि वह अपनी संकीर्ण मनोवृत्ति के कारण शिक्षा-शिल्प-आजादी का दुरुपयोग करने के स्थान पर उनका सदुपयोग करे जिससे परिवार टूटने न पाए।

युवा पीढ़ी को यह समझना आवश्यक है कि घर-परिवार में बुजुर्गों की भी महती आवश्यकता है। उनका तिरस्कार करने के बनिस्पत उनको यथोचित आदर और सम्मान दें। उन्हें त्रास देने के बनिस्पत उनका पोषण और सेवा करें, जिससे उनके हृदय से निकले आशीर्वाद से उनका जीवन सदा सुखी और खुशहाल रह सके। युवावर्ग, विशेष रूप से महिलाओं को यह एहसास होना

चाहिए कि बुजुर्ग ही परिवार के सुदृढ़ सेतु हैं, आधार-स्तम्भ हैं अतः उन्हें आदर और सम्मान से विभूषित रखें। अगर ये स्तम्भ नहीं रहे तो परिवार बिखर जाएंगे तथा अलगाववाद की आंधी से मुकाबला करने की क्षमता युवावर्ग में नहीं रहेगी। फूट का पौधा एक दिन स्वयं के लिए ही नुकसानदेह साबित होगा। प्यार से सींचे पौधे की जड़ें सदा गहरी होती हैं। जब भी पतझड़ आएगी, नई कोंपले भी अवश्य ही फूटेंगी। अन्ततः बुजुर्गों को क्या चाहिए? थोड़ा सा अपनत्व, स्नेह के बोल, यथोचित सम्मान, रुग्णावस्था में सेवा-शुश्रूषा और जरा सी देखभाल........बस! जिस माँ ने बच्चे को नौ माह अपने उदर में जगह दी, शैशवावस्था से बाल्यकाल तक पोषण-सुरक्षा और सेवा की, पिता के वात्सल्य के कारण उसकी शिक्षा सम्पन्न हुई-अर्थाजन से पोषण हुआ, युवावस्था तक प्रत्येक क्षेत्र में पुत्र के लिए पिता ढाल बना रहा, क्या माता-पिता के लिए संतान का कोई दायित्व नहीं?

अपनी संतान के साथ रहने की परिकल्पना अपने आप में कितनी सुखदायक है, उन माता-पिता के लिए जिन्होंने अपने जीवन का एक बड़ा हिस्सा अपने बच्चों और परिवार के प्रति समर्पित किया, मगर इस नई दुनियाँ के अनुभवों ने तो उन्हें चिन्ताग्रस्त ही कियां है। भौतिकवादी युग में जहाँ अलगाववाद का वर्चस्व है- एहसास करवा दिया है कि रिश्तों की महक समाप्त प्रायः हो गई। पीढ़ी का अन्तराल, विचारों का विरोधाभास, व्यक्तिगत स्वतन्त्रता जीवन में अवरोध, संकीर्ण मानसिकता और निजस्वार्थपरता आदि कई ऐसे मुद्दे हैं, जिनके कारण आत्मीय रिश्तों तक की बुनियाद में दीमक लग चुकी है। युवा पीढ़ी के अलगाववादी रवैये पर नियन्त्रण तो शायद संभव नहीं, लेकिन संयुक्त परिवार के सदस्यों का कथन है कि परिवार में अल्प आय के कारण निर्धनता, मुफलिसी, वैचारिक मतभेद आदि का निराकरण तो वक्त के साथ ही मुमकिन है।

अन्ततः मेरे दृष्टिकोण से तो संयुक्त परिवार ऐसा सुरक्षित गढ़ है जहाँ असमर्थ वृद्धों, रुग्ण वृद्धों, अपरिपक्व बच्चों, विधवा स्त्रियों, बेरोजगार युवकों आदि सभी का पोषण, सुरक्षा और देखभाल सर्वाधिक हो सकती है, शारीरिक या मानसिक असमर्थता की अवस्था में अथवा दुर्घटना होने पर जैसी सेवा-

शुश्रूषा संयुक्त परिवार में मिलती है, अन्यत्र संभव नहीं। संयुक्त रूप से रहने से परिवार के प्रत्येक व्यक्ति में अनुशासन, स्नेह, त्याग, प्रेम, स्वाभिमान, सहनशीलता, सहिष्णुता, सहयोग की भावना, आत्मविश्वास और आज्ञापालन आदि की भावनाएँ स्वतः ही अंकुरित होकर वक्त के साथ पल्लवित होती रहती है। संगठन में ही शक्ति निहित हैं।

-द्वारा- 'आस्था' (वरिष्ठ नागरिक सदन),
दिग्विजय नगर, खेमे के कुँए के पास, पालरोड़, जोधपुर-342003(राज.)

पाठक प्रतिक्रिया

मेरा नाम छप जाए

सुश्री दीप्ति जैन

(उम्र 15 वर्ष)

पढ़ने वालों पढ़ो ध्यान से,
छोटा-सा है किस्सा मेरा।
एक कहानी लिखने की,
आफत ने आ मुझको घेरा।।
रात-दिन मैं यही सोचती रही,
कोई कहानी बन जाए।
बस एक बार जिनवाणी पत्रिका में,
मेरा नाम छप जाए।
तैयार हुई लिखने बैठी,
चेताया भावों को मैंने,
कितने ही कागज़ भर डाले।
परन्तु पड़े लेने के देने,
सोचा यदि बनी नहीं कहानी।
कोई कविता ही बन जाए,
हाथ जोड़कर विनति है संपादकजी।
एक दया मुझ पर करना,
कविता मेरी जैसी भी हो,
बस छापने की कृपा करना।

-प्लॉट नं. -7, 'सूरज सदन', सुमन भारती स्कूल के पास,
गुलाब बाड़ी, लाड़पुरा, कोटा(राज.)

बाल-स्तम्भ

उत्थान-पतन

श्री सुभद्र मुनि

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित कहानी को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 5 जनवरी 2010 तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरूणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-250 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-200 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 150 रुपये तथा 100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

एक बार भगवान् महावीर स्वामी अपने विशाल शिष्य-परिवार के साथ मगध देश की राजधानी राजगृह नगर में पधारे। उस नगर का राजा श्रेणिक भगवान् महावीर का परम भक्त था, और भी हजारों नगरवासी भगवान् को अपना मार्गदर्शक और गुरु मानते थे। भगवान् के पदार्पण का समाचार नगर में फैल गया। राजा श्रेणिक सहित हजारों नगरवासी भगवान् को वन्दना करने के लिए तथा उनका उपदेश सुनने के लिए उनके पास पहुँचे। भगवान् ने उपदेश दिया। उसे सुनकर अनेक लोगों ने श्रावक के व्रत तथा अनेक ने मुनि-जीवन के व्रत ग्रहण किए।

राजगृह नगर में ही एक धनसम्पन्न मणिकार रहता था, जिसका नाम नन्दन था। वह भी भगवान् के पास गया। भगवान का उपदेश उसे बहुत प्रीतिकर लगा। उसने आत्मा और परमात्मा के स्वरूप का ज्ञान प्राप्त किया। उसे निश्चय हो गया कि नियमों और व्रतों के द्वारा ही आत्मा पाप से मुक्त बनकर परमात्मा बनती है। उसने भगवान् महावीर से श्रावक-धर्म ग्रहण कर लिया। वह श्रद्धा और भक्ति-भाव से धर्म-ध्यान करने लगा।

कुछ दिन बाद, भगवान् महावीर राजगृह नगर से विहार कर गए। कुछ दिनों तक तो नन्दन मणिकार की श्रद्धा स्थिर रही। परन्तु काफी दिनों तक मुनियों का सत्संग प्राप्त न होने के कारण उसकी श्रद्धा डगमगाने लगी।

एक समय की बात है। नन्दन मणिकार ने तीन दिन का व्रत (तेला)

ग्रहण किया। दो दिन तो अच्छे बीत गए। तीसरे दिन गर्मी की अधिकता के कारण, नन्दन भूख और प्यास से विचलित हो गया। रात्रि का समय था। गर्मी का प्रकोप बढ़ता जा रहा था। नन्दन का मन डांवाडोल होता जा रहा था। उसने विचार किया-धन्य हैं वे लोग जो कुओं और बावड़ियों का निर्माण कराते हैं। उनके शीतल जल को पीकर लोग तृप्त होते हैं। शीतल जल से स्नान करके लोग आनन्द का अनुभव करते हैं। मैं भी प्रातःकाल होते ही पौषध पूर्ण करके महाराज श्रेणिक की आज्ञा प्राप्त करके राजगृह नगर के बाहर सुन्दर, विशाल और सभी सुविधाओं से युक्त बावड़ी का निर्माण कराऊँगा।

नन्दन मणिकार बैठा तो पौषध में था, परन्तु उसका मन बावड़ी के निर्माण की कल्पनाओं में उलझा था। इस प्रकार उसने योजनाएँ बनाते-बनाते रात बिता दी। सवेरा हुआ। नन्दन मणिकार ने पौषध का पारणा किया। फिर वह शुद्ध-श्वेत वस्त्र पहनकर एक मूल्यवान उपहार लेकर राजा श्रेणिक के पास पहुँचा। उसने राजा को उपहार भेंट किया और बावड़ी के निर्माण की आज्ञा प्राप्त की।

राजा की आज्ञा प्राप्त हो जाने पर नन्दन मणिकार ने राजगृह नगर के बाहर एक विशाल भू-खण्ड खरीदा। दूर-देशों के कुशल-शिल्पियों को बुलाकर उसने एक विशाल बावड़ी खुदवाई। उसने चारों कोनों पर, चार शालाओं का निर्माण करवाया। ये चार शालाएँ थीं- भोजनशाला, चित्रशाला, अलंकार शाला और औषध शाला। इस प्रकार नन्दन मणिकार ने बहुत धन खर्च करके एक उत्तम स्थान (बावड़ी) का निर्माण कराया।

अमोद-प्रमोद के समस्त साधन उस बावड़ी की चारदीवारी में मौजूद थे। सभी प्रकार की आवश्यकताएँ और सुविधाएँ सुलभ थीं। लोग उस बावड़ी पर आने लगे। वहाँ पहुँचकर वे ऐसा अनुभव करते कि जैसे वे किसी अन्य लोक में आ गए हैं। वहाँ की सुविधाओं का भोग करते, बावड़ी के शीतल-सुगन्धित जल में स्नान करते।

लोग मुक्त मन से नंदन मणिकार की प्रशंसा करते। इसे सुनकर नन्दन को बड़ा सुख मिलता। वह और अधिक प्रयत्न से बावड़ी को समृद्ध करता। उसका मन पूरी तरह उस बावड़ी से बंध गया। सोते-जागते, उठते-बैठते

उसका मन उसी में उलझा रहता। भगवान् महावीर के पास ग्रहण किये गए उसके व्रत टूट चुके थे, उसकी श्रद्धा नष्ट हो गई थी।

नन्दन वृद्ध हो चुका था। बुढ़ापे में बीमारियां शरीर को दबोच ही लिया करती हैं। इस विषय में नन्दन बहुत अभागा रहा। उसके शरीर में एक साथ सोलह महारोग उत्पन्न हो गए।

नन्दन धनवान् था। धनवान् व्यक्ति के लिए दवाइयों और वैद्यों की क्या कमी, वैद्यों की पंक्ति लग गई। परन्तु कोई भी वैद्य नन्दन को रोग-मुक्त न कर सका। बावड़ी के मोह-जाल में उलझा नन्दन अन्त में इस संसार से विदा हो गया।

मृत्यु जीवन-यात्रा की समाप्ति नहीं है। मृत्यु तो एक छोटा-सा पड़ाव है जहाँ पर जीवात्मा देह-परिवर्तन करता है। प्राणी जिस जीवन को विराम देता है, उस जीवन का अगले जीवन पर पूर्ण प्रभाव पड़ता है। नन्दन इस जीवन से बावड़ी का मोह साथ लेकर अपनी ही बावड़ी में मेंढ़क बन गया। वह मेंढ़क उस बावड़ी के शीतल जल में उछलता-कूदता था। उसे वह बावड़ी बहुत प्रिय लगती थी।

लोग बावड़ी में स्नान करने आते। वे प्रायः नन्दन की प्रशंसा करते। मेंढ़क बार-बार 'नन्दन' शब्द सुनता। उसे अनुभव होता कि यह तो कोई परिचित नाम है। उसने स्मृति पर जोर डाला, और उसे जाति-स्मरण ज्ञान हो गया। उसे अपने पहले जीवन के बारे में पूरा ज्ञान हो गया।

मेंढ़क का मन रो उठा। उसने अपने आपको धिक्कारा- "नन्दन! तेरा इतना पतन हो गया? बावड़ी के मोह ने तुझे मनुष्य से मेंढ़क बना दिया। धिक्कार है तुझे और तेरे मोह को! एक छोटे से कष्ट से दुःखी होकर तूने बावड़ी का निर्माण कराया। धर्म को भूल गया। महावीर को भूल गया।"

मेंढ़क ने अपने ही चिन्तन से आत्मज्ञान प्राप्त किया। उसने मन ही मन महावीर को प्रणाम किया, और पुनः श्रावक धर्म अंगीकार कर लिया। इतना ही नहीं, उसने प्रतिज्ञा कर ली कि जब तक वह जीएगा, दो-दो दिन के व्रत करेगा। इस तरह एक मेंढ़क की देह में रहकर नन्दन कठिन, परन्तु आत्मकल्याणकारी चर्या का पालन करने लगा।

एक बार भगवान् महावीर राजगृह नगर में पधारे। महावीर जब-जब राजगृह में पधारते तो पूरे नगर में त्यौहार की-सी प्रसन्नता फैल जाती थी।

जगह-जगह झुण्ड बनाकर लोग चर्चा करने लगे कि महावीर हमारे नगर में पधारे हैं। बावड़ी में स्नान करते हुए लोग भी भगवान् महावीर के पदार्पण की चर्चा कर रहे थे।

मेंढ़क ने यह बात सुनी। उसकी आँखें आनन्द के आँसुओं से भर गईं। उसका हृदय महावीर के प्रति भक्ति-भाव से पूर्ण हो गया। उसने उनके दर्शनों का निश्चय किया और उछलता-कूदता हुआ गुणशील उद्यान की ओर, जहाँ महावीर विराजे हुए थे, चल दिया।

राजा श्रेणिक भी दलबल सहित महावीर के दर्शनों के लिए जा रहा था। राजमार्ग पर भीड़-भाड़ थी। मेंढ़क भीड़ में फंस गया और एक घोड़े के पैर के नीचे दब गया। वह तत्काल तो नहीं मरा, परन्तु उसे निश्चय हो गया कि उसका मृत्यु समय निकट आ गया है। उसने उसी स्थान से अनन्त भक्ति-भाव से भगवान् महावीर को प्रणाम किया और संथारा कर लिया। कुछ देर बाद उसकी मृत्यु हो गई। वह प्रथम देवलोक में दर्दुर नामक देव बना।

देवता जन्म लेते ही मात्र अड़तालीस मिनट में जवान हो जाते हैं। दर्दुर भी जवान हो गया। उसने अपने ज्ञान-बल से देखा। वह जान गया कि यह दिव्यऋद्धि उसे महावीर के धर्म और उनकी भक्ति ने दी है। वह उसी समय महावीर के दर्शन करने के लिए राजगृह नगर में आया।

दर्दुर देव ने भगवान् महावीर को वन्दन किया। उसने महावीर के दर्शनों के लिए आए हुए विशाल जन-समूह को विभिन्न मनमोहक नाटक दिखाए और अपने लोक को वापस चला गया।

नाटक को देखकर लोग आनन्दमय हो उठे। उनमें यह उत्सुकता जागी कि यह नाटककार कौन था? लोगों की जिज्ञासा को शांत करने के लिए गौतम स्वामी ने भगवान् महावीर से पूछा- "भगवन्! यह नाटक दिखाने वाला कौन था?"

भगवान् महावीर ने नन्दन मणिकार की पूरी जीवन-कथा सुनाई। लोग सुनकर वाह-वाह कर उठे। सभी ने नन्दन मणिकार के त्याग और तप की प्रशंसा की।

इस कहानी से पता चलता है कि उत्थान और पतन जीवन के अंग हैं। संतों का समागम अमृत-बूँटी के समान है। उससे जीवन श्रेष्ठ और

श्रेष्ठतम बनता है। एक क्षण आता है जब आत्मा के भीतर ही परमात्मा का अवतरण हो जाता है। कभी-कभी धर्मात्मा व्यक्ति भी लम्बे समय तक सत्संग का अवसर न पाकर धर्म से विमुख हो जाता है। जीवन में धर्म का दीपक जलाए रखने के लिए निरन्तर सत्संग आवश्यक है। निरन्तर सत्संग से धर्मरुचि बढ़ती है।

प्रश्न :

1. भगवान् महावीर का उपदेश सुनकर नन्दन मणिकार ने क्या किया?
2. उसकी श्रद्धा कम क्यों होने लगी?
3. तेले में भूख-प्यास से परेशान होकर नन्दन ने क्या विचार किया?
4. बावड़ी में क्या-क्या सुविधाएँ थीं?
5. नन्दन मरकर क्या बना?
6. मेंढ़क को आत्मज्ञान कैसे प्राप्त हुआ?
7. मेंढ़क की मृत्यु, कब और कैसे हुई?
8. मन में धर्म का दीप जलता रहे, इसके लिए क्या करना चाहिए?

- 'ज्ञानभरी कहानियाँ' पुस्तक से साभार

बाल-स्तम्भ [अक्टूबर-2009] का परिणाम

जिनवाणी के अक्टूबर-2009 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'दयालु एवं साहसी यतीन्द्र' कहानी के प्रश्नों के उत्तर 52 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेता इस प्रकार हैं। पूर्णांक 20 में से दिये गये हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-250/-	दीप्ति जैन-कोटा	20
द्वितीय पुरस्कार-200/-	शिल्पा जैन-शम्भूपुरा	19.5
तृतीय पुरस्कार- 150/-	नरेशचन्द जैन-नदबई	19.25
सान्त्वना पुरस्कार- 100/-	रूपमाला छाजेड़-समदड़ी	19
	रूपल जैन-भीलवाड़ा	19
	सुनयना गेलड़ा-बोरावड़	19
	संदीप छाजेड़-समदड़ी	19
	सिमरन जैन-अजमेर	19

जन्म शताब्दी वर्ष

अविश्रान्त साधक उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि जी म.सा.

श्री पुष्पेन्द्र मुनि जी

धर्म और कर्म की अद्भुत स्थली मेवाड़ भूमि के सेमटाल (वर्तमान में पुष्कर नगर) गांव के निवासी सूरजमल पालीवाल की धर्मपत्नी वाली बाई ने आम्र-स्वप्न देखकर 17 अक्टूबर 1910 अश्विनी शुक्ला चतुर्दशी वि.स. 1967 को अपनी कुक्षि से अंबालाल को जन्म दिया। संघर्षमय जीवन-यात्रा का प्रथम पड़ाव माता के स्वर्गवास से शुरु हुआ। अंबालाल के मन में विचार उत्पन्न हो गया कि संसार असार है। उसके मन में वैराग्य का भाव जागृत हो जाता है एवं पहुँच जाता है महास्थविर गुरुदेव श्री ताराचंद जी म.सा. के श्री चरणों में। जैन धर्म का अध्ययन करते हुए मात्र 14 वर्ष की अल्पायु में 12 जून 1924 ज्येष्ठ शुक्ला 10 वि.सं. 1981 को गढ़ जालौर में जैन भागवती दीक्षा अंगीकार कर अपना नाता गुरु से सदा-सदा के लिए जोड़ दिया और नाम रखा गया पुष्कर मुनि। भारतीय संस्कृति में तीन धाराएँ हैं- वैदिक, जैन एवं बौद्ध। जैन एवं बौद्ध धाराओं को श्रमण संस्कृति के प्रवाह में उल्लिखित किया जा सकता है। गुरुदेव श्री वैदिक एवं श्रमण संस्कृति की दो धाराओं के अनूठे सेतु थे। ब्राह्मण कुल में जन्म लेकर वैदिक संस्कार प्राप्त किए, परन्तु जैन दीक्षा ग्रहण करने के बाद जैन साधना-पद्धति पर बढ़ते गये। गीता एवं उपनिषद् के घोषों के बीच आगम की गाथाओं एवं नमोक्कार महामंत्र का निनाद उनके व्यक्तित्व को एक विशिष्टता प्रदान करता था।

दीक्षा ग्रहण के पश्चात् विद्यार्जन में लग गए। बाल्यावस्था, तीक्ष्ण बुद्धि और विद्याध्ययन के प्रति प्रेम इन तीनों का संगम होने से अपने भावी जीवन के महल का बड़ी वीरता के साथ निर्माण करने लगे। 19 वर्ष की आयु में संस्कृत अध्ययन के साथ-साथ वैदिक, बौद्ध, न्याय आदि दर्शनों का पठन-पाठन किया। तर्कशक्ति एवं अद्भुत ग्रहणशीलता होने के कारण 9 भाषाओं के ज्ञाता हो गए और साथ ही आपका साहित्य-लेखन पद्य एवं गद्य में प्रारम्भ हुआ।

135 पुस्तकों के लेखक कहलाने वाले इस महासंत ने 'जैन कथा' नामक 111 भाग का लेख़न कर इतिहास में अमर नाम स्थापित किया।

उन्होंने हर परिस्थिति में दिल और दिमाग को समत्व से भावित रखा। सुख में गर्वित नहीं हुए, दुःख में घबराये नहीं। अपितु हर परिस्थिति का डटकर मुकाबला किया। संघर्षों को जीवन का पर्याय और संभावनाओं को प्रेरणा मानते हुए वे सदा आगे बढ़े। आपश्री के उपेदश प्रेम, अहिंसा, सहिष्णुता पर आधारित होते थे। 30 अगस्त 1976 भाद्रपद शुक्ला 6 वि.सं. 2033 संवत्सरी महापर्व के पावन दिवस पर आपश्री उपाध्याय पद से सुशोभित हुए। उदयपुर के श्री तारक गुरु जैन ग्रन्थालय के अलावा सम्पूर्ण भारत में शिक्षा, धर्म एवं सामाजिक क्षेत्रों में आपश्री द्वारा किए गए विशाल, व्यापक तथा ठोस कार्यो की संख्या 72 से भी अधिक है। पूना विश्वविद्यालय में आपकी प्रेरणा से 'जैन दर्शन पीठ' की स्थापना हुई। शिक्षा के लिए आपका जीवन पूर्ण समर्पित था। 75 बालक-बालिकाओं को दीक्षा प्रदान कर आपने पुण्य का संचय किया।

वर्ष 1984 में दिल्ली वर्षावास के दौरान आपकी हीरक जन्म-जयन्ती पर राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने आपकी शालीनता, विद्वत्ता तथा साधना से प्रभावित होकर 'विश्व संत' की उपाधि से सम्मानित किया था। हिमालय जैसी सुदृढ़ प्रलम्ब काया, गम्भीर घोषयुक्त वाणी और बालकों जैसी निर्दोष मुस्कुराहट आपके व्यक्तित्व का प्रमुख आकर्षण था। स्वयं की साधना को प्रमुख स्थान देकर आप लोक-कल्याण में प्रवृत्त होते थे। दूसरों को उपदेश देने या तारने की चिन्ता में अपनी साधना नहीं भूलते थे। आपश्री ऐक्य के सृदृढ़ समर्थक थे। श्रमण संघ की रचना में सदा ही मौलिक भूमिका अदा की। वे एक ओर कबीर जैसे फक्कड़ थे तो दूसरी ओर सूर जैसे भक्त हृदय के धनी भी थे। असहाय, दुःखी और पीड़ित जनमानस के लिए आपका हृदय माधुर्य से ओत-प्रोत था तो अन्याय, अत्याचार आदि के प्रति आप कठोर भी थे। अध्ययन-अध्यापन के साथ-साथ सिद्धान्तों को जन-जन तक पहुँचाने का जो कार्य संन्यासी का होता है, वह उपाध्याय श्री ने एक यायावर की भांति वि.सं. 1981 (सन् 1924) से जीवन के अंतिम दिनों तक वि.सं. 2049 (सन् 1993) तक लगभग 69 वर्ष तक बिना रुके, बिना झुके एवं बिना थके किया। इस देश के

विभिन्न प्रान्तों की माटी को अपने पगतलों का स्पर्श देकर उसे चंदन सा सुरभित करते हुए जन जागरण का अलख जगाते रहे। स्वदेश प्रेम होने के कारण जीवन पर्यन्त खादी को धारण किया।

विश्वभर में चमत्कारी महासंत के रूप में पहचाने जाने वाले इस सिद्धयोगी के मुख से जो भी निकल जाता वह कभी निष्फल नहीं होता था। प्रतिदिन प्रातः, मध्याह्न ओर रात्रि में नवकार महामंत्र का जाप करने के पश्चात् जब आपश्री मंगल पाठ सुनाते उस समय दुकान खुली पड़ी है, तवे पर रोटी जल रही है, पर कोई परवाह नहीं, कोई फिक्र नहीं, पुरुष और महिलाएँ दौड़ पड़ते। श्रद्धा का सैलाब इतना था कि श्रद्धालुओं को आपके चेहरे के सिवाय कुछ भी दिखाई नहीं देता था। मंगलपाठ श्रवण करने के समय उस शहर, नगर, गांव में मानो जनता का समूह दौड़-दौड़ कर आपश्री के पास आता और सिंह जैसी गूंजती आवाज में मंगलपाठ सुनाते। गुरुदेव श्री को 'नवकार महामंत्र के आराधक' के नाम से भी जाना जाता है। गुरुदेव श्री ने नवकार की सतत आराधना से समाज को एकता का सन्देश दिया और उनका जीवन भी एकता को समर्पित रहा। 2 अप्रेल, 1993 को आपश्री ने समाधिमरण का वरण करने के हिए संथारा ग्रहण किया और अविचल योग स्थिति में 48 घंटे पश्चात् जीवन दीप शांत हो गया। जहाँ पर आपका पार्थिव शरीर अग्नि को समर्पित किया गया वह स्थल स्मारक के रूप में 'श्री पुष्कर गुरु पावन धाम' के नाम से उदयपुर में विश्रुत है। आपश्री 83 वर्ष जिए, पर शान से जिए। जीवन का आदि, मध्य और अंत सब ज्योतिर्मय रहा। ऐसे मनोयोगी युगपुरुष ने समाज, राष्ट्र तथा सम्पूर्ण मानव समाज को जो अमर और चिर स्थायी देन दी है उसका सम्पूर्ण आकलन असम्भव है।

उपाध्याय श्री के पौत्र शिष्यों की प्रेरणा से 'उपाध्याय पुष्कर मुनि जन्म शताब्दी वर्ष' के शुभारंभ अवसर पर इतिहास में प्रथम बार देशव्यापी सामूहिक रूप से देश के 25 राज्यों के 250 से भी अधिक स्थलों पर जन्म-दिवस की पूर्व प्रातःकालीन वेला 2 अक्टूबर 2009 को नवकार महामंत्र महाजाप आयोजित किया गया।

-श्री तारक गुरु ग्रन्थालय, गुरु पुष्कर मार्ग, उदयपुर-313001 (राज.)

आओ स्वाध्याय करें

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा आयोजित

'आओ स्वाध्याय करें' त्रैमासिक प्रतियोगिता (23) का परिणाम

जिनवाणी के अक्टूबर, 2009 अंक में आयोजित त्रैमासिक प्रतियोगिता (23) में 227 प्रतियोगियों ने भाग लिया। यह प्रतियोगिता जिनवाणी के जुलाई से सितम्बर 2009 के अंकों पर आधारित थी। सामान्य श्रेणी एवं युवा श्रेणी के सभी पुरस्कार ड्रा द्वारा निकाले गये हैं। परिणाम इस प्रकार हैं-

सामान्य श्रेणी

प्रथम पुरस्कार- 1001/- रुपये	रेणु बोहरा-दिल्ली	(50)
द्वितीय पुरस्कार- 501/- रुपये	गीता जैन-जालंधर	(50)
तृतीय पुरस्कार- 251/- रुपये	गणपत सुराणा-जोधपुर	(49)

सान्त्वना पुरस्कार- 100/- रुपये प्रत्येक

यू.पी.बरडिया-धुले	(49)	कमलेश गेलड़ा-अजमेर	(49)
मंजू श्री सुराणा-जोधपुर	(49)	किरण कुम्भट-जोधपुर	(49)
विजयमल मेहता-जोधपुर	(49)	शांतिलाल महात्मा-चितौड़गढ़	(49)
शोभा कोठारी-धुले	(49)	शैली कुम्भट-जोधपुर	(49)
सरोज रूणवाल-धुले	(49)	दर्शिका टाटिया-जलगांव	(49)

युवा श्रेणी

प्रथम पुरस्कार- 1001/- रुपये	संगीता दरडा-जोधपुर	(50)
द्वितीय पुरस्कार- 501/- रुपये	गिरीश प्रजापति-कोटा	(49)
तृतीय पुरस्कार- 251/- रुपये	चंचल गोलेछा-जयपुर	(49)

सान्त्वना पुरस्कार- 100/- रुपये प्रत्येक

कनिका मेहता-जोधपुर	(49)	राहुल कुम्भट-जोधपुर	(49)
नीलम जैन-अजमेर	(49)	नवरती देवी -रतकुड़िया	(49)
अमित अशोक जैन-धुले	(49)	आकांक्षा प्रजापति-कोटा	(49)
मीना मेहता-पीपाड़	(48)	सौ. आरती मुथा-अमरावती	(48)
अमन जैन-सवाईमाधोपुर	(48)	राजेश लुणावत-आचीणा	(48)

49 अंक प्राप्त करने वाले अन्य प्रतियोगी (सामान्य श्रेणी से):- कंवलराज मेहता-जोधपुर, प्रमिला पोखरणा-धुले, अणची देवी-पाली।

48 अंक प्राप्त करने वाले अन्य प्रतियोगी:- यश एस.आचलिया–धुलिया, खुशी लुणावत–जोधपुर, बुलबुल जैन–खेरली, कशिश जैन–आलनपुर, कविता जैन–नवी मुम्बई, कु.मयुरी एस. जैन–धुले, कु.दिव्या सतीश जैन–धुले, मंजुला जैन–भीलवाड़ा, शिल्पा जैन–शम्भुपुरा, विकास छाजेड़–मैसूर, जिया ड़ोसी–ब्यावर, नितेश जैन–सवाईमाधोपुर, पंकज गोलेछा–जयपुर, पल्केश कटारिया–पाली, श्रीमती उपमा चौधरी–अजमेर, शोभा कवाड़–पाली, शैलेश बी.जैन–धुलिया, समता विकास ललवानी–सिकंदराबाद, सौ.योगिता खीवंसरा–धुले, सौ.मंगला सिंघवी–दिगरशिवर, सौ.मनीषा जैन–उदनाग्राम, सोनू जैन– सवाईमाधोपुर, सौ. लता सतीश आंचलिया–धुले, सुमेरजी लुणावत–पांचला, दीप्ति जैन–कोटा, तेजस एस.जैन–धुलिया, जयमाला कांकरिया–पाली, जयमाला जैन– सवाईमाधोपुर, नीव कवाड़–पाली, नरेशजी कवाड़–पाली, अरूणा कटारिया–पाली, अमिता जैन–जोधपुर, आयुशी लुणावत–आचीणा, आभा जैन–खेरली, अशोक बाबूलाल जैन–सूरत, इचरज देवी–जयपुर, बाबूलाल रतनचंद जैन–शिवनगर, कंचन लोढ़ा–नासिक, कमला सेठिया–मसूदा, मधु ड़ोसी–मसूदा, मुन्नालाल भण्डारी–जोधपुर, हर्षला इंदरचंद जैन–धुले, पुष्पा कांकरिया–पाली, पुखराज सेठिया–मसूदा, प्रमिला बरड़िया–धुले, राकेश कुमार संचेती–मसूदा, राजुल जैन–गंगापुर, रतनलाल रांका–अजमेर, सरला कांकरिया–जलगांव, सौ.अपूर्वा राकां–जलगांव, सुबोध मोहनोत–नवसारी, सुशीला इ.राकां–जलगांव, सुनंदा लोढ़ा–धुले, वीरेन्द्र कुम्भट–जोधपुर, चुकीदेवी दरड़ा–जोधपुर, जयसिंह छाजेड़–समदड़ी, नोरतमल चंगेरिया–अजमेर, अश्विनी चंड़ालिया–जालना, अनिता दुग्गड़–धुले।

47 अंक प्राप्त करने वाले अन्य प्रतियोगी:- रूचिका लुणावत–जोधपुर, रूपल जैन–भीलवाड़ा, कु. कोमल जैन–धुलिया, मधुबाला–आचीणा, श्रिया जैन–बूँदी, शिल्पा जैन–रतकूड़िया, विपुल बाफना–जोधपुर, विजय लुणावत–इंदौर, पुष्पा लुणावत–पांचला, पल्केश कटारिया–पालीमारवाड़, प्रीति जैन–भरतपुर, श्रीमती भावना जैन–जयपुर, राकेश सामर–भीलवाड़ा, सौ.अरूणा बैद–अमरावती, सुधा संचेती–मसूदा, सुश्री भाग्यवंती–जोधपुर, ड़ी अनिल खाबिया–मैसूर, श्वेता जैन–कोटा, नीलू जैन–लुधियाना, नवकार जैन–पांचला, कंचन पी. मेहता–जोधपुर, दिनेश जैन–भीलवाड़ा, तिलोक चंद–आचीणा, हस्तीमल पारख–मैसूर, हेमलता जैन–ब्यावर, राहुल दरडा–मैसूर, शशि जैनगुगल्या–लश्कर, सरोज नाहर–दिल्ली, सुमिता बोरा–धुले, उषा चौरड़िया–नईदिल्ली, तेजल जैन–भीलवाड़ा, जयकुमार छाजेड़–मैसूर, नेणचंद बाफना–जोधपुर।

46 अंक प्राप्त करने वाले अन्य प्रतियोगी:- ऋषभ जैन–सुमेरगंजमण्ड़ी, माधुरी जैन–बूँदी, प्रियंका नाहर–जोधपुर, दिव्या ड़ागा–जयपुर, विनिता कातेला–बीकानेर, चित्रा जैन–आलनपुर, पूजा जैन–समीधी, संजना दरड़ा–गोटन, सुनीता तातेड़–जोधपुर, सुनीता लुणावत–आचीणा, नवरत्न ओस्तवाल–गोटन, गौरव जैन–कोटा, गजराज सेठिया–धनारीकला, पदमचंद जैन–नदबई, पुष्पा देशलहरा–पांडिचेरी, पुष्पा गोलेछा–ब्यावर, प्रकाश जैन–हैदराबाद, राज जैन–नईदिल्ली, शशिकला लुणावत–नासिक, शैला लुंकड़–उमरगांवरोड़, सौ.विमलाबाई बरड़िया–बोदवड़, सुरेश जैन–खेरली, सुशील लुंकड़–उमरगांवरोड़, सुनीता नवलखा–कोटा, स्नेहलता प्रवीणशाह–बेलगाम, ज्योति अशोक कोटेचा–बोदवड़, अनिल जैन–कोटा, आशा अग्रवाल–जयपुर, ललिता गादिया–हैदराबाद।

45 या इससे कम अंक प्राप्त करने वाले अन्य प्रतियोगी:- मोनिका गोलेछा–ब्यावर, सुधा बिराणी–पुणे, सुनीता जैन–ब्यावर, ड़ॉ.मनीष जैन–खेरली, अमीता राजेश जैन–इंदौर, गौरव जैन–जयपुर, दिनेश जैन–जोधपुर, विभा खावाणी–बोरावड़, पंकज गांग–जोधपुर, संगीता खाबिया–मैसूर, सीमा जैन–कोटा, नीरा भण्डारी–ब्यावर, नरेश जैन–नदबई, अखिलेश मेहता–जोधपुर, कुणाल मेहता–जोधपुर, विरक्ता गुंजन–धनोप, रीमा जैन–लुधियाना, श्रीमती अल्पना धाकड़–निम्बाहेड़ा, राखी लोढ़ा–भायंदर, सुनयना गेलड़ा–बोरावड़, सुनील जैन–मैसूर, सतेन्द्रकुमार जैन–हिण्डौन, आकाश मेहता–जोधपुर, रक्षिता जैन–सूरवाल, दीपक कटारिया–भीलवाड़ा, अनिन मेहता–जोधपुर, अनुपमा पारख–चिदम्बरम, ड़ॉ.नीतू पारख–बालोतरा, उज्ज्वला जैन–जोधपुर, दीपा जैन–जयपुर, कु.दीपा तेजमल बागमार–फत्तेपुर–जामनेर, रचना सुरेश भण्ड़ारी–जोधपुर, पूजा जैन–खेड़ली, विवेक जैन–हरसाना, निरज जैन–हरसाना, सुमेर बैद–धनारीकलां, विमल राणुलाल कोचर–नासिक, विमलप्रभा खींचा–ब्यावर, विनय जैन–रायपुर, निर्मला गादिया–आगरा, नितिन जैन–जयपुर, हेमराज सुराणा–जयपुर, सुधा ड़ागा–बीकानेर, सुनीता दुस्साज–जयपुर, पिस्ता गोलेछा–जयपुर, विद्या संघवी–बदनावर, विमला मादरेचा–भीलवाड़ा, विजयलक्ष्मी मुणोत–जयपुर, निर्मला बाफना–जोधपुर, निर्मलादेवी सुराणा–बीकानेर, पुष्पा गांधी–जोधपुर, प्रेमलता चौधरी–भीलवाड़ा, रमणलाल छाजेड़–धुले, सुनीता कुमट–ब्यावर, दशरथमल चोरडिया–बैंगलोर, कलावती चौरड़िया–जलगांव, मीना चोरडिया–चेन्नैइ, मनीला पारख–जयपुर, विमला हीरावत–जयपुर, प्रमिला

मेहता–दूदू, रोहिता जैन–उज्जैन, राजकुमारी लोढ़ा–जयपुर, श्रुति जैन–पीपाड़, सरोज खाबिया–मैसूर, बाबूलाल जैन–भरतपुर, मधु सिंघवी–गाजियाबाद, गोतम सिंहजी चीपड़–दूदू, गुणमाला जैन–सूरवाल, मोहनलाल जैन–अजमेर, सौ.विमला भण्ड़ारी–भंड़ारा, देवेन्द्रनाथ मोदी–जोधपुर, गोतममल गांग–जोधपुर, बसंता मदनलाल संकलेचा–नरड़ाणा, मदनलाल संकलेचा–नरड़ाणा, आशा जैन–पीपाड़, दिलरूपचंद भंड़ारी–जोधपुर, कंचनबाई ड़ोसी–जामनेर।

सही उत्तर

उपर्युक्त त्रैमासिक प्रतियोगिता (23) के प्रश्नों के सही उत्तर जिनवाणी अंक एवं उसके पृष्ठ के साथ यहाँ दिए जा रहे हैं –

उत्तर	माह/पृष्ठ संख्या	उत्तर	माह/पृष्ठ संख्या
1. समता	सितम्बर/69	2. प्रदूषण	अगस्त/ 6
3. वृद्धजन	सितम्बर/ 8	4. गुरु	जुलाई/ 96
5. पड़ौसी	सितम्बर/ 14	6. मानवता	जुलाई/ 40
7. सेवा	सितम्बर/ 40	8. तप	अगस्त/ 95
9. तृष्णा	सितम्बर/ 10	10.साधु–साध्वी	जुलाई/6
11.भीतर	सितम्बर/ 16	12.अनंगवज्र	अगस्त/ 26
13.सेवं	सितम्बर/ 9	14.मीरा	अगस्त/ 59
15.कमाली	जुलाई/ 49	16.मोक्ष	जुलाई/ 28
17. चौर्य–कर्म	जुलाई/ 45	18. पैसा	जुलाई/ 15
19. विक्रम साराभाई	सितम्बर/ 68	20. शरीर	अगस्त/ 13
21. वैयावृत्य	अगस्त/ 64	22. परोपग्रह	जुलाई/ 22
23. संस्कृति	अगस्त/ 51	24. लौकेषणा	अगस्त/ 18
25. छांदस	सितम्बर/ 102	26.अनेकान्तवाद	अगस्त/ 33
27. प्रभव	जुलाई/ 45	28. व्यसन	सितम्बर/ 18
29. वाणी	सितम्बर/ 67	30. गणधर गौतम	जुलाई/ 42
31. 2	अगस्त/ 10	32. 0	सितम्बर/ 33
33. 59	अगस्त/ 14	34. 84	जुलाई/ 85 व 92
35. 12	अगस्त/ 52	36. 7	जुलाई/ 41
37. 99	सितम्बर/ 60	38. 64	सितम्बर/ 58
39. 60	सितम्बर/ 23	40. 184	जुलाई/ 59
41. हाँ	अगस्त/ 39	42. ना	सितम्बर/ 9
43. ना	सितम्बर/ 19	44. ना	जुलाई/ 42
45. ना	अगस्त/ 70	46. ना	जुलाई/ 12
47. ना	सितम्बर/ 12	48. ना	सितम्बर/ 16
49. हाँ	सितम्बर/ 6	50. हाँ	जुलाई/ 7

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड

गजेन्द्र निधि की इकाई
(तत्त्वावधान-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ)
प्रधान कार्यालय : घोड़ों का चौक, जोधपुर-342 001 (राज.)
फोन - 0291-2630490, फैक्स : 0291-2630490, Website: jainratnaboard.com, Email- info@jainratnaboard.com

आगामी परीक्षा (Examination Date) 10-01-2010	आवेदन-पत्र (Application Form)	आवेदन की अन्तिम दिनांक (Last Date of Application) 20-12-2009

1. परीक्षार्थी का नाम श्री/श्रीमती/सुश्री (Name of Candidate Shri/Smt./Miss)________________
2. पिता/पति का नाम (Name of Father/Husband)________________
3. आयु (Age)______________ जन्म-तिथि (Date of Birth)________________
4. शैक्षणिक योग्यता (Academic Qualification)________________
5. पत्राचार का पूरा पता (Complete Postal Address)________________

____

जिला (Dist.)__________ प्रान्त (State)____________ पिन कोड नं. (Pin Code No.) ☐☐☐☐☐☐

फोन नं. (Ph. No.) STD Code________(R.)______________(O.)______________

अनिवार्य रूप से भरें :-(M.)______________ Email : ______________

6. पूर्व परीक्षार्थी निम्न जानकारी अपने प्रवेश-पत्र अथवा अंक तालिका से अवश्य भरें।
   (Old Student Please Fill-up following information as per Admission Card or Mark-Sheet)
   पूर्व परीक्षा की दिनांक ___/___/_______ रोल नं. _________ कक्षा __________ प्राप्तांक __________
   (Date of Examination Which Appear) (Roll No.) (Class) (Get Marks)
7. कक्षा (जिसमें परीक्षार्थी प्रवेश चाहता है)______________________ (पूर्व में उत्तीर्ण कक्षा के आगे के लिये आवेदन करें)
   (Class to be appeared)
8. परीक्षा केन्द्र (Examination Centre)________________ केन्द्र कोड संख्या (Centre Code No.) ☐
9. परीक्षा का माध्यम (Medium of Examination) हिन्दी (Hindi) ☐ अंग्रेजी (English) ☐

मैं इस बोर्ड द्वारा आयोजित धार्मिक परीक्षा में भाग लेना चाहता/चाहती हूँ। मैं बोर्ड की परीक्षा के सभी नियमों व निर्देशों का पालन करूँगा/करूँगी।

(I want to participate in Religious examination as conducted by this Board. I shall abide by all rules & regulations of Board Examination)

दिनांक (Date)___/___/_______

आवेदक के हस्ताक्षर
(Signature of Applicant)

नोट : 1. परीक्षार्थी की न्यूनतम आयु 10 वर्ष होना अनिवार्य है। (Candidate must have 10 years of age.)

2. सुचारु व व्यवस्थित परीक्षा हेतु अन्तिम दिनांक के पूर्व अपना आवेदन जमा करायें।

(For well manage Application Form should be submitted on or before the last date. Please Co-oprate us.)

आचार्य हस्ती शताब्दी स्वाध्याय प्रतियोगिता

'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' पर आधारित

द्वितीय खुली किताब प्रतियोगिता

अध्यात्मयोगी, युगमनीषी, आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के जीवन, दर्शन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर आधारित पुस्तक 'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' पर द्वितीय खुली किताब प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। प्रतियोगिता के सम्बन्ध में प्रमुख बिन्दु इस प्रकार हैं-

सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले को

100000 रुपये का बम्पर पुरस्कार

अन्य पुरस्कार

द्वितीय पुरस्कार	: 51000 रुपये	षष्ठ पुरस्कार	: 7000 रुपये
तृतीय पुरस्कार	: 31000 रुपये	सप्तम पुरस्कार	: 5000 रुपये
चतुर्थ पुरस्कार	: 21000 रुपये	अष्टम पुरस्कार	: 3000 रुपये
पंचम पुरस्कार	: 11000 रुपये	नवम पुरस्कार	: 2000 रुपये

सर्वाधिक अंक पाने वाले 300 प्रतियोगियों की पुनः लिखित परीक्षा होगी, उसी के आधार पर उपर्युक्त वरीयता पुरस्कार तथा उस परीक्षा में न्यूनतम 50 अंक पाने वाले प्रत्येक प्रतियोगी को 500 रुपये का सान्त्वना पुरस्कार

प्रश्न-पुस्तिका के वितरण का शुभारम्भः	30.12.2009
प्रश्न-पुस्तिका वितरण की अन्तिम तिथि :	10.08.2010
प्रश्न-पुस्तिका जमा कराने की अन्तिम तिथि :	22.09.2010
द्वितीय चरण की लिखित परीक्षा :	17.12.2010
परीक्षा परिणाम की प्रस्तावित तिथि :	10.01.2011
सम्मान समारोह की प्रस्तावित तिथि :	17.01.2011

प्रश्न-पुस्तिका का मूल्य 20/- रुपये
डाक द्वारा मंगाने पर-30/-रुपये

परीक्षार्थियों के लिए पुस्तक का मूल्य - 100/- रुपये
डाक द्वारा मंगाने पर-160/-रुपये

प्रश्न-पुस्तिका जमा कराने का पता

संयोजक, आचार्य हस्ती स्वाध्याय प्रतियोगिता

सामायिक-स्वाध्याय भवन, घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.) 342001

फोन- 0291-2630490

निवेदक

अध्यक्ष	महामंत्री	संयोजक	सह संयोजक
सुमेरसिंह बोथरा	पूरणराज अबानी	सुशीला बोहरा	धर्मचन्द जैन
फोन : 0141-2568830	फोन : 0291-2432218	फोन : 0291-5108799	फोन : 0291-2630490
9414048830 (मो.)	9314710985 (मो.)	9414133879 (मो.)	9351589694 (मो.)

संवाद (26)

माह सितम्बर-2009 की जिनवाणी में पूछे गये निम्नांकित प्रश्न का एक उत्तर यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है-

प्रश्न-रास्ते में कहीं मरा हुआ पशु पड़ा हो अथवा बीमार पशु हो तो उस समय हमारा क्या कर्त्तव्य बनता है तथा हम किन संस्थाओं से सम्पर्क कर सकते हैं?

- राजीव माथुर

पुष्पा मेहता, पीपाड़ सीटी- रास्ते में मृत पशु पड़ा है तो हम उसे तुरन्त वहाँ से हटाने की व्यवस्था करेंगे। मृत कलेवर की दुर्दशा न हो, उस पर दूसरे पशु एवं पक्षी न मंडराएँ, वातावरण दूषित न हो, इसके लिए हम नगरपालिका या हरिजन आदि को सूचना करके तुरन्त उस मृत कलेवर को हटाने की व्यवस्था करेंगे।

अगर पशु बीमार है या किसी दुर्घटना का शिकार है तो हम तुरन्त पशु का इलाज करवाने की व्यवस्था करेंगे। अगर पशु के तन में कीड़े पड़ गए हैं तो उस घाव वाले स्थान पर केरोसिन या अन्य दवाई डालकर उसे तुरन्त राहत पहुँचाने की कोशिश करेंगे तत्पश्चात् पशु चिकित्सालय ले जाकर उसका इलाज करवायेंगे। यथासंभव हम उसकी सेवा करने की कोशिश करेंगे। बीमार पशु के प्राण बचाने का प्रयास करेंगे। सभी दानों में अभयदान श्रेष्ठ है। अगर हमसे व्यवस्था न हो सके तो हम क्षेत्रिय संस्था जो पशुओं को संरक्षण प्रदान करती है, उसे सूचना करेंगे। बीमार पशु हो या पक्षी, सभी की सेवा करना हमारा कर्त्तव्य बनता है। पशु तो मात्र अपनी संवेदना व्यक्त कर सकते हैं। इससे आगे कुछ भी नहीं। मानव ही एक ऐसा प्राणी है जो मानव के साथ-साथ पशु-पक्षियों की सेवा तन, मन व धन से कर सकता है तथा उनका संरक्षक बन सकता है।

बीमार पशु एवं पक्षी हमारे शरणागत होते हैं और शरणागत की रक्षा करना प्रत्येक का कर्त्तव्य होता है।

समाचार-विविधा

विचरण-विहार एवं विहार दिशाएँ : एक नजर में

(1 दिसम्बर, 2009)

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 9	: पालड़ी-अहमदाबाद का यशस्वी चातुर्मास सम्पन्न कर अहमदाबाद के विभिन्न उपनगरों को चरण-सरोजों से पावन करते हुए पौष शुक्ला चतुर्दशी पर पालनपुर पधारने की संभावना है।
परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 6	: ब्यावर चातुर्मास सम्पन्न कर मार्गवर्ती क्षेत्रों को फरसते हुए सोजत की ओर बढ़ रहे है। आचार्य हस्ती जन्म शताब्दी पर पाली पधारने की संभावना है।
साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा 6	: घोड़ों का चौक, जोधपुर में वर्षावास पूर्ण कर कुछ दिन पौषधशाला विराजे। कांकरिया भवन होते हुए चौ.हा. बोर्ड पधारने की संभावना है।
सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4	: भकरी चातुर्मास सम्पन्न कर नरमा, राबड़ियाद आदि क्षेत्रों को पावन करते हुए पीह पधारे हैं। पौष शुक्ला चतुर्दशी पर अजमेर विराजें, ऐसी संभावना है।
व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 12	: वर्द्धमान नगर, नागपुर का चातुर्मास सम्पन्न कर नागपुर शहर के अन्यान्य क्षेत्रों को पावन कर रहे हैं। पौष शुक्ला चतुर्दशी पर नागपुर विराजें, ऐसी संभावना है।

तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4	:	लक्ष्मीनगर, जोधपुर का चातुर्मास सम्पन्न कर शक्तिनगर, रामनगर, शिवशक्तिनगर, पावटा क्षेत्र स्पर्श कर साध्वीप्रमुखा जी की सेवा में पधारे हैं।
विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 5	:	मलाड़, मुम्बई का चातुर्मास सम्पन्न कर मुम्बई महानगर के अन्य नगरों को लाभान्वित कर वापी की ओर विहार चल रहा है।
विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 4	:	कोटा का चातुर्मास सम्पन्न कर बून्दी क्षेत्र को फरसते हुए देई पधारे हैं। आगे पोरवाल क्षेत्र की ओर विहार सम्भावित है। पौष शुक्ला चतुर्दशी पर सवाईमाधोपुर विराजने की संभावना है।
व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 13	:	पालड़ी-अहमदाबाद का चातुर्मास सानन्द सम्पन्न कर अलग-अलग सिंघाड़ों में पौष शुक्ला चतुर्दशी हेतु पाली एवं पीपाड़ की ओर विहार चल रहा है।
महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 7	:	जयपुर का चातुर्मास सम्पन्न कर शहर के ही विभिन्न क्षेत्रों को फरसते हुए पौष शुक्ला चतुर्दशी पर लाल भवन, जयपुर विराजने की संभावना है।
व्याख्यात्री महासती श्री शांतिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 3	:	मणिनगर-अहमदाबाद का चातुर्मास सम्पन्न कर मांजलपुर होते हुए बड़ौदा पधार रहे हैं। पौष शुक्ला चतुर्दशी पर सूरत विराजने की संभावना है।
व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 7	:	बैंगलुरू का चातुर्मास सम्पन्न कर विभिन्न उपनगरों में विचरण कर रहे है।

पौष शुक्ला चतुर्दशी पर बैंगलुरू विराजने की संभावना है।

व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 4 : पीपाड़ का चातुर्मास सम्पन्न कर जोधपुर पधारे हैं। यहाँ सिंहपोल, महामंदिर क्षेत्रों को पावन करते हुए बावड़ी पधारे हैं। पौष शुक्ला चतुर्दशी हेतु नागौर की ओर विहार संभावित है।

आचार्य प्रवर के दीक्षा-दिवस पर गुणानुवाद

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 47 वां दीक्षा-दिवस 24 अक्टूबर 2009 को सम्पूर्ण देश में तप-त्याग, दया-संवर, पौषध-उपवास के साथ मनाया गया। विभिन्न ग्राम-नगरों में उत्कृष्ट संयम-साधक एवं वीतरागता के पथिक पूज्य आचार्यप्रवर का गुणानुवाद किया गया। इस सम्बन्ध में कतिपय समाचार जिनवाणी के नवम्बर अंक में प्रकाशित हुए हैं। उसी शृंखला में पालड़ी अहमदाबाद के समाचार इस अंक में प्रकाशित किए जा रहे हैं।

कार्तिक शुक्ला षष्ठी 24 अक्टूबर, 2009 को पूज्य आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 47 वाँ दीक्षा-दिवस पालड़ी उपाश्रय में तप-त्याग-व्रत प्रत्याख्यान के साथ मनाया गया। सुदूर क्षेत्रों से अनेक श्रद्धालु, गुरुभक्त पूज्यवर श्री के पावन श्री चरणों में साधना के लक्ष्य से उपस्थित हुए। गणमान्य सुश्रावकों में संरक्षक-मंडल के संयोजक श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, शासन सेवा समिति के संयोजक श्रीमान् रतनलाल सी. बाफना, सहसंयोजक श्रीमान् कैलाशचन्द जी हीरावत, संघाध्यक्ष श्रीमान् सुमेरसिंह जी बोथरा, कार्याध्यक्ष श्रीमान् ज्ञानेन्द्र जी बाफना, महामंत्री श्रीमान् नवरतन जी डागा, शासन सेवा समिति के अधिकांश सदस्य एवं अन्य अनेक पदाधिकारी गण परमाराध्य पूज्य आचार्यप्रवर श्री की पावन सन्निधि में दर्शन-वन्दन एवं दीक्षा-दिवस पर गुण महिमा श्रवण करने की दृष्टि से पधारे।

आज विशाल धर्मसभा-स्थल लगभग समूचा भरा हुआ था। अधिकांश आगत सामायिक की वेशभूषा में विराजमान थे। सर्वप्रथम **श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा.** ने प्रभावोत्पादक भाषा-शैली में पूज्य आचार्य भगवन्त की संयम-

साधना के गुणगान किये। **श्रद्धेय श्री बलभद्रमुनि जी म.सा., श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी म.सा,** महासती मण्डल में से भी **महासती श्री विवेकप्रभा जी म.सा., महासती श्री रक्षिता जी म.सा., महासती श्री रुचिता जी म.सा.** ने भी पूज्य भगवन्त की महिमा एव शासन प्रभावना पर अभिव्यक्ति दी।

तत्त्वचिंतक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. ने फरमाया कि "सम्यग्दर्शनज्ञान-चारित्राणि मोक्षमार्गः" के अनुसार विवेकपूर्वक संयम-साधना करने वाले पूज्य आचार्यप्रवर का आज 47 वाँ दीक्षा दिवस है। आत्मा दृश्य बने तब ही आत्मदर्शी के दर्शन हो पाते हैं। जड़ वस्तु से कभी भी चेतना नहीं जगती, रास्ता बताने वाला जब सही होगा, वीतराग वाणी की सप्लाइ लाइन बराबर मिलती रहेगी तो हम भी सही मार्ग पकड़ पायेंगे। साधना-सौरभ से सुरभित महापुरुष पट्ट पर विराजमान हैं। आपके संयमी जीवन में 3 के अंक का सुन्दर योग है। 13.3.39 को आपका जन्म, चैत्र कृष्णा आदिनाथ का जन्म-कल्याणक दिवस है। 13 साल की उम्र में नागौर में बहिन के वियोग से विरति के भाव जगे। 23.10.1963 को आराधना शुरु हुई। रत्नत्रय की साधना की निर्दोष एवं सजग शुरुआत। 1953 वाँ साल (सन्) जब था, तब आप गुरु के चरणों में आये। जब आप 53 के हुए तो गुरुदेव आपको भार संभला कर चल दिये, 13 सर्वघाति से रहित होने के लिए निर्दोषता की साधना चल रही है। 'शिष्य बनता है जो सही, वही गुरु बन पाएगा।' बचपन से आपका निर्व्यसनी जीवन। गुरु की साक्षात् प्रतिकृति बनकर के ऊँचाइयों, कीर्तिमानों को स्थापित कर रहे हैं। 13.05.2009 को आचार्यत्व के 18 साल पूरे करते हुए 58 मुमुक्षु आत्माओं को आगे बढ़ाया। आपका तेजस्वी, वर्चस्वी, यशस्वी मार्गदर्शन मिलता रहे।

महान् अध्यवसायी **श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा.** ने फरमाया कि श्रद्धेय के प्रति श्रद्धा की अभिव्यक्ति सुनकर आप और हम सभी भाव विभोर हो रहे हैं। अभिव्यक्ति वह है जो स्व की अनुभूति से युक्त हो। गुरु के प्रति श्रद्धा व समर्पण अवर्णनीय होते हैं।

क्या नजर करूँ इन चरणों में, झोली तो मेरी खाली है।
श्रद्धा के दो अक्षत अर्पण करूँ, भेंट सुदामा वाली है।।

चतुर्विध संघ की ओर से मंगल कामना करता हुआ यही भावना भाता हूँ कि आप स्वस्थ रहते हुए इस संघ की दीप्ति को आगे भी दीप्तिमान करते रहें।

पूज्य आचार्य भगवन्त श्री (आज के दिन पूज्य श्री की भावना प्रवचन सभा में आने की किंचित् भी नहीं थी, संतों एवं श्रावकों के प्रबल आग्रह से मन रखने के लिए पूज्य श्री पधारे। निस्पृह भाव से सब सुना।) ने फरमाया- ये गुणगान संयम के हैं। यह जीव पहले भी था, तब किसने कहाँ, कब कुछ कहा- महाव्रत धारण करने पर साधारण व्यक्ति भी वन्दनीय बन जाता है। यह महिमा संयम के कारण है। गुणगान आप कर रहे हैं। मैं चिन्तन कर रहा हूँ कि इस योग्य भी हूँ या नहीं? महिमा सुन हर्षित तो नहीं हो रहा हूँ? प्रमोद भाव तो पैदा नहीं हो रहे हैं? सुनकर योग्य बनने का प्रयत्न करूँ। बडपल्लनी चेन्नई में जब बाल ब्रह्मचारी विशेषण के साथ जयघोष का उद्घोष हो रहा था तो, मैंने श्रावकों को टोका था कि 10 से 14 वर्ष की वय के बीच दीक्षित मुनि बाल ब्रह्मचारी कहलाते हैं। 25 वर्ष वाला बाल नहीं कहलाता। इस परम्परा में मेरे अलावा सभी पूज्य आचार्य बाल ब्रह्मचारी हैं। मैं इस योग्य नहीं हूँ, ऐसे नारे भविष्य में नहीं लगावें। इस संयम में अनेक चमत्कार हैं। अनाथी ने संकल्प किया, ''आँख की वेदना से मुक्त हो जाऊँ तो संयम धारण कर लूँ। कर्नाटक केसरी गणेशीलाल जी म.सा. ने दीक्षा के साथ एकान्तर तपस्या प्रारम्भ की। पारणे में विगयों का त्याग। उपवास में 50 किमी एवं पारणे में 40 किमी का विहार। हजारों लोगों के कण्डे डोरे उतरवा दिये। किसके बल से? शुद्ध संयम-साधना के बल से। ये सब चमत्कार धर्म के प्रताप से हैं। आप भी संकल्प करके देखिये। कैसा चमत्कार होता है। पुनवान नाम के साथ पुण्यवानी बढ़ाना चाहो तो संयमी बनना श्रेष्ठ है। सही मायने में आपको संयम प्यारा लगा है तो एक व्रत, बारहव्रत एवं महाव्रत स्वीकार करें। अभी नहीं तो कल, परसों, एक साल बाद या अगले जन्म में आइये, आखिर आपको आना ही पड़ेगा। बिना संयम मुक्ति नहीं। देवता आते हैं। व्रत ग्रहण नहीं करते, आप तो लेवता हो, मानव हो, संयम में जितना आगे बढ़ेंगे, उतना ही जीवन को सार्थक कर सकेंगे। इन्हीं मंगल भावों के साथ।

दीक्षा-दिवस के पावन प्रसंग पर अधिकतर भाई-बहिनों ने एक मुहूर्त की एक साथ पाँच-पाँच सामायिक की साधना की। दया, आयम्बिल के अतिरिक्त 350 एकासन एवं 55 उपवास की साधना हुई।

एलिसब्रिज स्थानक में रक्तदान शिविर लगाया गया, जिसमें 70 भाई-बहिनों ने रक्तदान किया। श्री पदमचन्द जी कोठारी की ओर से सभी व्यवस्थाएँ प्रमोदजन्य

रहीं।

विहार के दो दिन पूर्व भक्तों की भावाभिव्यक्ति

कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा 2 नवम्बर के एक दिन पूर्व पूज्य आचार्यप्रवर एवं सन्तों की सन्निधि में श्रावक-श्राविकाओं ने अपने भावों की अभिव्यक्ति की। कार्यक्रम का संचालन श्रावकरत्न गुरुभक्त श्री पदमचन्द जी कोठारी ने किया।

संघमंत्री श्री रमणीकलाल जी, पालड़ी ने संघ की ओर से गुरु भगवन्त के चातुर्मास पर आभार प्रदर्शित किया। हमें आचार्य भगवन्त सहित 12 सन्तों (तीन बरवाला सम्प्रदाय के तपस्वी श्री शांतिमुनि जी म.सा. सहित) 16 सतियों का चातुर्मास मिला। इस संघ को ऐसा ऐतिहासिक चातुर्मास पहली बार मिला है।

श्री पदमचन्द जी कोठारी, पालड़ी– गुरु-भगवन्तों की कभी विदाई नहीं होती वे हमारे हृदय में विराजमान हैं। विदाई करनी है तो अवगुणों की करें। श्रावक-श्राविकाओं ने चातुर्मास में गुरु भक्ति की, ज्ञान अर्जन किया, तपस्याएँ कीं। मणिनगर युवा संघ ने सहयोग के साथ पूरा लाभ लिया। सभी गुरु भ्राताओं, आत्मीयजनों और संघ के सभी भाई-बहिनों ने सहयोग कर चातुर्मास सफल बनाया है। दर्शनार्थ आने वाले भाई-बहिनों, गुरुभक्तों, संघ सहायकों, शिवजी व उनके साथियों, स्थानक के कर्मचारियों आदि सभी ने समपर्णता से सहकार किया। महासतियां जी म.सा. के 3 मासखमण, यहाँ से कुल 7 मासखमण की आराधना के साथ अनेक छोटी बड़ी तपस्याएँ आयम्बिल, दया, संवर, पौषध, एकाशन की साधना हुईं। 30 शीलव्रत के खंध चातुर्मास काल में कीर्तिमान हैं। आहार गोचरी, पानी, दवा आदि की व्यवस्था में समुचित व्यवस्था नहीं बन पाई हो तो क्षमाप्रार्थी हूँ। गुरु भगवंत का उपकार कभी नहीं भूल सकूँगा। आपके अतिशय से चातुर्मास निर्विघ्न सम्पन्न हुआ। मैं सभी का आभारी हूँ।

श्री उमरावमल जी सुराणा, चेन्नई– गुरुकृपा से दर्शन, वन्दन व धर्माराधना का नित्य लाभ मिला। श्री पदम जी व उनके परिवार की सेवाएँ अनुकरणीय एवं प्रमोदजन्य है।

श्री चेतनप्रकाश जी डूंगरवाल, बैंगलोर– यहाँ के श्रावक संघ को हार्दिक बधाई। आपको चातुर्मास का सौभाग्य मिला। जहाँ विराजे संत, वहाँ खिले

बसन्त। आप श्री के गुणों का गुंजन संभव है, गूंथन संभव नहीं। दक्षिण प्रवास के कारण वहाँ व्यसन मुक्ति का शंखनाद, सामूहिक भोजन में जमीकन्द का त्याग, द्रव्यों की मर्यादा, समाज का उत्थान आदि कार्य पूज्य श्री की प्रेरणा से चल रहे हैं। शासन प्रभावना के सुन्दर स्वरूप का दर्शन आज भी होता है। हे प्रभो! आपके चरणों की शरण इस भव, पर भव में सदा रहे।

श्री महासुख भाई सेठ, पालड़ी– अनेक पुण्यवानी के बाद चातुर्मास मिला। पूज्यवर्य श्री ने सोई हुई आत्माओं को जगाकर परम सुख का मार्ग बताया।

श्री कन्हैयालाल जी हिरण, मणिनगर– हमारे संघ की विनति 2008 से चल रही थी, पूज्य आचार्य भगवंत ने 2009 का चातुर्मास प्रदान कर कृतार्थ किया। अब करुणा निधान शताब्दी वर्ष का लाभ भी शाहीबाग को प्रदान करावें।

श्री पारसमल जी कोठारी, चेन्नई– पूज्य गुरुदेव की महिमा अपरम्पार है। इन महापुरुष का जितना गुणगान करें, उतना कम है।

श्री भैरूलाल जी जीरावला, शाहीबाग– कृपा निधान! पूज्य गुरुदेव की 100 वीं जयन्ती का लाभ शाहीबाग संघ को प्रदान करावें।

श्रीमती मंजु जी चौपड़ा, सायोना सिटी– गुरु-भक्ति का जिन पर नशा चढ़ जाता है उनकी दिशा ही नहीं दशा भी बदल जाती है। भजन की कड़ियों के माध्यम से वे बोलीं– गुरुवर तेरा जाना ये हम सबको रुलायेगा, पदम जी आप चातुर्मास लाया लाभ हम सभी ने पाया, गुरुवर मत जाओ जी। यही रुक जाओ जी।

श्री हँसमुख भाई, पालड़ी– ऐसे भव्य अतिशय वाले गुरु जगत में नहीं मिलेंगे। आपका चातुर्मास भविष्य में स्मृति में रहेगा।

श्री मांगीलाल जी चौपड़ा (बाड़मेर वाले), नारणपुर– पूज्यवर्य श्री! शाहीबाग को शताब्दी जयन्ती का लाभ प्रदान कर आगे का विहार बाड़मेर की तरफ फरमावें।

श्री पूनमचन्द जी बरड़िया, मणीनगर– आपने भव्य प्राणियों को सन्मार्ग बताकर धन्य बना दिया। आपको कोटिशः वन्दन।

श्री कांतिलाल जी बाफना, पालनपुर– हे गुरु भगवन्त! परम्परा से पीढ़ियों का श्रावक हूँ। कृपा कर पालनपुर संघ को इस पावन प्रसंग का लाभ दिरावें। आपका विचरण विहार साता से होगा। चरण रज से पालनपुर की धरा को पावन करावें।

श्री रमणीक भाई मेहता, पालड़ी– अहमदाबाद में यह चातुर्मास ऐतिहासिक रहा, गुरु भगवन् ने चार माह तक वीतराग वाणी का अमृतमय पान करवाया।

वीना बेन रांका– हमारी यही विनति है, हे हीरा गुरुवर! आप शीघ्र दर्शन देने की कृपा करना। **बहिन कविता जी–** हम तेरे गुणगान गुरुवर गा रहे, भक्ति से चरणों में शीश नमा रहे। (गुरु महिमा भजन) **एक बहिन–** अब गुरुवर के बिना यह स्थानक सूना रहेगा।

श्री धनकुमार भाई, पालड़ी अध्यक्ष– आप सबको बधाई है। हीरा मिला, इन्हें हृदय में बिठाओ। प्रतिज्ञा करो-नियमित सामायिक स्वाध्याय करेंगे। शताब्दी जयन्ती का लाभ अहमदाबाद को ही प्रदान करें। गुरुवर का नाम स्मरण रोजाना करना, समता भाव बना रहेगा।

श्री नवरतनमल जी डागा, महामंत्री जोधपुर– शताब्दी वर्ष आ रहा है। संकल्प के साथ व्रत प्रत्याख्यान नियम लेकर जीवन को त्यागमय बनायें।

आचार्यप्रवर द्वारा उद्बोधन

कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा 2 नवम्बर 2009 को पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने अपने उद्बोधन में निम्नानुसार भावाभिव्यक्ति की-

तीर्थंकर भगवान् महावीर की आदेय अनमोल वाणी अढाई हजार वर्ष से अधिक समय बीत जाने के बाद आज भी जिनशासन को चमका रही है, दीप्तिमान बना रही है। यह सुनने वाले, बोलने वाले और सोचने वालों से नहीं, अपितु धर्म का आचरण करने वालों से दीप्तिमान है। शासन आचरण करने वालों के बल पर चल रहा है। चातुर्मास के अन्तिम दिवस पर संकल्प को दृढ़ एवं अपने मन को मजबूत करें। ऐसी भावना भाएं कि मैं भी इस तीर्थ का अंग बनूं। साधु बनकर, साध्वी बनकर , श्रावक बनकर, और श्राविका बनकर आचरण करते हुए आगे बढ़ें, नहीं तो 'पण्डित भया मशालची' कहावत सार्थक हो जाएगी।

दूसरों को तो उपदेश देते हैं, चरित्र की बात करते हैं, शीलव्रती बनाते हैं, त्यागी बनाते हैं, पर स्वयं पाप के गहरे गड्ढे में उतरे रहते हैं, ऐसी दिखावी व ठगाई की वृत्ति न हो। पूर्णिमा संकेत दे रही है कि अपने मन के संकल्प को दृढ़ करो, पूर्णता के लिये प्रयत्नशील रहो। हम खाली बात कर जाते हैं– 'म्हारी भावना है पूरा सुधराँ' पर यह भावना, भावना नहीं रहे, इस पर क्रियान्विति हो। कहते हैं–

'मारवाड़ मनसूबा डूबी' मारवाड़ी लोग काम करते कम और मनसूबा ज्यादा करते हैं। राज्य के लिये हिटलर ने, धन के लिए सिकन्दर ने वासना के लिए रावण ने राक्षस कुल को बर्बाद किया। करने वाले एक व्यक्ति ने इस धर्म को दीप्तिमान किया। एक व्यक्ति ने इस धरती को बदल दिया। इसी तरह धर्म की क्रान्ति कर हेमचन्द्राचार्य, श्रीमद्राजचन्द्र, आर्य वज्र, लोंकाशाह ने शांति का साम्राज्य फैला दिया, प्रेम की गंगा बहा दी। जब संचार के साधन इतने स्तर पर नहीं थे, तब भारत में बिगुल बजाया। जिससे भ्रान्तियाँ दूर हुई, हिंसा मिटी, क्रान्ति आई, हिंसा का ताण्डव खत्म होने लगा। एक गांधी ऐसी आंधी लाये, भारत को आजाद करा दिया। वीर लोंकाशाह एवं नानक के नाम इसी कारण याद किये जाते हैं।

जब 'भारत माता की जय' बोलने पर जेल में डाल दिया जाता था, उस समय लोंकाशाह ने क्रान्ति की। श्रावक के कहने पर उपदेश दिया और ऐसी क्रान्ति आई कि एक साथ 45 दीक्षाएँ हो गईं। आपको सुनते-सुनते चार महीने हो गये, कई वर्ष, कई जन्म, कई युग, कितना काल बीत गया- 'अतीता अनन्ता'...... अन्त कब आयेगा? सन्त बनोगे तब। विषय कषाय को बढ़ाने का जो कार्य किया है, उसकी निंदामि, गरिहामि कर लीजिये। जब मन में दृढ़ संकल्प होगा, तब ही ऐसा करने का साहस जुटा पाओगे। जिन-जिन का इस जीव पर उपकार है, आगे बढ़ाने में सहकार है, उन उनका आभार स्वीकार करते जाइये।

निश्चित मानकर चलिये संयम सब तरह से सुखी बनाने वाला है- सौ नहीं हजार रोगों की दवा है, हजार समस्याओं का समाधान है संयम। चार महीने हमने जिनेश्वर देव की अनन्त कृपा से, गुरु भगवन्त की परोक्ष असीम अनुकम्पा से ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप की आराधना में उनके शिक्षा संदेश को लेकर बिताये। ज्ञान बढ़ाने में, प्रार्थना-प्रवचन-शास्त्र वाचणी में संघ का सहयोग रहा, उल्लास के साथ आराधना की। व्रत-नियमों के प्रत्याख्यान बराबर हुए। साथी सन्तों का सहयोग रहा-भिक्षाचरी में महेन्द्रमुनि जी का, प्रवचन में तत्त्वचिन्तक प्रमोदमुनि जी व योगेशमुनि जी का। सेवा में अन्य मुनियों का सहयोग रहा।

मेरे से, साथी सन्तों से, सतीमण्डल से, मन नहीं होते हुए भी पीड़ा पहुँची हो, ठेस पहुँची हो, मन दुःखाया हो तो हृदय से सभी सदस्यों से क्षमायाचना। उपदेश -आदेश के पीछे यह भावना रही कि जीव ऊपर उठे, इस कारण कहना भी पड़ा है। परन्तु घर के मोह के कारण सही कही हुई बात भी बुरी लग जाती है। कई

कहते भी हैं- कांई म्हे ही दीखाँ महाराज ने? जगाने के लिए जोर देकर कहा हो, कठोर शब्दों में भी कहने में आया हो तो संत-सती की ओर से भी संघ से क्षमा चाहते हैं। संघ के प्रमुख, उपप्रमुख, ऐलिसब्रिज का पूरा समाज व सभी सदस्यों ने पूरा सहयोग दिया है। यहाँ गुजराती समाज अधिक है, हम हिन्दी भाषी हैं, प्रवचन भी हिन्दी में ही हुए, आपकी अपेक्षानुसार सन्तुष्टि प्रदान नहीं कर पाये हों, आपकी भावना साकार नहीं हो पाई हो तो, क्षमा चाहते हैं। पदम जी ने विनति के समय कहा था कि अन्नदाता! गुजराती बहुल क्षेत्र होने से उपस्थिति कम रह सकती है, मैंने कहा- उपस्थिति कम रही तो अपनी साधना कर लेंगे, लेकिन यहाँ तो आशा के विपरीत उपस्थिति के आंकड़े अधिक रहे। अहमदाबाद के हर उपनगरवासी ने वीतराग वाणी श्रवण करने में और साधना में सहयोग दिया। चार माह के काल में शांति व समाधि की अनुभूति रही।

संत का एक पंथ होता है, जिसे कल्प कहते हैं। शेष काल में 29 दिन, चातुर्मास में 4 या 5 माह (अधिक माह होने की अवस्था में) बाद कल्प से विहार करना होता है। मोह-राग में वृद्धि नहीं हो जाये, अतः विहार करना होता है। साधु तो रमता भला, दाग न लागे कोय। साधु चला जाय तो कोई आश्चर्य नहीं, विदाई व रोना नहीं। मैं पूँछू बादल आये और बिना वर्षा किए चले गये। तब कौन-कौन रोये ? संत भी आते-जाते रहते हैं। सन्तों की विदाई व विहार का कोई गम नहीं। संत रहे या न रहे आप धौरी बैल की तरह चलते रहें। धौरी बैल चलता रहता है। गाड़ीवान व अन्य सवारी बैठे रहते हैं, वह लीक पर चलता रहता है। चातुर्मास के बाद भी आपकी धर्माराधना चलती रहे, यह हमें कैसे मालूम हो? जैसे बादल आते हैं, वर्षा कर चले जाते हैं, लेकिन पीछे हरियाली छोड़ जाते हैं। बरसात की पहचान जैसे हरियाली से होती है वैसे ही चातुर्मास के बाद भी नित्यप्रति प्रार्थना, सामायिक, स्वाध्याय की प्रवृत्ति प्रवाहमान रहे। ऐसा मुझे श्रवण करने को मिले तो सन्तोष रहेगा।

मैं भी अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ूँ, आप भी जब तक मंजिल प्राप्त नहीं कर लें तब तक साधना में रहेंगे, मंजिल पर पहुँचने का प्रयास करेंगे तो आपका आना एवं सुनना सार्थक होगा। इसी मंगल मनीषा के साथ।

उद्बोधन के पश्चात् श्री पदमचन्द जी कोठारी ने सूचना दी कि कल प्रथम प्रहर पश्चात् गुरु भगवन्त का विहार मणिनगर की तरफ होगा।

अहमदाबाद से पालनपुर की ओर प्रस्थान

3 नवम्बर 09 को गुजराती समाज के भाई-बहिनों से प्रातः धर्मसभा-स्थल भरा हुआ था। लगभग 9.40 बजे पूज्य आचार्य भगवन्त पधारे। मांगलिक प्रदान कर चातुर्मासोपरान्त पालड़ी उपाश्रय से पूज्य श्री के चरण मणिनगर की ओर बढ़ चले। पीछे संतवृन्द चल रहे थे। श्रावक-श्राविकाओं द्वारा जयघोष के उद्घोष का निनाद पूरे मार्ग बना रहा। लगभग 4 किमी का विहार कर 10.35 बजे मणीनगर पधारे। जिन सुज्ञ श्रावकों ने चार माह तक निर्निमेष दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ लिया था, उनकी आँखे नम एवं चेहरे कान्तिहीन परिलक्षित हो रहे थे। 5 नवम्बर तक मणिनगर विराजकर पूज्य श्री 6 नवम्बर को दरियापुरी स्थानक, शाहीबाग पधारे, जहाँ 18 नवम्बर तक विराजे। 17 एवं 18 नवम्बर को प्रवचन मल्लिनाथ सोसायटी संघ में हुआ। 19 नवम्बर को यहाँ से विहार कर आचार्य भगवन्त साबरमती पधारे। अग्रविहार पालनपुर की ओर हो रहा है। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के 100 वें जन्मदिवस पौष शुक्ला चतुर्दशी 30 दिसम्बर को पालनपुर में विराजने की संभावना है। धर्माराधन करने वाले श्रावक-श्राविका पालनपुर के निम्नांकित सम्पर्क सूत्र पर आगमन की सूचना दें- **श्री कांतिलाल जी बाफना (भोपालगढ़ वाले)**

47, त्रिशला नगर, पालनपुर-385001 (गुजरात)

फोन नं. 02742-251539(घर), 2833229 (ऑ.)

श्री प्रवीण कुमार जी बाफना-09427642750, 08000181125

श्री कमलेश कुमार जी बाफना-09428195829, 09898083329

पूज्य आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से वर्षभर में 70 दम्पतियों ने आजीवन शीलव्रत ग्रहण किए

दिनांक 18.11.2008 से 18.10.2009 के बीच आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से अग्रांकित 70 दम्पतियों ने आजीवन शीलव्रत अंगीकार किए-

श्री महावीर चंद जी भण्डारी-भायंदर(W)मुंबई, श्री भोपालचंद जी सेठी-भायंदर(W) मुम्बई, श्री नेमीचंद जी राँका-काँदावाड़ी, मुंम्बई, श्री चंपालाल जी-भायंदर (W) मुंबई, श्री उगमराज जी मेहता-जयपुर, श्री भूरालाल जी झूँठा-खारडी, मुंबई, श्री धनराज जी साँखला-उमरगाँव रोड़, श्री अशोक कुमार जी लुंकड़-उमरगाँव

रोड़, श्री मदनलाल जी पामेचा–उमरगाँव रोड़, श्री प्रकाश चंद जी काँकरिया–उमरगाँव रोड़, श्री सुरेश कुमार जी मुथा–उमरगाँव रोड़, श्री प्रकाश चंद जी मुथा–उमरगाँव रोड़, श्री अरूण कुमार जी सुराणा–नवसारी, श्री हरकचंद जी जैन– नवसारी, श्री सुंदरलाल जी बोहरा–उधना, श्री गोपालचन्द जी संचेती–घुड़दौड़ रोड़– सूरत, श्री जवेरीचंद जी नाहर–भट्टार रोड़–सूरत, श्री सज्जन राज जी काँकरिया–अड़ाजना–सूरत, श्री माणकमल जी लोढ़ा–जयपुर, श्री संजीव जी नाहर–संगरामपुरा–सूरत, श्री भंवरलाल जी कोठारी–अमरोली–सूरत, श्री खेमजी भाई पटेल–माँझलपुरा–बड़ौदा, श्री हंसराज भाई पटेल–माँझलपुरा–बड़ौदा, श्री प्रेमचन्द जी चौपड़ा–सूरत, श्री सुरेशचंद जी गांग–मणिनगर–अहमदाबाद, श्री कन्हैयालाल जी हिरण–मणिनगर–अहमदाबाद, श्री पारसमल जी लुणावत–मणिनगर–अहमदाबाद, श्री चंदनमल जी विनायकिया– शाही बाग–अहमदाबाद, श्री गौतमचंद जी मुणोत–चेन्नई, श्री उत्तमचंद जी मेहता–अम्बापाड़ी–अहमदाबाद, श्री धनपतराज जी चौरड़िया–इग्मौर–चेन्नई, श्री प्रवीण कुमार जी बोरदिया–वस्त्रापुर–अहमदाबाद, श्री धीरज भाई मारू– लो गार्डन–अहमदाबाद, श्री सुरेश कुमार जी बोरदिया–वस्त्रापुर–अहमदाबाद, श्री प्रवीण भाई शाह–शायानो सिटी–अहमदाबाद, श्री दीपचंद जी जीरावला–साबरमती–अहमदाबाद, श्री लूणकरण जी बाँठिया–साबरमती–अहमदाबाद, श्री शिखरचंद जी भंडारी–साबरमती–अहमदाबाद, श्री घीसूलाल जी बालड़– जोधपुर, श्री भंवरलाल जी बागरेचा–गिरधर नगर–अहमदाबाद, श्री छगनचंद जी जैन–खोह, श्री छगनलाल जी दाँती–बालोतरा, श्री अशोक जी मेहता–नवरंगपुरा–अहमदाबाद, श्री मूलराज जी सिंघवी–अमलीकेरे–चेन्नई, श्री पुनवानचंद जी खिंवसरा–जोधपुर, वीरपिता शांतिलाल जी लुणावत–पीपाड़, श्री उगमचंद जी कर्नावट–रायपेठा–चेन्नई, श्री जसवंत राज जी बोरड़िया–अहमदाबाद, श्री अजीत भाई शाह–पालड़ी, श्री पदमचंद जी कोठारी–पालड़ी, श्री तेजमल जी लोढ़ा–हैदराबाद, श्री सुभाषचंद जी सोलंकी–यादगिरि, श्री ताराचंद जी डूँगरवाल–वेलूर, श्री जे.के. मेहता–पालड़ी, श्री निहालचंद जी बागमार–रायचूर, श्री विजयराज जी कटारिया–कोयम्बटूर, श्री धनरूप चंद जी मेहता–बैंगलूरू, श्री भंवरलाल जी बालड़–बैंगलूरू, श्री चौथमल जी जैन– बाबई, श्री भंवरलाल जी सँखलेचा–तिण्डीवरम, श्री प्रकाशचंद जी जैन–वैशाली नगर–जयपुर, श्री उगमराज जी श्री श्रीमाल–जोधपुर, श्री भैंरूलाल जी जैन–चौथ का बरवाड़ा, श्री प्रकाशचंद जी भंडारी–जयपुर, श्री घनश्याम जी जैन–अलीगढ़–रामपुरा, श्री माणकचंद जी बाँठिया–मैसूर, श्री अमोलकचंद जी हिंगड़–अजमेर, श्री मदनचंद जी डागा–अहमदनगर, श्री योगेश कुमार जी पालावत–अलवर, श्री उदयचंद जी बाबेल–ब्यावर।

उपाध्यायप्रवर का विहार पाली की ओर

परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा 6 के सान्निध्य में ब्यावर चातुर्मास उपलब्धिपूर्ण रहा। चातुर्मास समाप्ति के अनन्तर विहार का दिन अपने आप में विशिष्ट था। श्रद्धालु भक्तजनों के आँखों में खुशी एवं गम के आँसू थे। खुशी इस बात की थी कि गुरु भगवन्तों से इस चातुर्मास में ज्ञान सीखा, नये व्रत-प्रत्याख्यान स्वीकार किये। गम का विषय है कि अब नित्य उत्कृष्ट संयम के धारी, गुरु भगवन्त के दर्शन-वन्दन और प्रवचन-श्रवण का लाभ नहीं मिल पाएगा।

चातुर्मास समाप्ति पर **13 दम्पतियों ने शीलव्रत अंगीकार किए**- श्रीमती चन्द्राबाई-प्रकाशमल जी भंडारी-जयपुर, श्रीमती निर्मला बाई-ज्ञानचन्द जी बोहरा-विल्लीपुरम, श्रीमती निर्मलाबाई-ताराचन्द जी विरानी-जयपुर, श्रीमती विमलाबाई-श्री रिखबचन्द जी भंसाली-ब्यावर, श्रीमती कमलाबाई-पारसमल जी बोहरा-ब्यावर, श्रीमती कांताबाई-रिखबचन्द जी धोका-निमाज-मैसूर, श्रीमती कमलाबाई-नेमीचन्द जी सुराणा-ब्यावर, श्रीमती ललिताबाई-प्रकाशचन्द जी बोहरा-विल्लीपुरम (तमि.), श्रीमती प्रेमकंवर-सम्पतराज जी ढाबरिया-ब्यावर, श्रीमती मंजुबाई-रिखबचन्द जी भंसाली-ब्यावर, श्री भंवरलाल जी खींचा-ब्यावर, श्रीमती सुशीलादेवी-प्रकाशचन्द जी पीपाड़ा-ब्यावर, श्रीमती कमलाबाई-रतनलाल जी गोयल-ब्यावर।

विहार समय में श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं की संख्या निरन्तर बढ़ती गई। जय-जयकारों के साथ विहार कर उपाध्याय भगवन्त एवं संतवृन्द बरेली स्थानक पधारे। उपाध्यायप्रवर के स्वास्थ्य में प्रतिकूलता के कारण लम्बा विहार संभव नहीं था। अतः बरेली स्थानक में श्रावक-श्राविकाओं ने प्रार्थना, प्रवचन एवं वाचना का लाभ लिया। 23 नवम्बर को उपाध्यायप्रवर ने बरेली स्थानक से विहार किया तथा श्री लक्ष्मीचन्द जी भण्डारी की फैक्ट्री, सेंदड़ा रोड पधारे। यहाँ 2 दिन विराजने के पश्चात् 25 नवम्बर को उपाध्यायप्रवर बर पधार गये हैं। आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के 100वें जन्म-दिवस दिनांक 30 दिसम्बर 2009 को पाली विराजना संभावित है। अतः विहार पाली की ओर चल रहा है।

सम्पर्क सूत्र- श्री रूपकुमार जी चौपड़ा, पाली-09414122304, श्री ताराचन्द जी सिंघवी, पाली-02932-250021

संघ की सहयोगी संस्थाओं में मनोनीत नये पदाधिकारी

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के यशस्वी अध्यक्ष श्री पी.शिखरमल जी सुराणा, चेन्नई को सितम्बर 2009 में अहमदाबाद में आयोजित साधारण सभा में अग्रिम तीन वर्षों के लिए पुनः अध्यक्ष का दायित्व सौंपा गया है। अध्यक्ष महोदय ने सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के पूर्व मंत्री श्री प्रेमचन्द जी जैन को उपाध्यक्ष तथा पूर्व संयुक्तमंत्री श्री बिरदराज जी सुराणा को मण्डल का मानद् मंत्री मनोनीत किया है।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्राविका मण्डल की नव मनोनीत अध्यक्षा श्रीमती मधु जी सुराणा-चेन्नई ने श्रीमती पूर्णिमा जी लोढ़ा-जयपुर को कार्याध्यक्ष तथा श्रीमती शशि जी टाटिया-जोधपुर को महासचिव मनोनीत किया है।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के पुनः मनोनीत अध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा ने पूर्व महामंत्री श्री नवरतन जी डागा को श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ का संयोजक मनोनीत किया है। संयोजक श्री डागा जी ने श्री राजेश जी भण्डारी-जोधपुर को सचिव मनोनीत किया है।

शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा 10 जनवरी को

अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा कक्षा 1 से 8 तक की आगामी परीक्षा 10 जनवरी 2010, रविवार को दोपहर 12.30 से 03.30 बजे तक आयोजित की जाएगी।

1. नये एवं पुराने सभी परीक्षार्थियों को आवेदन-पत्र भरना आवश्यक है। आवेदन-पत्र भरकर बोर्ड कार्यालय में 20 दिसम्बर 2009 तक जमा कराना अनिवार्य है।
2. यदि किसी परीक्षार्थी अथवा केन्द्राधीक्षक को आवेदन-पत्र, पुस्तक आदि की आवश्यकता हो तो तुरन्त बोर्ड कार्यालय से सम्पर्क करें।
3. आवेदन पत्र ऑनलाइन शिक्षण बोर्ड की वेबसाइट www.jainratnaboard.com पर भी भर सकते हैं।
4. शिक्षण बोर्ड के ईमेल info@jainratnaboard.com पर भी परीक्षा सम्बन्धी जानकारी भेज सकते हैं।
5. आवेदन-पत्र भरते समय परीक्षार्थी अपना मोबाइल नम्बर, ई-मेल आदि अवश्य भरें ताकि उन्हें परीक्षा के रोल नम्बर, परीक्षा परिणाम आदि की जानकारी

SMS द्वारा तुरन्त ही उपलब्ध कराई जा सके।

6. आवेदन-पत्र का प्रारूप भी जिनवाणी में अन्यत्र दिया जा रहा है, ताकि पाठकगण उसके आधार पर परीक्षा में भाग लेने हेतु आवेदन कर सकते हैं।

सम्पर्क सूत्र- श्रीमती सुशीला बोहरा, संयोजक-9414133879, राजेश कर्णावट, सचिव-9414128925, कार्यालय- 0291-2630490

जयपुर में रक्तदान शिविर में दें अपना रक्त

आचार्य हस्ती शताब्दी अध्यात्म चेतना वर्ष की कड़ी में मानव-मात्र की सेवा के लिए श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जयपुर शाखा एवं एस.एस. जैन सुबोध शिक्षा समिति के संयुक्त तत्त्वावधान में विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन दिनांक 14 दिसम्बर 2009 को प्रातः 9 से सायं 4 बजे तक रामबाग सर्किल स्थित सुबोध कॉलेज एवं चौड़ा रास्ता स्थित लालभवन, जयपुर में किया जा रहा है। आपके द्वारा किया हुआ रक्तदान किसी को जीवनदान दे सकता है। अतः अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें। शिविर संयोजक- सुरेन्द्र सुराणा-09829057356, शैलेन्द्र कोठारी-09251706057

प्राकृत भाषा पर डॉक्यूमेण्ट्री फिल्म

नोएडा- फिल्मसिटी के मारवा स्टुडियो में आयोजित द्वितीय इन्टरनेशनल ग्लोबल फिल्म फेस्टिवल में युवा फिल्म निर्देशक अरिहन्त 'अनुरागी' मुम्बई द्वारा निर्देशित डॉक्यूमेण्ट्री फिल्म 'प्राकृत भाषा : एक प्राचीन समृद्ध परम्परा' को प्रदर्शित किया गया। देश-विदेश से आई लगभग 1000 फिल्मों में से चयनित लगभग 30 फिल्मों में प्राकृत भाषा नामक इस फिल्म को शुमार किया गया और तीन दिन तक चले इस फैस्टिवल में दो बार प्रदर्शित भी किया गया। यह फिल्म श्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामी जी, श्रवणबेलगोला की परिकल्पना से तैयार की गई है, जिसकी स्क्रिप्ट का लेखन डॉ. अनेकान्त कुमार जैन, नई दिल्ली ने किया है। इस फिल्म में श्रवणबेलगोला के प्राकृत भाषा में खुदे हजारों अति प्राचीन शिलालेखों, राष्ट्रीय प्राकृत संस्थान में संरक्षित अति प्राचीन पाण्डुलिपियों तथा ताड़पत्रों के समृद्ध इतिहास, वहाँ चल रहे कार्यों एवं पुरातत्त्व को बहुत ही सुन्दर और संगीत रूप में दर्शाया गया है। फिल्म फैस्टिवल में इस फिल्म को काफी सराहना मिली।

'समतादर्शन और व्यवहार' पुस्तक पर प्रतियोगिता

आचार्य श्री नानेश की कृति 'समता दर्शन और व्यवहार' पर ओपन बुक एग्जाम का 10 जनवरी 2010 को दोपहर 1 से 4 बजे तक आयोजन किया जा रहा है। पुस्तक बीकानेर, उदयपुर, रतलाम एवं दुर्ग से प्राप्त की जा सकती है। पुरस्कार इस प्रकार है-प्रथम : 5000/-, द्वितीय : 4000/-, तृतीय : 3000/-, चतुर्थः 2000/-, पंचम : 1000/- तथा 100 अन्य आकर्षक पुरस्कार। पुरस्कार एवं परिणाम घोषणा महावीर जयन्ती 2010 पर की जाएगी। 'ज्ञान चेतना के चार आयाम' पुस्तक पर लिखित परीक्षा महावीर जयन्ती के दिन रखी गई है, जिसमें प्रथम पुरस्कार 11000/-, द्वितीय 5000/-, तृतीय 3000/-, चतुर्थ 2000/-, पंचम 1000/- तथा अन्य आकर्षक पुरस्कार रखे गए हैं। सम्पर्क - महेश नाहटा (परीक्षा संयोजक), पो. नगरी, जिला-धमतरी (छत्तीसगढ़)-493778, मो. 9406201351।

संक्षिप्त समाचार

मुम्बई- 20 दिसम्बर, 2009 को जैन फुलवारी संस्था द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर सर्व जैन विवाह योग्य युवक-युवति परिचय सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। सम्मेलन तेरापंथ भवन, ठाकुर काम्पलेक्स, कांदिवली (पूर्व) मुम्बई में प्रातः 8.30 बजे से प्रारम्भ होगा। संस्था अध्यक्ष युगराज जैन तथा संयोजक सोहनलाल परमार के अनुसार इस सम्मेलन में कम से कम ग्रेजुएशन डिग्री प्राप्त युवक-युवतियों को ही प्रवेश दिया जाएगा। सम्पर्क सूत्र- 022-65559522, 098201-56598 मोबाइल।

रतलाम- पंचगव्यों द्वारा निर्मित औषधियों से किडनी रोग, कैंसर, मिर्गी, सोरायसिस आदि असाध्य रोगों का उपचार सफलता पूर्वक किया जा रहा है। श्री चन्दनमल जी घोटा पंचगव्य चिकित्सा में सिद्धहस्त हैं। सम्पर्क सूत्र- श्री सुभाष जैन-09477223176-श्री उमरावमल मुणोत, सेक्रेटरी, जैन सोश्यल ग्रुप, रतलाम।

उदयपुर- पंजाब सम्प्रदाय के तपस्वीराज श्री प्रकाश मुनि जी, पंडितरत्न श्री जयमुनि जी आदि ठाणा 4 का उदयपुर चातुर्मास पंजाब एवं राजस्थान की परम्पराओं, सांस्कृतिक मूल्यों एवं धर्मानुष्ठानों के एकीकरण के साथ सम्पन्न

हुआ। तपस्वीराज का विहार चितौड़गढ की ओर हुआ है।

दिल्ली- अंशोकविहार, दिल्ली में उपाध्याय श्री रमेशमुनि जी शास्त्री, डॉ. राजेन्द्रमुनि जी आदि ठाणा 4 का चातुर्मास सानन्द सम्पन्न हुआ। अभी सन्तप्रवर का विचरण दिल्ली या पंजाब में सम्भावित है।

इन्दौर- भारतीय जैन संघटना, इन्दौर द्वारा 20 दिसम्बर को अखिल भारतीय जैन विधवा, विधुर, परित्यक्ता परिचय सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। सम्मेलन प्रातः 8 बजे प्रारम्भ होगा। सम्पर्क सूत्र- हेमेन्द्र बोकड़िया, अध्यक्ष- 98260-41028 मोबाइल।

कोलकाता- अरिहन्त गो सेवा केन्द्र, कोलकाता द्वारा पश्चिम बंगाल सरकार के मुख्य सचिव को पत्र लिखकर ईदुलअजहा 28 नवम्बर, 2009 को गायों का वध रोकने का प्रयत्न किया गया।

रायपुर (छ.ग.)- आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के मुखारविन्द से यहाँ 59 वर्षीय मुमुक्षु डॉ. श्री हरकचन्द जी धाड़ीवाल, चेन्नई तथा 18 वर्षीय मुमुक्षु सुश्री हिमानी चौपड़ा ने जैन भागवती दीक्षा अंगीकार की। इस अवसर पर लगभग बारह हजार धर्मप्रेमी उपस्थित थे। दीक्षोपरान्त मुमुक्षुओं के नाम क्रमशः श्री हिमांशुमुनि जी तथा साध्वी श्री हिमानी श्री जी रखा गया।

बधाई/चुनाव

बूंदी- 'अमेरिकन बायोग्राफिकल इंस्टीट्यूट रैले, नार्थ केरोलिना', अमेरिका द्वारा

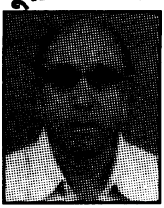

डॉ. एस.एल. नागौरी को इतिहास लेखन में विशिष्ट योगदान हेतु 'मैन ऑफ द इयर, इण्डिया-2009' के पुरस्कार के लिए चुना गया है। इतिहास से सम्बन्धित 118 पुस्तकें लिखकर उन्होंने एक कीर्तिमान स्थापित किया है। इससे पूर्व भी आपका विश्व के प्रसिद्ध 125 इतिहासकारों में नाम दर्ज हो चुका है। श्री कमलमुनि जी 'कमलेश' एवं श्री चन्द्रेशमुनि जी म.सा. डॉ. नागौरी के आप सांसारिक लघु भ्राता हैं।

मैसूर- श्री राजन बाघमार सुपुत्र सुश्रावक श्री सोहनलाल जी बाघमार को जे.सी.आई (जूनियर चेम्बर इण्टरनेशनल) भारत के क्षेत्र संख्या 14 का सर्वश्रेष्ठ अध्यक्ष घोषित किया गया है। साथ ही उनके नेतृत्व में मैसूर रॉयल सिटी को क्षेत्र

की सर्वश्रेष्ठ इकाई का पुरस्कार प्रदान किया गया।

जयपुर- जयपुर नगर निगम के चुनावों में रत्नसंघ के वरिष्ठ श्रावक श्री विनयचन्द

जी बम्ब के सुपुत्र श्री अनिल जी बम्ब संघर्षपूर्ण चुनाव में अपने निकटतम प्रतिद्वन्द्वी से 3 वोट से विजयी रहे हैं। श्री अनिल जी बम्ब श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जयपुर के मंत्री रह चुके हैं। श्री बम्ब सेवाभावी, युवा व कर्मठ उत्साही समाजसेवी है।

जयपुर- सुश्रावकरत्न श्री पदमचन्द गाँधी (थांवला वाले) सुपुत्र श्री नेमीचन्द जी

गाँधी को अलवर में 7 और 8 नवम्बर को आयोजित जगमगदीपज्योति पत्रिका के रजत जयन्ती समारोह के अवसर पर "स्व. सेठ पदमचन्द पालावत स्मृति सम्मान" से अलंकृत किया गया। यह सम्मान श्री गाँधी के बहु आयामी साहित्यिक उपलब्धियों हेतु दिया गया। सम्मान के रूप में उन्हें 1100 रु की नकद राशि एवं प्रशस्ति पत्र भेंट किया गया।

चेन्नई- श्री प्रशान्त जी ओस्तवाल सुपुत्र श्री प्रसन्नचन्द जी (सुपौत्र स्व. श्री

सूरजराज जी ओस्तवाल, भोपालगढ़) ने बिरला इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नालॉजी एण्ड साइन्स, पिलानी से 75 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त कर मास्टर ऑफ साइंस (software system) की उपाधि प्राप्त की। वर्तमान में आपकी Samsung Electronics Lab. Noida के शोध विभाग में सीनियर सॉफ्टवेयर इंजीनियर पद पर नियुक्ति हुई है।

चौथ का बरवाड़ा- श्री जितेश जैन सुपुत्र श्री सुधीरकुमार जी जैन एवं सुपुत्र श्री फूलचन्द जी जैन का भारत संचार निगम लिमिटेड में J.T.O. (Junior Telecom officer) के पद पर चयन हुआ है। हार्दिक बधाई।

दुबई- श्री सुरेन्द्र जैन सुपुत्र सुश्राविका श्रीमती मैनादेवी पन्नालाल जी जैन

इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट्स के दुबई चेप्टर के चुनावों में भारी बहुमत से सन् 2009-2010 के लिए वाइस चेयरमेन निर्वाचित हुए। श्री जैन 1997 से दुबई के बड़े व्यापारिक प्रतिष्ठान एरिन्को ग्रुप में, ग्रुप फाइनेंस डाइरेक्टर के पद पर

कार्यरत हैं। सुरेन्द्र जी पूर्व में स्वाध्यायी के रूप में अपनी सेवाएँ संघ को देते रहे हैं।

जलगाँव– श्री नितिन प्रकाशचन्द जी हुण्डीवाल ने सी.एफ.ए. परीक्षा उत्तीर्ण की है तथा वे कल्पतरू पावर में कार्यरत हैं।

जोधपुर– सुश्री श्रद्धा सदावत सुपुत्री श्री सुरेन्द्र जी सदावत एवं सुपौत्री श्री अमरचन्द जी सदावत ने बी.ई. (इल्केट्रिकल) की परीक्षा वर्ष–2009 में ऑनर्स श्रेणी से उत्तीर्ण की।

मुम्बई– श्री अक्षय हुण्डिया पुत्र श्री अशोक जी हुण्डिया, मुम्बई में सी.ए. जून 2009 की परीक्षा अच्छे अंकों से उत्तीर्ण की है।

श्रद्धाञ्जलि

मुनिराज श्री जम्बूविजयजी महाराज का देवलोकगमन

जैन धर्म–दर्शन के महान् विद्वान्, आगम–सम्पादक एवं जीवदयाप्रेमी श्री जम्बूविजय जी महाराज का 12 नवम्बर 2009 को बालोतरा से बाड़मेर की ओर विहार करते समय प्रातःकाल सड़क दुर्घटना में देहावसान हो गया। उनके साथ विहाररत युवाशिष्य श्री नमस्कारविजय जी महाराज का भी घटनास्थल पर ही निधन हो गया। कुछ मुनियों को चोटें आईं, जिनमें श्री धर्मघोषविजय जी महाराज चिंताजनक स्थिति में जोधपुर के मणिधारी अस्पताल में उपचाराधीन हैं। तपागच्छीय संत श्री जम्बूविजयजी का जन्म गुजरात में शंखेश्वर के निकट झिंझुवाड़ा ग्राम में हुआ था। 14 वर्ष की वय में आपने सिद्धिसूरिश्वरजी (बापजी महाराज) के समुदाय में श्री भुवनविजय जी महाराज (सांसारिक पिता) से दीक्षा अंगीकार की तथा निरन्तर स्वाध्यायरत रहकर जैन विद्या की सेवा की। आप श्रुत स्थविर, आगम प्रभावक, जीवदयाप्रेमी आदि विशेषणों से जाने जाते थे। वात्सल्य एवं कृतज्ञता का भाव कूट–कूट कर भरा था। महान् संत होते हुए भी उन्होंने कभी किसी प्रकार का पद स्वीकार नहीं किया। तिब्बती, संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, अंग्रेजी सहित आप 18 भाषाओं के ज्ञाता विद्वान् थे। श्री पुण्यविजय जी महाराज के साथ रहकर आपने आगम–साहित्य का संशोधन कार्य किया। महावीर जैन विद्यालय, मुम्बई से प्रकाशित जैन आगमों के सम्पादन में आपका सहयोग रहा। समवायांग सूत्र, स्थानांग सूत्र आदि का अभयदेवसूरि जी की टीका के साथ, हेमचन्द्रसूरि विरचित योगशास्त्र, मल्लधारी क्षमाश्रमण विरचित द्वादशार नयचक्र आदि का सम्पादन आपने उत्कृष्ट रीति से किया है। बौद्ध ग्रन्थ

'न्यायप्रवेशक' का भी आपने सम्पादन किया। वे स्वभाव के अत्यन्त सरल थे तथा प्रायः कहा करते थे कि पठन-पाठन, ग्रन्थ लेखन-सम्पादन मैं इसलिए करता हूँ ताकि जैन शासन का ऋण उतार सकूँ, अन्यथा मैं मन, वचन, काया से परमात्मा के रस में विभोर हूँ।

प्रोफेसर कल्याणमल जी लोढ़ा दिवंगत

कोलकाता- प्रख्यात शिक्षाविद् संघहितैषी, गुरुभक्त प्रोफेसर कल्याणमल जी

लोढ़ा का 22 नवम्बर 2009 को जयपुर में देहावसान हो गया। गुरु हस्ती के प्रबुद्ध श्रावकरत्न प्रो. लोढ़ा का जन्म सूर्यनगरी जोधपुर में 28 सितम्बर 1921 को हुआ। आप सन् 1979-80 में जोधपुर विश्वविद्यालय के कुलपति रहे तथा आपने कोलकाता विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में प्रोफेसर तथा विभागाध्यक्ष के रूप में दीर्घकाल तक सेवाएँ दीं। हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, अंग्रेजी, बांग्ला आदि अनेक भाषाओं के जानकार लोढ़ा सा. हिन्दी साहित्य के मर्मज्ञ समीक्षक, व्याख्याकार एवं प्रसिद्ध लेखक थे। वाक्तत्त्व, वाग्विभव, वाक्द्वार, वाक्सिद्धि, वाग्मिता, अहिंसा निउणा दिट्ठा, नमो गणिं गजेन्द्राय आदि अनेक पुस्तकों के लेखक प्रो. लोढ़ा ने प्रणव तत्त्व, सोमतत्त्व, श्रीगीतातत्त्व चिन्तन, मैथिलिशरण गुप्त अभिनन्दन-ग्रन्थ आदि विभिन्न ग्रन्थों का सम्पादन किया। मूर्तिदेवी ज्ञानपीठ पुरस्कार, बिहारी पुरस्कार, विद्यासागर साहित्य वाचस्पति सहित अनेक पुरस्कारों से आप सम्मानित हुए। सन् 1991 में जयपुर में रत्नसंघीय बृहद् सम्मेलन के आयोजन की परिकल्पना लोढ़ा सा. की थी, जिसमें लोढ़ा सा. ने स्वागताध्यक्ष के रूप में संघ को सुदृढ़ बनाने हेतु निर्देशन किया। इनके अग्रज भ्राता पूर्व मुख्य न्यायाधिपति श्री चाँदमल जी लोढ़ा, अनुज भ्राता पूर्व न्यायाधिपति श्री श्रीकृष्णमल जी लोढ़ा, उच्चतम न्यायालय के न्यायाधिपति श्री राजेन्द्रमल जी लोढ़ा की संघ के प्रति पूर्ण निष्ठा है। आपके सत्प्रयत्नों से कोलकाता महानगर में श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की शाखा स्थापित हुई तथा आप वहाँ के अध्यक्ष रहे। आचार्य हस्ती स्मृति सम्मान से विभूषित श्री लोढ़ा सा. पूर्व में इस समिति के अध्यक्ष भी रहे। आप अपने पीछे तीन पुत्रों श्री उमरावमल जी लोढ़ा, डॉ. किरणमल जी लोढ़ा, डॉ. सुरेशमल जी लोढ़ा एवं सुपुत्री श्रीमती सुषमा जी सिंघवी का भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

जोधपुर- श्रद्धानिष्ठ, धर्मनिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ सेवाभावी सुश्रावक श्री हीरालाल जी

बोथरा (जम्बू सा) सुपुत्र स्व. श्री हस्तीचन्द जी बोथरा का 68 वर्ष की अवस्था में 22 नवम्बर, 2009 को ब्रह्म मूहुर्त में संथारा पूर्वक स्वर्ग-गमन हो गया। वे अनन्य गुरुभक्त संघसेवी-संतसेवी श्रावकरत्न थे। श्रावक रत्न की सजगता अनुकरणीय थी। विगत 6-8 माह से बीमार होते हुए भी उनका स्मरण-भजन, सामायिक-स्वाध्याय का क्रम बराबर बना रहा। वे समय-समय पर प्रवचनादि कार्यक्रम में उपस्थित होते और बीमारी में भी उपवास आदि तपश्चर्या के प्रति उनकी सदा भावना बनी रही। गुरु हस्ती-गुरु हीरा-गुरु मान के प्रति उनकी भक्ति थी। संघ-सेवा का कार्य वे पूरी भावना से करते। उदारमना श्रावकरत्न का जीवन सरल, सहज व शान्त था। उन्होंने 20 नवम्बर को साध्वीप्रमुखा, शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. की सुशिष्या तत्त्वचिंतिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. के मुखारविन्द से सागारी संथारा अंगीकृत किया। दिनाँक 21 नवम्बर को व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. के मुखारविन्द से पूर्ण सजगता में पारिवारिक-परिजनों की स्वीकृति से चौविहार संथारे के प्रत्याख्यान लिए। संथारालीन श्रावकरत्न ने सजगता का परिचय देकर महासती को आहार बहराने का लाभ लिया तथा संथारालीन श्रावकरत्न को परिजनों एवं सुज्ञ श्रावक-श्राविकाओं ने भजन-गीत एवं नवकार मंत्र श्रवण कराकर साज दिया।

जोधपुर- अनन्य गुरुभक्त संघ-सेवी सुश्रावक श्री मोतीलाल जी मेहता का 21

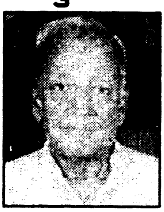

नवम्बर 2009 को देहावसान हो गया। सुश्रावक श्री मोतीलाल जी मेहता की युगद्रष्टा-युगमनीषी, सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक आचार्य प्रवर 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर 1008 पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा., प्रभृति संत-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। वाणी की मधुरता, व्यवहार की सरलता और मन की निष्कपटता जैसे गुणों से आपका जीवन सुरभित था। धार्मिक प्रवृत्तियों में आपकी विशेष रुचि थी। संघहित कार्यों में आप सदैव अग्रणी रहते थे। घोड़ों का चौक स्थानक में धर्माराधना में आपकी सक्रिय भागीदारी रहती थी। इस वर्ष साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा के

चातुर्मास में आपने चारों माह व्याख्यान-वाणी श्रवण एवं धर्मध्यान का लाभ प्राप्त किया था। सुजाननाथ पौषधशाला के आप ट्रस्टी थे।

चेन्नई- दृढ़धर्मी संघ-समर्पित, गुरुभक्त सुश्रावक श्री मुकनराज जी धारीवाल (मेड़तावासी) का चेन्नई में 83 वर्ष की उम्र में 3 नवम्बर 09 को स्वर्गगमन हो गया। आपकी पूज्य आचार्य भगवन्त के प्रति अटूट श्रद्धा-भक्ति रही। आपके जीवन में शीलव्रत, रात्रि-भोजन त्याग, सामायिक-प्रतिक्रमण आदि अनेक नियमों का पालन वर्षों से चल रहा था। आप अपने पुत्र-पुत्रियों, पौत्र-प्रपौत्र, दौहित्र आदि का भरापूरा सुसंस्कारित परिवार छोड़कर गये हैं। आपके सुपुत्र श्री कुन्दनमल जी धारीवाल भी संघ-समाज में पूर्ण सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं।

जोधपुर- धर्मपरायण सुशिक्षिका श्रीमती बिन्दु जी सुराणा धर्मपत्नी श्री स्वरूपचन्द जी सुराणा का 8 नवम्बर, 2009 को स्वर्गवास हो गया। आपकी आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्याय श्री मानचन्द्र जी म.सा. सहित समस्त संत-सतीवृन्द के प्रति अगाध आस्था एवं भक्ति थी। आप जिनशासन और रत्नसंघ में समर्पित व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी की सांसारिक पक्षीय भाभी जी थीं। पूज्या महासती जी ने श्राविकारत्न के अन्तिम समय में मंगलपाठ श्रवण करवाया।

धुलिया- श्रद्धानिष्ठ सुश्राविका श्रीमती कोयलबाई धर्मपत्नी श्री पीरचंद जी बुरड

का 14 नवम्बर 2009 को संथारा संलेखना पूर्वक समाधिमरण हो गया। श्रीमती प्रेमबाई सुराणा (तपस्वी) धुलिया ने संथारा करवाया। आपका जीवन सरलता एवं सादगी से परिपूर्ण था। आप अपने पीछे 4 पुत्रों एवं 3 पुत्रियों का भरा पूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

बीजापुर (कर्नाटक)- सुश्रावक श्री घोंडीराम जी दुर्गालाल जी रूणवाल का 1

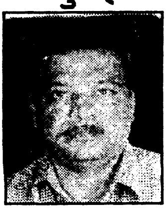

नवम्बर 2009 को 56 वर्ष की वय में निधन हो गया। धर्मनिष्ठ श्रावकरत्न ने आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी महाराज सा से बीजापुर चातुर्मास में 15 जुलाई, 2007 को आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया था। आप धर्मनिष्ठ, श्रद्धानिष्ठ एवं संघसेवी श्रावकरत्न थे।

जयपुर- सुश्रावक श्री महेन्द्रनाथ जी मोदी सुपुत्र स्व. श्री मांगीनाथ जी मोदी का 15

नवम्बर को मुम्बई में स्वर्गगमन हो गया। आप धर्मनिष्ठ, कर्तव्यपरायण होने के साथ सन्त-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे।

जयपुर- श्री दौलतचन्द जी जैन (गांधी) का 52 वर्ष की आयु में 3 नवम्बर को

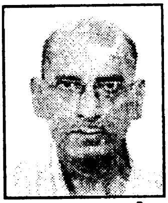

स्वर्गवास हो गया। आपका आचार्यप्रवर एवं उपाध्यायप्रवर के प्रति विशेष श्रद्धाभाव था। बैंक ऑफ बड़ौदा में कार्यरत श्री गांधी जी अपने पीछे माता श्री, दो पुत्र एवं एक पुत्री, दो भाई एवं तीन बहनें छोड़कर गए हैं।

कसारा (धुले)- सुश्राविका श्रीमती चन्दनबाई सोनराज जी पारख का 90 वर्ष की

उम्र में 2 अक्टूबर को देहान्त हो गया। आप धर्मनिष्ठ, वात्सल्यमूर्ति, उदार, मिलनसार होने के साथ त्याग-तपस्या में अग्रणी थीं। आप अपने पीछे प्रतिष्ठित पाँच पुत्रों का संस्कारित भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

नंगनल्लूर (चेन्नई)- युवारत्न संघसेवी श्री ललितकुमार जी गुन्देचा सुपुत्र श्री

जबरचन्द जी गुन्देचा का 45 वर्ष की अल्पवय में 19 अक्टूबर को हृदयाघात होने से निधन हो गया। धर्मनिष्ठ एवं संत-सतियों की सेवा में तत्पर श्री गुन्देचा जी छोटे से क्षेत्र नंगनल्लूर में भी धार्मिक शिविर एवं अनेक धार्मिक गतिविधियों का आयोजन उत्साह से कराते थे। आपने जीवनकाल में अठाई सहित अनेकविध तप किए। जीवदया ट्रस्ट, चिकित्सा सेवा समिति जैसी अनेक संस्थाओं से आप सक्रिय रूप से जुड़े हुए थे। आपके निधन से माता-पिता, चार बहनों, धर्मपत्नी एवं पुत्र को गहरा शोक हुआ है।

माण्डल (जलगांव)- धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती गौरीबाई तोलाराम जी

खिंवसरा का 91 वर्ष की वय में 1 नवम्बर, 2009 को संथारे सहित समाधिभावों में लोगस्स एवं स्वाध्याय पाठ सुनते-सुनते त्याग-प्रत्याख्यान के साथ देवलोक गमन हो गया। आपके युवावय से ही चौविहार एवं कंदमूल के प्रत्याख्यान थे। आप नियमित रूप से अनेक त्याग-प्रत्याख्यान (नियम) रखती थीं। आपने श्री स्था. जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर से स्वाध्यायी के रूप में अनेक वर्षों तक सेवा प्रदान की। आपकी गुरु हस्ती-हीरा-मान के प्रति अटूट आस्था एवं श्रद्धा भक्ति थी।

कई वर्षों पहले माण्डल गांव में आपने जैन पाठशाला की शुरूआत की जो अभी तक सुचारु रूप से चल रही है। आपका सम्पूर्ण जीवन धर्म-ध्यान-साधना-स्वाध्याय-सामायिक में व्यतीत हुआ। आपका पूरा परिवार धार्मिक संस्कारों से ओत-प्रोत है।

जोधपुर- संघसेवी श्राविकारत्न श्रीमती रतनकंवर जी धर्मपत्नी स्व. श्री उमरावमल जी कोचर मेहता का 8 नवम्बर, 2009 को आकस्मिक देहावसान हो गया। आपकी रत्नसंघ के प्रति अगाध श्रद्धा भक्ति थी। आपका जीवन सरलता, सहिष्णुता एवं उदारता आदि गुणों से युक्त था। संघ के सभी कार्यक्रमों में आपकी सक्रिय भागीदारी रहती थी।

बैंगलूरु- श्रीमती देशांत कंवर मेहता (पूनम कंवर) धर्मपत्नी स्व. श्री उगमराज जी

मेहता का 81 वर्ष की उम्र में 28 नवम्बर 09 को स्वर्गगमन हो गया। श्रद्धानिष्ठ सुश्राविका ने जीवनभर धार्मिक और सामाजिक कार्यों में रुचि ली, साथ ही सामायिक-स्वाध्याय एवं तपस्या के द्वारा अपनी आत्मा को पावन बनाया। आप अपने पीछे सुपुत्र श्री पदमराज जी मेहता (क्षेत्रीय प्रधान, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ), सज्जनराज जी मेहता, मदनराज जी मेहता, पवनराज जी मेहता का भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गई हैं।

अजमेर- सुश्रावक श्री धर्मीचन्द जी मुथा सुपुत्र श्री चुन्नीलाल जी मुथा का दिनांक

22 नवम्बर 09 को असामयिक स्वर्गवास हो गया। आपका जीवन सरलता, मृदुता, सहिष्णुता जैसे सद्गुणों से ओतप्रोत था। आप रत्नसंघ के आचार्य, उपाध्याय एवं सभी संत-सती मण्डल के प्रति पूर्ण निष्ठा के साथ समर्पित थे। आपने आचार्य श्री हस्ती की प्रेरणा से सामायिक-स्वाध्याय को अपने जीवन का अंग बना लिया था। आप अपने पीछे सुसंस्कृत परिवार छोड़कर गए हैं।

इन्दौर- सुश्राविका श्रीमती कल्याणीबाई धर्मपत्नी श्री कल्याणमल जी जैन का 12 नवम्बर 2009 को स्वर्गगमन हो गया। आप धर्मनिष्ठ श्राविका थीं।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

3000/- साहित्य की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

693 श्री प्रशांत जी झांबड, अकोला (महाराष्ट्र)
694 श्री सी. मीठालाल जी गुलेछा, मैसूर (कर्नाटक)
695 श्री सुरेश भंडारी, मकराना-नागौर (राजस्थान)
696 श्री रतन स्वाध्याय भवन, भरतपुर (राजस्थान)

500/- जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

12296 Shri Prakash ji Singhi, Erullapan Street, Chennai (Tamilnadu)
12297 श्री प्रदीप जी बालिया, 16 हंसराज लेन, भायरवला ब्रिज, मुम्बई (महाराष्ट्र)
12298 श्री सतीशलाल जी गाँधी, महावीर क्लॉथ, पोस्ट-नेवास-फाटा, अहमदनगर (महाराष्ट्र)
12299 श्री नीरज जी जैन, साई कृपा, मुक्तानन्द नगर, मु.पोस्ट-खामगाँव (महाराष्ट्र)
12300 श्री अशोक कुमार जी ढड्ढा, 4463, के.जी.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार,जयपुर (राज.)
12301 श्री राजकुमार जी नाहर, गुरूकृपा, जनकपुरी प्रथम, इमलीवाला फाटक, जयपुर (राज.)
12302 श्री प्रकाशचन्द जी गाँधी, वाम्बोरी, तालुका-राहुरी, जिला-अहमदनगर (महाराष्ट्र)
12303 Shri C. Mitha Lal ji Gulechha, Mysore (Karnataka)
12304 डॉ. विकास जी मंडलेचा, सेक्टर 24, प्लॉट नं. 263, प्राधिकरण निगडी, पूणे (महा.)
12305 श्रीमती पुनीता जी जैन, कलक्टरी सर्किल, डाईट ऑफिस के सामने, करौली (राज.)
12306 श्री विनयचन्द जी श्री श्रीमाल, फ्लैट नं. 702, राजेन्द्र मार्ग, बापू नगर, जयपुर (राज.)
12307 Shri Prakash Chand ji Bohra, Chennai(Tamilnadu)
12308 श्री अनिल जी खिंवसरा, पूनम कॉम्पलेक्स, शांतिपार्क, मीरा रोड़ (ईस्ट), ठाणे (महा.)
12309 श्री प्रशान्त जी अब्बाणी, पूज्य कृपा, 32 बी, नेहरू पार्क, जोधपुर (राजस्थान)
12310 श्री बी. एल. जैन, 124-ए, लक्ष्मीनगर, पावटा बी रोड़, जोधपुर (राजस्थान)
12311 श्री विजय कुमार जी बाफणा, नई शाम की सब्जी मंडी, भीलवाड़ा (राजस्थान)
12312 Shri Mahendra Kumar ji Banthia, Chennai (Tamilandu)
12313 Shri R. P. Gandhi ji, Balkampeth, Hyderabad (A.P.)
12314 श्री दीपक जी मेहता, जय जवान कॉलोनी-प्रथम, टोंक रोड़, जयपुर (राजस्थान)
12315 सुश्री वैशाली जी बेदमुथा, धारपुरे घाट, अशोक स्तम्भ के पास, नाशिक (महाराष्ट्र)
12316 सौ. वन्दना एस. जैन जी, मेन रोड़, साक्री, जिला-धुलिया (महाराष्ट्र)
12317 श्री मनीष जी जैन, द्वारा : रिषभ नमकीन भंडार, रामपुरा बाजार, कोटा (राजस्थान)

जिनवाणी हेतु साभार प्राप्त

21000/- श्रीमान् रतनलाल सी बाफणा सा, जलगाँव, नाशिक में ज्वैल्स का नवीन शोरूम खोलने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

21000/- श्री दिनेश जी अनिता जी सिंघवी, दुबई-यू.ए.ई., सप्रेम भेंट।

11111/- श्रीमती चंचलकंवर बोथरा (धर्मपत्नी), श्री महेन्द्र जी (पुत्र), श्री संयम जी (पौत्र), साक्षी (पौत्री) एवं बोथरा परिवार के श्री अन्नराज जी, सम्पतराज जी, राजेन्द्र जी बोथरा, जोधपुर, दृढ़धर्मी श्रावकरत्न श्री हीरालाल जी बोथरा(जम्बू सा) का दिनांक 22.11.2009 को संथारे के साथ समाधिमरण हो जाने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

5100/- श्रीमती भीखीबाई जी पूनमचन्द जी लूणावत (लूनी वाले), बैंगलूरू, श्री छगनलाल जी लूणावत एवं धर्मपत्नी श्रीमती लीलादेवी जी लूणावत के आजीवन शीलव्रत का नियम व्याख्यात्री साध्वी श्री ज्ञानलता जी म.सा. के मुखारविन्द से शांतिनगर-बैंगलूरू में लेने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

5000/- श्री आदित्य जैन, मिहिर जैन, जयपुर, अपने पिता श्री गौतमचन्द जी जैन (जिला रसद अधिकारी) के दिनांक 7 दिसम्बर, 2009 को 50वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में भेंट।

5100/- श्री रमेश जी गुन्देचा एवं समस्त परिवार, राजाजी नगर, बैंगलूरु, महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा-7 का शांतिनगर, बैंगलूरू में चातुर्मास सातापूर्वक सम्पन्न होने एवं श्री विनोद जी गुन्देचा की 15 की तपस्या के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री प्रवीण दुर्गालाल जी रूणवाल, बीजापुर (कर्नाटक), अपने भ्राता श्री घोंडीराम जी रूणवाल के दिनांक 1.11.2009 को देहावसान हो जाने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

2100/- श्री अमरचन्द जी सदावत, जोधपुर, अपनी सुपौत्री सुश्री श्रद्धा सदावत (सुपुत्री श्री सुरेन्द्र जी सदावत) के बी.ई.(इलेक्ट्रिकल) ऑनर्स श्रेणी से उत्तीर्ण करने तथा सुपौत्री सुश्री श्रेया सदावत (सुपुत्री श्री नरेन्द्र जी सदावत) के पी.एम.टी. परीक्षा उत्तीर्ण कर जयपुर डेन्टल कॉलेज, जयपुर में प्रवेश लेने के उपलक्ष्य में भेंट।

2100/- श्रीमती प्रेमलता जी मेहता, जोधपुर, श्री मोतीलाल जी मेहता का दिनांक 21.11.2009 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

2000/- श्री प्रकाशमल जी, सुनील कुमार जी, हर्ष जी बोथरा, चेन्नई, पूज्य आचार्य भगवन्त आदि सन्त-सतीवृन्द के पालड़ी स्थित स्थानक भवन से चातुर्मासोपरान्त विहार के समय मणीनगर तक विहार का सुलाभ मिलने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री जवाहरलाल जी बाघमार, चेन्नई, सामायिक स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक, इतिहास मार्तण्ड, परम श्रद्धेय, जैनाचार्य 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. की 100वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती मंजू जी कोठारी, जयपुर, सप्रेम भेंट।

1000/- श्री चम्पालालजी राजेशकुमारजी बोथरा, चेन्नई, चि. विनोद कुमार जी द्वारा पूज्य आचार्य भगवन्त के श्रीमुख से गुरु आम्नाय लेने एवं सपरिवार गुरु दर्शन करने के उपलक्ष्य में भेंट।

1000/- श्रीमती चेनीबाई जी पुखराज जी कोठारी, न्यू मुम्बई, सपरिवार पूज्य आचार्य भगवन्त के पावन दर्शन करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1000/- श्री प्रसन्नचंद जी ओस्तवाल, चेन्नई, अपने सुपुत्र श्री प्रशान्त जी ओस्तवाल (सुपौत्र स्व. श्री सूरजमल जी ओस्तवाल), चेन्नई, के बिरला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, पिलानी से 75 प्रतिशत अंक प्राप्त करने तथा सेमसंग इलेक्ट्रोनिक्स लैब, नोयडा के रिसर्च विभाग में सीनियर सॉफ्टवेयर इंजीनियर पद पर नियुक्ति होने की खुशी में भेंट।

501/- श्रीमती विजय जी मेहता धर्मपत्नी श्री उच्छबराज जी मेहता, जोधपुर, शादी की सालगिरह के उपलक्ष्य में भेंट।

501/- श्री घनश्याम जी जैन (प्रधानाध्यापक), अलीगढ़-रामपुरा (जिला-टोंक), पूज्य आचार्य श्री के मुखारविन्द से 22 सितम्बर, 2009 को पालड़ी अहमदाबाद में सपत्नीक आजीवन शीलव्रत अंगीकार करने के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री रतनलाल जी पंकज कुमार जी फूलफगर, फत्तेपुर-जामनेर, सपरिवार परम पूज्य आचार्य भगवन्त के पावन दर्शन करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री रिखबचन्द जी, उदयराज जी, संदीप कुमार जी धोका, मैसूर, पूज्य आचार्य भगवन्त के सपरिवार पावन दर्शन करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री कमलकिशोर जी, पीयूष कुमार जी, धवल जी कोठारी, रायपुर, सपरिवार पूज्य आचार्य भगवन्त के पावन दर्शन के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री महेन्द्र कुमार जी, मोहनलाल जी मुथा, बिलाड़ा-जोधपुर, आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के पालड़ी चातुर्मास में दर्शन-वन्दन के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री प्रकाशचन्द जी कांकरिया, जलगांव, अपने सुपुत्र श्री नितिन कांकरिया की सगाई सुश्री श्रद्धा सुपुत्री श्री विजयचन्द जी खिंवसरा, मांडल के साथ होने की खुशी में भेंट।

संशोधन- माह अक्टूबर की जिनवाणी में प्रकाशित श्री अमितकुमारजी अभिजित कुमार जी मेहता (पीपाड़ सिटी वाले) बैंगलोर द्वारा 1100/- के स्थान पर 2100/- पढ़ा जाए।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल को साभार प्राप्त

5000/- श्रीमती कुशलदेवी जी धर्मपत्नी श्री प्रकाशचन्द जी डागा-जयपुर, आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के अहमदाबाद में सपरिवार दर्शनलाभ प्राप्त करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

साहित्य प्रकाशन हेतु साभार प्राप्त

35000/- श्रीमान् कन्हैयालाल विमलादेवी हिरण चेरीटेबल ट्रस्ट, अहमदाबाद, मंडल से प्रकाशित पुस्तक श्रावक सामायिक प्रतिक्रमण सूत्र सार्थ एवं श्रावक के बारह व्रत के पुनः मुद्रण हेतु भेंट।

श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान हेतु साभार प्राप्त

(नया फोन नं. 9462322197)

500/- श्रीमान् अशोक कुमार जी ढढ्ढा, जयपुर, पूज्य श्री विमलचन्द जी ढड्ढा का स्वर्गवास दिनांक 20/10/2009 को होने पर भेंट।

जीवदया हेतु साभार प्राप्त

2100/- वर्द्धमान श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन संघ, बडनेरा, अमरावती

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर हेतु साभार प्राप्त

611/- स्वाध्याय शिविर सदस्य, जलगाँव (महा.)

स्वाध्याय संघ को प्राप्त पर्युषण सहायता

रुपये	स्थान	रुपये	स्थान	रुपये	स्थान
5100	केकड़ी	2100	अमरावती	1100	अजीत (बाड़मेर)
700	बागली	100	कुण्डेरा (स.मा.)		

आगामी पर्व

पौष कृष्णा 10	शुक्रवार	11.12.2009	भ.पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक
पौष कृष्णा 14	मंगलवार,	15.12.2009	चतुर्दशी
पौष कृष्णा 30	बुधवार,	16.12.2009	पक्खी
पौष शुक्ला 8	शुक्रवार,	25.12.2009	अष्टमी
पौष शुक्ला 14	बुधवार,	30.12.2009	चतुर्दशी, पूज्य आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का 100वां जन्मदिवस
पौष शुक्ला 15	गुरुवार,	31.12.2009	पक्खी
माघ कृष्णा 8	गुरुवार,	07.01.2010	अष्टमी

ईस्वी सन् 2010 के घोषित अहिंसक अगते

राजस्थान सरकार स्वायत्त शासन विभाग के नोटिफिकेशन संख्या एफ. 1/609/एल.ए.जी./49 दिनांक 14.01.50, 20.11.67, 12.09.74, 29.09.88 एवं एफ.-29/विविध/डी.एल.बी./2000/1394-1617 दिनांक 18.5.2000 एवं शासन विभाग 2001/7740 दिनाँक 28.08.02 के अनुसार ईस्वी सन् 2010 वर्ष में राज्य के घोषित अहिंसक अगताओं की माहवार सूची नीचे दी जा रही है। इन दिनों बूचड़खाने, कसाई खाने व पशुओं को कत्ल कर मांसादि का विक्रय करना कानूनन बंद है।

क्र.सं.	दिनांक	नाम अगता	वार	घोषित
1.	26 जनवरी	गणतन्त्र दिवस	मंगलवार	26 जनवरी
2.	30 जनवरी	गांधी निर्वाण दिवस	शनिवार	30 जनवरी
3.	12 फरवरी	महाशिवरात्रि	शुक्रवार	फाल्गुन कृ. 14
4.	24 मार्च	स्था.महा.ज्योतिराव जयंती	बुधवार	चैत्र शु. 9
5.	24 मार्च	रामनवमी	बुधवार	चैत्र शु. 9
6.	28 मार्च	महावीर जयंती	रविवार	चैत्र शु. 13
7.	14 अप्रेल	स्था.अम्बेडकर जयंती	बुधवार	14 अप्रेल
8.	9 मई	आ.देवेन्द्रमुनि निर्वाण दिवस	रविवार	वैशाख शु. 11
9.	27 मई	बुद्ध पूर्णिमा	गुरुवार	वैशाख शु. 15
10.	15 अगस्त	स्वतन्त्रता दिवस	रविवार	15 अगस्त
11.	02 सितम्बर	श्री कृष्ण जन्माष्टमी	गुरुवार	भादवा कृ. 8
12.	11 सितम्बर	गणेश चतुर्थी	शनिवार	भादवा शु. 4
13.	12 सितम्बर	ऋषि पंचमी	रविवार	भादवा शु. 5
14.	22 सितम्बर	अनंत चतुर्दशी	बुधवार	भादवा शु. 14
15.	02 अक्टूबर	गाँधी जयंती	शनिवार	2 अक्टूबर
16.	08 अक्टूबर	स्था. अग्रसेन जंयति	शुक्रवार	आसोज शु. 1
17.	02 नवम्बर	पेडा ग्यारस	मंगलवार	कार्तिक कृ. 11
18.	04 नवम्बर	छोटी दीपावली	गुरुवार	कार्तिक कृ. 13
19.	05 नवम्बर	दीपावली	शुक्रवार	कार्तिक कृ. 14
20.	21 नवम्बर	कार्तिक पूर्णिमा	रविवार	कार्तिक शु. 15

नोट- 1. राजस्थान उच्च न्यायालय, जयपुर खण्डपीठ के निर्णय रिट याचिका सं. 1170/88 दिनांक 26.07.88 तथा श्रम विभाग के आदेश सं. एफ.11/9/श्रम/86 दिनांक 22.12.88 के अनुसार प्रत्येक शुक्रवार को भी अहिंसक अगता घोषित है।

2. स्था. से स्थानीय अगता जानें।

3. अगतों की पालनार्थ कृपया संबंधित पालिकाधिकारी व जिला कलेक्टर, उपखण्ड अधिकारी, तहसीलदार व पुलिस अधीक्षक, थानाधिकारी व श्रम विभाग अधिकारी से सम्पर्क करें।

-अध्यक्ष/मंत्री, जीव दया मण्डल ट्रस्ट (रजि.), टोंक (राज.)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अनूठा दान छात्रवृत्ति का जीवन बनता एक विद्यार्थी का

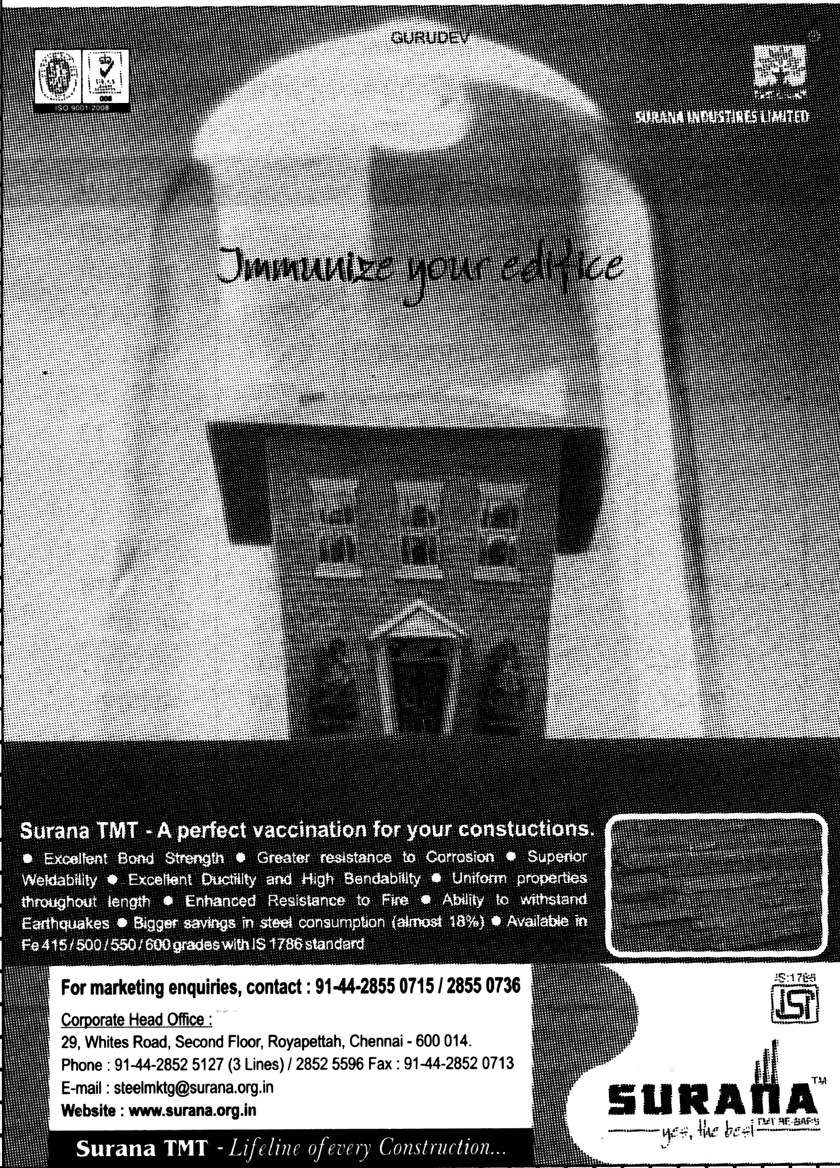

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

देने वाले निरभिमानी, पाने वाले हैं आभारी।
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति में, ज्ञानदान की महिमा न्यारी।।

With Best Compliments From :

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

23, Vada malai Street, Sowcarpet
Chennai-600079 (T.N.) Ph. 044-25292727
M. 9841091508

BRANCHES :

Bhagawan Motors
Chennai-53, Ph. 26251960

Bhagawan Cars
Chennai-53, Ph. 26243455/56

Balalji Motors
Chennai-50, Ph. 26247077

Padmavati Motors
Jafar Khan Peth, Chennai, Ph. 24854526

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

GURU HASTI GOLD PALACE

(Govt. Authorised Jewellers) (916. KDM)

22 Ct. Gold ! 24 Ct. Trust !

No. 4 Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. 044-26272609, 55666555, 26272906, 55689588

Guru Hasti Bankers :

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

NO. 5, Car Street,
Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. 26272906, 55689588

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

ज्ञान का एक दीया जलाइये
सहयोग के लिए आगे आइए
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति योजना का
लाभ उठाकर आनन्द पाईये

आदरणीय रत्न बन्धुवर

छात्रवृत्ति योजना में एक छात्र के लिए Rs. 12,000 के गुणक में दान राशि "Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund" योजना के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट (Donations to Gajendra Nidhi are Exempt u/s 80G of Income Tax Act, 1961) से निम्नांकित पते पर भेंजे, पुण्यधन कमाइऐं।

Ashok Kavad
PRITHVI EXCHANGE
33, Montieth Road, Egmore, CHENNAI-600008
Tele Fax 044-43434249, 09381041097

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

With best compliments from :

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)
098407 18382
2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 66 ★ अंक : 12 ★ मूल्य : 10 रु.
10 दिसम्बर, 2009 ★ पौष 2066

धोवन पानी - निर्दोष जिन्दगानी

KALPATARU
GARDENS

Offering 2 BHK and E3 Homes apartment with state-of-the-art amenities include a clubhouse with a well equipped gymnasium, swimming pool, squash and badminton court, landscaped gardens, a children's play area and multi-level car parking.

Other Projects:
• Kalpataru Aura - Ghatkopar (W) • Kalpataru Towers, Kandivali (E)
• Kalpataru Riverside, Panvel • Kalpataru Hills, Thane (E) • Srishti, Mira Road

KALPA-TARU®

Site: Kalpataru Gardens, Off Ashok Chakravarty Road, Near Jain Temple, Kandivali (East), Mumbai - 400 101. **Tel.: 022-2887 2914**
H.O.: Kalpataru Limited, 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (East), Mumbai - 400 055. **Tel.: 022-3064 3065 / 3064 5000** or Fax: 022-3064 3131
Email: sales@kalpataru.com or visit www.kalpataru.com

स्वामी-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिये मुद्रक संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशक प्रेमचन्द जैन, बापू बाजार, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।